बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda

अक्षय्यम्

बैंक ऑफ़ बड़ौदा की हिंदी पत्रिका

अक्तूबर–दिसंबर, 2022 अंक

केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन

बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री अजय के खुराना की अध्यक्षता में दिनांक 09 नवंबर, 2022 को बैंक की केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यपालक निदेशक श्री देबदत्त चांद, मुख्य महाप्रबंधकगण, महाप्रबंधकगण तथा अन्य उच्च कार्यपालकगण/विभाग प्रमुख उपस्थित रहे। इस बैठक में बैंक में तिमाही के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति पर विस्तृत चर्चा की गई। प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह ने राजभाषा के क्षेत्र में बैंक द्वारा किए जाने वाले उल्लेखनीय कार्यों से समिति को अवगत कराया।

अर्धवार्षिक राजभाषा समीक्षा बैठक का आयोजन

प्रधान कार्यालय, बड़ौदा द्वारा दिनांक 05–06 दिसंबर, 2022 को भुवनेश्वर में बैंक के राजभाषा अधिकारियों की अर्धवार्षिक राजभाषा समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। इस समीक्षा बैठक के उद्घाटन सत्र में प्रसिद्ध भाषाविद्, लेखक और अनुवादक डॉ. शंकरलाल पुरोहित मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। समीक्षा बैठक के दूसरे दिन कार्यपालक निदेशक श्री अजय के खुराना और पटना अंचल के अंचल प्रमुख श्री सोनाम टी भूटिया विशेष रूप से उपस्थित रहे। प्रमुख–राजभाषा एवं संसदीय समिति श्री संजय सिंह और सहायक महाप्रबंधक श्री पुनीत कुमार मिश्र द्वारा सभी अंचलों और बैंक के संयोजन में कार्यरत चयनित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की राजभाषा विषयक समीक्षा की गई। इस अवसर पर प्रधान कार्यालय द्वारा चलाए गए विभिन्न अभियान के विजेताओं को सम्मानित भी किया गया। बैठक के उद्घाटन सत्र में पटना अंचल के नेटवर्क उप महाप्रबंधक श्री आर के मोहंती ने स्वागत संबोधन दिया और धन्यवाद ज्ञापन भुवनेश्वर क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रमुख श्री राजीव कृष्णा ने किया।

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय साथियो,

बैंक की पत्रिका के इस अंक के माध्यम से आप सभी से संवाद स्थापित करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है।

नया वर्ष दस्तक दे चुका है। बीता वर्ष हमारे लिए उपलब्धियों से भरा रहा तथा हमारे अनुभवों को और समृद्ध कर गया। सितंबर 2022 को समाप्त तिमाही के लिए बैंक का निवल लाभ 58.7% की वृद्धि के साथ रु. 3,313 करोड़ रहा जबकि वित्त वर्ष की पहली छमाही के लिए यह 66.3% की मजबूत वृद्धि के साथ रु. 5482 करोड़ रहा। अग्रिमों में वर्ष-दर-वर्ष आधार पर 19% की मजबूत वृद्धि दर्ज की गई। गृह ऋण, वैयक्तिक ऋण, ऑटो ऋण और शिक्षा ऋण जैसे अधिक फोकस वाले क्षेत्रों में बढ़ोत्तरी की वजह से ऑर्गेनिक रिटेल अग्रिमों में 28.4% की वृद्धि हुई। वर्ष-दर-वर्ष आधार पर 280 आधार बिंदु और तिमाही-दर-तिमाही आधार पर 95 आधार बिंदु की गिरावट के साथ सकल गैर निष्पादक आस्तियों का स्तर 5.31% रहा। टीडबल्यूओ को छोड़कर प्रावधान कवरेज अनुपात 79.14% रहा। वर्ष-दर-वर्ष आधार पर 48 आधार बिंदु और तिमाही-दर-तिमाही आधार पर 31 आधार बिंदु की वृद्धि के साथ वित्त वर्ष 23 की दूसरी तिमाही में निवल ब्याज मार्जिन 3.33% रहा। सितंबर 2022 में सीआरएआर 15.25% रहा। इन व्यावसायिक मानदंडों के आधार पर हम यह सहर्ष मान सकते हैं कि हमारा कार्यनिष्पादन बैंकिंग उद्योग में अत्यंत प्रतिष्ठाजनक स्थिति में है।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि भविष्य की बैंकिंग के अंतर्गत ग्राहक की निर्भरता पूरी तरीके से डिजिटल प्लेटफॉर्मों पर रहेगी। हमारा बैंक इसके महत्व को भली भांति समझता है इसीलिए लगातार अपने विभिन्न डिजिटल प्लेटफॉर्मों के तहत नई-नई सुविधाएं जोड़ रहा है। हाल ही में बैंक ने अपने इंटरनेट बैंकिंग की नई ब्रांडिंग की है और अब इसे बॉब वर्ल्ड इंटरनेट के रूप में पेश किया गया है और इसमें 6 नई सुविधाओं को जोड़ा गया है जिसमें डेबिट कार्ड ब्लॉक करना, खाता विवरणी, अस्वीकृत चेकों के लिए पॉजिटिव पे पुष्टि, बॉब वर्ल्ड इंटरनेट के ऐक्टिवेशन/डी ऐक्टिवेशन, आईपीओ जैसी महत्वपूर्ण ग्राहक हितैषी सुविधाएं शामिल हैं। हम अपने व्हाट्सऐप बैंकिंग प्लेटफॉर्म को भी लगातार नई सुविधाओं से युक्त एवं ग्राहकों द्वारा उपयोग हेतु आसान बना रहे हैं। बॉब वर्ल्ड टैब के माध्यम से अब हमारा बैंक सार्वजनिक एवं निजी लिमिटेड कंपनियों के पूर्ण डिजिटलीकृत चालू खाते खोलने में समर्थ बन गया है। डिजिटलीकरण के अपने प्रयासों में हम भारत की भाषायी विविधता को भी समझते हैं और इसीलिए हम अपने डिजिटल प्लेटफॉर्मों पर हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं की उपलब्धता के लिए निरंतर कार्य कर रहे हैं।

बैंक ने 24 नवंबर, 2022 को किसानों की सभी कृषि आवश्यकताओं के लिए संपूर्ण सॉल्यूशन के रूप में 'बॉब वर्ल्ड किसान' ऐप का शुभारंभ किया। यह ऐप किसानों के लिए एक संपूर्ण समाधान है। यह कृषि वित्तपोषण, बीमा एवं निवेश; मंडी सेवाएं जैसे कि फसलों की कीमतों की जानकारी, मौसम पूर्वानुमान, फसलों के स्वास्थ्य की निगरानी एवं कृषि इनपुट तथा उपकरणों को किराए पर लेना, उत्पादकता बढ़ाने के लिए तकनीक का प्रयोग जैसी कृषि परामर्श सेवाओं आदि के संबंध में अत्याधुनिक सॉल्यूशन ऑफर करके कृषि अर्थव्यवस्था संबंधी सुविधाओं के डिजिटलीकरण में सहायक होगा। ये सुविधाएं ग्राहकों एवं गैर-ग्राहकों दोनों के लिए उपलब्ध होंगी। बैंक ने छह एग्री कंपनियों यथा एग्रीबेग्री, एग्रोस्टार, बिगहाट, पूर्ति, ईएम3 और स्काइमेट के साथ ऐप में ही किसानों को विभिन्न प्रकार की सेवाएं उपलब्ध करवाने के लिए साझेदारी की है। वर्तमान में यह ऐप हिंदी, गुजराती एवं अंग्रेजी में उपलब्ध है ताकि अधिकांश किसान इसका लाभ उठा सकें। इसके अतिरिक्त बैंक ने हाल ही में वेतन एवं पेंशन खातों के लिए बॉर्डर सिक्योरिटी फोर्स के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया है। साथ ही एमएसएमई द्वारा सोलर रूफटॉप परियोजनाओं के वित्तपोषण के लिए एरम सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड एवं उसकी अनुषंगी एरम फायनांस प्राइवेट लिमिटेड के साथ समझौता किया गया है। ऐसी पहलों द्वारा बैंक निरंतर नई-नई व्यावसायिक संभावनाओं के द्वार खोल रहा है ताकि व्यवसाय में सतत् वृद्धि सुनिश्चित की जा सके।

31 अक्तूबर 2022 से 6 नवंबर 2022 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया जिसका घोष वाक्य 'भ्रष्टाचार मुक्त भारत, विकसित भारत' था। इस अवधि के दौरान हमने अपने कार्यों के प्रति सतर्क रहने एवं अपने कार्यों को निष्ठापूर्वक निष्पादित करने की शपथ ली है एवं विविध गतिविधियां भी आयोजित की हैं। हमें इस घोष वाक्य को पूर्ण रूप से अपने क्रियाकलापों में आत्मसात करने की आवश्यकता है।

ग्राहक हमारी सभी गतिविधियों के केंद्र में हैं। श्रेष्ठ ग्राहक अनुभव हमारा अंतिम लक्ष्य होना चाहिए। हाल फिलहाल में बैंक में कुछेक जगहों पर ग्राहक-स्टाफ व्यवहार के ऐसे अप्रिय प्रसंग सामने आए हैं जो बैंक की छवि को आहत करते हैं। इन प्रसंगों को सूझबूझ और संवेदनशीलता दर्शाते हुए आसानी से टाला जा सकता था। यह एक ऐसा क्षेत्र है जहां हमें अत्यधिक सावधान रहने की आवश्यकता है। हम ग्राहक के साथ किसी भी स्थिति में अशिष्ट व्यवहार नहीं कर सकते हैं। किसी कारण से नाराज ग्राहक से भी अगर हम अत्यधिक विनम्रता से पेश आएं और उसकी बात को ध्यान से सुनें तो आधी समस्या हल हो सकती है। मेरे विचार में ग्राहक की हर वास्तविक शिकायत का समाधान हमारे पास है। जरूरत है उसे सुनने की, उसकी दिक्कत को समझने की और शिकायत समाधान के लिए त्वरित कार्रवाई करने की।

आपका बैंक काफी सुदृढ़ आधार भूमि पर खड़ा है, अब हमें अपने प्रयासों से इसे नई उड़ान के लिए तैयार करना है। मौजूदा वित्तीय वर्ष की अंतिम तिमाही में कुछ ही दिन शेष रह गए हैं। हमें पूरे वर्ष के दौरान निर्धारित लक्ष्यों में से शेष बचे लक्ष्यों को पूरा करने के सक्रिय प्रयास करने होंगे ताकि हम अपने वार्षिक लक्ष्यों को न केवल शत-प्रतिशत प्राप्त कर सकें बल्कि लक्ष्य से अधिक एक आदर्श स्थिति हासिल कर सकें। हम सभी के प्रयासों से वित्तीय वर्ष 2022-23 के व्यावसायिक परिणाम बैंक के लिए ऐतिहासिक साबित हो सकते हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि इस दिशा में प्रयासों की दृष्टि से आप कोई कसर नहीं छोड़ेंगे।

नव वर्ष 2023 आप सभी के लिए शुभ हो।

संजीव चड्ढा
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

आप सभी को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं!

बैंक की हिन्दी पत्रिका *'अक्षय्यम्'* के माध्यम से अपने विचारों, संस्था की सफलताओं और उनसे जुड़ी खुशियों को आपसे साझा करना मेरे लिए हमेशा से सुखद अनुभूति रही है। अपनी नवोन्मेषी पहलों और उन्नत तकनीक के साथ हमारे बैंक ने बैंकिंग जगत में एक विशिष्ट पहचान बनाई है। हम इसे कायम रखने के लिए अपने सभी उत्पादों एवं सेवाओं को ग्राहकोन्मुखी बनाने में सदैव तत्पर रहे हैं। बैंकिंग उत्पादों एवं सेवाओं के साथ-साथ राजभाषा के क्षेत्र में भी हमारा बैंक हमेशा से अग्रणी रहा है।

आज के अत्यधिक प्रतिस्पर्धी और तेजी से बदलते बैंकिंग परिवेश में यह आवश्यक है कि हम अपने ग्राहकों की आवश्यकताओं को और अधिक कुशलता से समझें तथा उनके अनुकूल उत्पाद एवं सेवाएं उन्हें उपलब्ध कराएं। इसके लिए सभी स्तरों पर हमारी टीम प्रतिबद्धता और लगन के साथ कार्य कर रही है। हम सभी जानते हैं कि भारत एक कृषि प्रधान देश है और कृषि को देश का मेरुदंड माना जाता है। इसी को ध्यान में रखते हुए हाल ही में बैंक ने किसानों की सभी कृषि आवश्यकताओं के लिए संपूर्ण समाधान के रूप में **'बॉब वर्ल्ड किसान ऐप'** का शुभारंभ किया है जो बैंक के ग्राहक एवं गैर-ग्राहक सभी प्रकार के किसानों के लिए कृषि वित्तपोषण, फसल बीमा, कृषि निवेश, मंडी में फसलों की कीमतों की जानकारी, मौसम पूर्वानुमान, फसलों के स्वास्थ्य की निगरानी एवं कृषि इनपुट एवं उपकरण किराए पर लेने आदि जैसी कई अत्याधुनिक सुविधाएं उपलब्ध कराता है। देश के किसानों के हित में इस सुविधा की शुरूआत पूरे बैंकिंग उद्योग में एक अनोखी पहल है।

इसके अलावा, बैंक ने अपने विभिन्न सेगमेंट के ग्राहकों के लिए 'बड़ौदा तिरंगा जमा', 'बड़ौदा योद्धा ऋण', देश के अग्निवीरों के लिए 'बड़ौदा मिलिट्री पैकेज', 'बॉब वर्ल्ड ऑप्युलेन्स कार्ड-सुपर-प्रीमियम वीजा इंफीनाइट डेबिट कार्ड' एवं 'बॉब वर्ल्ड सफायर कार्ड-प्रीमियम वीजा सिग्नेचर डेबिट कार्ड' आदि सहित कई नए रिटेल बैंकिंग उत्पादों की शुरुआत की है जो ग्राहकों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर विशेष रूप से तैयार किए गए हैं। इसके तहत अधिक से अधिक जमाएं संग्रहीत करने की आवश्यकता है।

हमें बैंक के विभिन्न उत्पादों के जरिए अधिक से अधिक ग्राहकों तक अपनी पहुंच बढ़ा कर अपने ग्राहक आधार में बढ़ोतरी करनी चाहिए और इनके जरिए बैंक का व्यवसाय विकास करना चाहिए. वित्तीय वर्ष की समाप्ति को अब महज कुछ ही दिन बचे हैं। वित्त वर्ष की आखिरी तिमाही में हमें व्यवसाय विकास के सभी क्षेत्रों पर विशेष जोर देना चाहिए जिससे हम इस वर्ष बेहतरीन वित्तीय परिणाम दे सकें। इसके अलावा इस शेष अवधि में हमें उन सभी पहलुओं पर अधिक ध्यान देना चाहिए जिनपर हम किन्हीं कारणों से अब तक अधिक ध्यान नहीं दे पाए हैं और जिनमें अधिक संभावनाएं विद्यमान हैं। मुझे विश्वास है कि हम अपने संगठित प्रयासों से अपने बैंकिंग कारोबार के सभी लक्ष्यों की प्राप्ति में सफल होंगे।

मैं कामना करता हूं कि आने वाला वर्ष आप सभी के लिए प्रगति के नए पथ को आलोकित करे।

अजय के. खुराना

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

बैंक की हिंदी पत्रिका **'अक्षय्यम्'** के नवीनतम अंक अक्तूबर-दिसंबर, 2022 के माध्यम से आपसे संवाद करना मेरे लिए हर्ष की बात है। पिछले कुछ वर्षों में अर्थव्यवस्था और व्यवसाय संबंधी गतिविधियों की धीमी प्रगति के बीच वर्ष 2022 का उत्तरार्द्ध बैंक के लिए बहुत ही सकारात्मक रहा है। नए वर्ष में इन सकारात्मक परिवर्तनों का उपयोग हमें बैंक की स्थिति को और भी बेहतर बनाने में करना चाहिए।

किसी भी व्यावसायिक संस्थान के लिए वित्त वर्ष की आखिरी तिमाही बहुत ही महत्त्वपूर्ण होती है। इस दौरान हमारे द्वारा किए गए प्रयास बैंक के वित्तीय परिणामों पर सीधा असर डालेंगे। पूर्व की भांति ही हमें इस तिमाही में भी श्रेष्ठ कार्यनिष्पादन करने की आवश्यकता है ताकि हम इस वित्तीय वर्ष का समापन अच्छे वित्तीय परिणामों के साथ कर सकें।

बैंक के लिए कॉर्पोरेट एवं संस्थागत बैंकिंग, व्यवसाय की दृष्टि से अति महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। कॉर्पोरेट ऋण सेगमेंट को लेकर पिछले दिनों कुछ अच्छे संकेत भी मिले हैं। पिछले दिनों बैंकों के कॉर्पोरेट ऋण में बढ़ोत्तरी होने से नए निवेश को बढ़ावा मिलने की संभावना बढ़ी है। वर्ष 2023 और 2024 में कॉर्पोरेट ऋण में अच्छी बढ़ोत्तरी की उम्मीद की जा रही है। विशेषज्ञ मानते हैं कि वर्तमान भारतीय आर्थिक स्थिति में नए ऋण चक्र को गति मिल सकती है। हमें भी इन संकेतों पर सक्रियता से कार्य करते हुए बैंक के लिए नए व्यवसाय संग्रहण पर जोर देना चाहिए।

देश के एक प्रतिष्ठित बैंक होने के नाते हमें व्यवसाय विकास के साथ-साथ अन्य महत्वपूर्ण वैश्विक मुद्दों के संबंध में जागरूक रहना चाहिए. आज के दौर में **जलवायु परिवर्तन** एक अहम मुद्दा है जिस पर सामूहिक रूप से कार्य किए जाने की जरूरत है। इस संबंध में विश्व के सामने उत्पन्न चुनौती का सामना करने के लिए **हम ग्रीन बैंकिंग की दिशा में आगे बढ़ चुके हैं।** हम समाज के साथ मिलकर व्यापक स्तर पर जागरूकता कार्यक्रम भी चला रहे हैं। हाल ही में **हमने ग्रीन राइड – *एक पहल स्वच्छ हवा की ओर* के दूसरे चरण की शुरूआत की है।** हमने बैंक की इस पहल के साथ मिलिंद सोमन, जो फिटनेस के क्षेत्र में एक प्रसिद्ध शख्सियत हैं, को भी जोड़ा है। इस पहल से न केवल लोग अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग होंगे बल्कि पर्यावरण जोखिम के संबंध में भी जागरूक होंगे।

बैंकिंग उद्योग के बदलते स्वरूप और ग्राहकों की आवश्यकताओं को उच्च प्राथमिकता देते हुए आप सभी के सहयोग से हमारा बैंक अपने उत्पादों को उन्नत करने की दिशा में अग्रसर है। मुझे पूरा विश्वास है कि हम ग्राहकों को बेहतर ग्राहक सेवा प्रदान कर बैंक के व्यावसायिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में अपना सर्वोत्तम योगदान देने में सफल होंगे।

नव वर्ष की मंगलकामनाएं!

देबदत्त चांद

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

'अक्षय्यम्' के नवीनतम अंक के जरिए आपसे संवाद करना मेरे लिए एक विशेष अवसर है। बैंकिंग का मौजूदा दौर बहुत ही गतिशील है। इस तेजी से बदलते दौर में ग्राहकों की जरूरतें और हमसे उनकी अपेक्षाओं में भी बदलाव आ रहे हैं। मैं समझता हूं कि ग्राहकों की अपेक्षाओं के अनुसार यथासंभव अपनी कार्यप्रणाली में बदलाव लाना हमारे बुनियादी मूल्य ग्राहक-केंद्रीयता (Costumer-centricity) की एक अहम शर्त है। हम ग्राहकों की अपेक्षाओं के अनुरूप जितनी अनुकूल सेवाएं और उत्पादों की पेशकश करेंगे हमारा ग्राहक आधार उतना ही मजबूत होगा। पिछले कुछ वर्षों में हमने बैंक की बॉब-नाऊ परियोजना के तहत लगातार अपनी सेवाओं, उत्पादों एवं कार्यप्रणाली को ग्राहक की बदलती अपेक्षाओं के अनुरूप प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

आज के दौर में उपलब्ध आधुनिक डिजिटल सुविधाएं लोगों की पहली पसंद बन गयी हैं। डिजिटल माध्यम से हम कई सुविधाएं अपनी इच्छानुसार समय पर त्वरित और किफायती रूप में प्राप्त कर सकते हैं। ग्राहकों की पसंद को ध्यान में रखते हुए हम उन्हें अधिक से अधिक नवीनतम सुविधाएं डिजिटल रूप में उपलब्ध करा रहे हैं। जब ग्राहक डिजिटल रूप में सीधे बैंकिंग सेवाएं प्राप्त करते हैं, ऐसी स्थिति में ग्राहक सेवा में हमारा हस्तक्षेप कम तो होता है परंतु हमारी जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है। इनमें किसी भी प्रकार की कमी को तत्काल और विनम्रतापूर्वक दूर किया जाना चाहिए। ग्राहकों से संवाद करते समय हमें संयम और धैर्य रखने के साथ-साथ सतर्क भी रहना चाहिए। शाखा में उत्साह और टीम भावना के साथ कार्य करने से हम अपने समक्ष उत्पन्न प्रतिकूल स्थिति का विवेकपूर्ण तरीके से सामना कर सकते हैं। बैंक ने अपने बुनियादी मूल्यों और नैतिक आचरण संहिता में ऐसी कई बातों को शामिल किया है जिन्हें हमने अपने व्यवहार में भी अपनाया है। यह आवश्यक है कि हम ग्राहक सेवा के दौरान बैंक द्वारा निर्धारित मानदंडों का सदैव पालन करें।

यह स्वाभाविक है कि कई बार दैनिक बैंकिंग कार्यों के निष्पादन के दौरान हमारे समक्ष चुनौतीपूर्ण स्थिति भी उत्पन्न हो। परंतु हमारी कड़ी परीक्षा भी इन्हीं स्थितियों में होती है। ऐसी स्थिति में हमें अपनी सूझ-बूझ और परिपक्वता से कार्य करना चाहिए। बेहतर ग्राहक सेवा के लिए हमारे कार्यों में संजीदगी का समावेश जरूरी है। हम नए वर्ष में प्रवेश कर चुके हैं और बैंकिंग भी अब एक बार फिर से नए दौर में पहुंच चुकी है। पिछला वर्ष भारतीय अर्थव्यवस्था और बैंकिंग उद्योग के लिए सकारात्मक परिवर्तन से युक्त रहा है। एक तरफ जब मुद्रास्फीति दर में कमी आई है तो दूसरी तरफ बैंकों के शुद्ध एनपीए अनुपात में भी गिरावट आई है जो कि पिछले 10 वर्षों में सबसे न्यूनतम स्तर पर है।

इन सभी सकारात्मक बदलावों के साथ नए वर्ष की शुरूआत हमें एक नई ऊर्जा देती है। आने वाले समय में हमें बैंक के बुनियादी मूल्यों को और मजबूत करना चाहिए। इसके साथ ही बैंक को भविष्य का एक मजबूत बैंक बनाने के लिए प्रतिबद्धता से कार्य करना चाहिए। मुझे विश्वास है कि हम नए वर्ष में नई उपलब्धियों को हासिल करने के लिए नई ऊर्जा और सत्यनिष्ठा से कार्य करेंगे।

नए वर्ष की हार्दिक शुभकानाओं सहित,

जयदीप दत्ता राय

जयदीप दत्ता राय

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

नव वर्ष 2023 की आपको एवं आपके परिजनों को बहुत-बहुत शुभकामनाएं! यह वर्ष आपके जीवन में नए अवसर, सुख, समृद्धि और संपन्नता लाए, ऐसी मेरी कामना है।

बैंक की हिंदी पत्रिका *'अक्षय्यम्'* के इस अंक के माध्यम से आप सभी से अपने विचार साझा करने पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। चूंकि इस पत्रिका के माध्यम से आप सभी से जुड़ने का यह मेरा पहला अवसर है, अतः मैं बैंक की समृद्ध विरासत और इसके मूल्यों को आगे बढ़ाने तथा इसकी विकास यात्रा में आप सभी का साथ चाहूंगा।

हमारा बैंक अपनी लाभप्रदता में नियमित रूप से शानदार वृद्धि कर रहा है। हम अंतर्राष्ट्रीय परिचालन में मजबूत वैश्विक उपस्थिति के साथ अत्याधुनिक तकनीक के माध्यम से बैंकिंग सुविधा उपलब्ध करा रहे हैं जिसके सकारात्मक प्रभाव हमारे वित्तीय परिणामों में प्रदर्शित हो रहे हैं। ग्राहक हमसे अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप तत्काल और उपयोगी परामर्श की अपेक्षा करते हैं। हमारा बैंक ग्राहकों को श्रेष्ठ अनुभव दिलाने और उनके साथ सुदृढ़ संबंध बनाए रखने के लिए तकनीक का बखूबी इस्तेमाल कर रहा है। इसके अलावा, हम अपने डिजिटल भुगतान माध्यमों को वैश्विक स्तर के अनुरूप अपने ग्राहकों को उपलब्ध करा रहे हैं।

व्यवसाय वृद्धि, परिचालन, ग्राहक सेवा, विनियामक अनुपालन सभी क्षेत्रों की अपनी प्राथमिकताएँ हैं। लेकिन हमारा कर्तव्य है कि हम नियमों का अनुपालन करते हुए सभी कार्यों में अपना सर्वोत्तम देने का प्रयास करें। बैंकिंग कार्यप्रणाली में व्यवसाय और अनुपालन दोनों की ही महती भूमिका है। इसलिए व्यवसाय वृद्धि हेतु प्रयास करते समय हमें बैंक और विनियामकों द्वारा निर्धारित प्रणालियों और नियमों का अनुपालन करना अनिवार्य है। मुझे विश्वास है कि आप सभी अनुपालन आवश्यकताओं पर पूरा अमल करते हुए बैंक को सर्वाधिक अनुपालित बैंक होने की प्रतिष्ठा दिलाएंगे। निर्धारित प्रक्रियाओं के अनुपालन से संस्थान का जोखिम से बचाव होने के साथ-साथ हमें भी बैंक का संरक्षण प्राप्त होता है।

मैं समझता हूं कि मौजूदा परिवेश में एक सामंजस्यपूर्ण कार्य-जीवन संतुलन बनाना महत्वपूर्ण है। यह हमारे शारीरिक, भावनात्मक और मानसिक कल्याण में सुधार करने के साथ-साथ हमारे कॅरियर के लिए भी महत्वपूर्ण है। पेशेवर जीवन में सफल होने के साथ-साथ हमारे लिए यह आवश्यक है कि अपने व्यक्तिगत जीवन पर भी पूर्ण रूप से ध्यान दें और इसके लिए हमें स्वयं प्रयास करना होगा। सुनियोजित कार्यशैली और कुशल स्व-प्रबंधन से यह संभव है।

जनवरी-मार्च 2023 तिमाही बैंक के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है. पिछली तीन तिमाहियों में हमने जो प्रयास किए हैं एवं जिनमें हमें अभी तक सफलता प्राप्त नहीं हुई है उन्हें इस तिमाही के दौरान सफलीभूत करने की आवश्यकता है। आप सभी के प्रयासों से वित्त वर्ष 2022-23 की इस अंतिम तिमाही में हम सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए बैंक के लिए इस वर्ष को ऐतिहासिक प्रदर्शन का वर्ष भी बना सकते हैं।

मुझे पूरा विश्वास है कि आप सभी बैंक की प्रगति में अपना योगदान देते रहेंगे एवं बैंक की प्रतिष्ठा में और वृद्धि करेंगे। बैंक में पदोन्नति प्रक्रिया जारी है, मौजूदा पदोन्नति प्रक्रिया में भाग ले रहे सभी स्टाफ सदस्यों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

ललित त्यागी

ललित त्यागी

बैंक ऑफ़ बड़ौदा Bank of Baroda

अक्षय्यम्

बैंक ऑफ़ बड़ौदा की हिंदी पत्रिका

वर्ष – 18 * अंक – 72 * अक्तूबर–दिसंबर, 2022

–: कार्यकारी संपादक :–

संजय सिंह

प्रमुख – राजभाषा एवं संसदीय समिति

–: संपादक :–

पुनीत कुमार मिश्र

सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति)

–: सहायक संपादक :–

अम्ब्रेश रंजन कुमार

मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

डॉ. सुमेधा

वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

–: संपर्क :–

राजभाषा विभाग

बैंक ऑफ़ बड़ौदा, बड़ौदा भवन, पांचवी मंजिल,
आर सी दत्त रोड, अलकापुरी, बड़ौदा – 390007

फोन : 0265–2316581 / 6171

ईमेल : rajbhasha.ho@bankofbaroda.com
akshayyam@bankofbaroda.com

राजभाषा विभाग, बैंक ऑफ़ बड़ौदा,
पांचवी मंजिल, आर सी दत्त रोड, अलकापुरी,
बड़ौदा – 390007 से संपादित एवं प्रकाशित.

रुपांकन एवं मुद्रण

मे. प्रिंट प्लस प्रा.लि.,
212, स्वस्तिक चेंबर्स, एस.टी. रोड,
चेंबूर, मुंबई 400071.

प्रकाशन तिथि : 31/01/2023

सूचना :

बैंक के स्टाफ सदस्य पत्रिका में प्रकाशन हेतु अपनी रचनाएं/ सामग्री

ई–मेल: akshayyam@bankofbaroda.com

पर भेज सकते हैं.

अनुक्रम

इस अंक में

पद्मश्री सुरेंद्र शर्मा का साक्षात्कार 7–9

रंगोली : भारत की प्राचीन सांस्कृतिक परंपरा और लोक कला.....10–13

ईएसजी फंड – निवेश की नई अवधारणा..... 14–16

अक्षय्यम्, बैंक ऑफ़ बड़ौदा के सभी स्टाफ सदस्यों/ पूर्व स्टाफ सदस्यों के लिए प्रकाशित की जाती है. इसमें व्यक्त विचारों से बैंक का सहमत होना आवश्यक नहीं है.

इस अंक में

कश्मीर – हमारे सपनों का साक्षात्कार!.... 18–19

योग प्राणायाम–स्वस्थ जीवन का आधार....21–22

प्राचीन धरोहर– देव सूर्य मंदिर 25–26

बिरकिसिया 27–32

व्यवसाय विकास में क्षेत्रीय भाषा एवं हिंदी की भूमिका 36–37

देश के आर्थिक विकास में बैंकों की भूमिका 39–41

अपने ज्ञान को परखिए 46

बैंकिंग शब्द मंजूषा.....49

चित्र बोलता है.....50

कार्यकारी संपादक की कलम से

नव वर्ष 2023 की हार्दिक शुभकामनाएं. नूतन वर्ष पर ***अक्षय्यम्*** के इस नवीनतम अंक के माध्यम से आप सभी से सम्प्रेषण करते हुए मुझे अत्यधिक हर्ष की अनुभूति हो रही है। पेशे से एक बैंकर होने के नाते गुज़रे वक्त को जब हम देखते हैं तो हम यह विश्लेषण कर पाते हैं कि पिछले वर्ष हमने किन–किन लक्ष्यों को हासिल किया है और उन लक्ष्यों को हासिल करने के दौरान हमें किन अवसरों का लाभ प्राप्त हुआ है। उन अवसरों से एक नया लक्ष्य निर्धारित करते हुए हम नए वर्ष में कदम रख रहे हैं। लक्ष्यों का आबंटन दो तरह से होता है। एक वो जो प्रबंधन हमारे लिए निर्धारित करता है और एक वो जो उनके निर्धारण के बाद हम अपने लिए निर्धारित करते हैं। स्वयं के द्वारा निर्धारित लक्ष्य को हासिल करने के बाद प्रबंधन द्वारा आबंटित लक्ष्य अपने आप ही हासिल हो जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि वर्ष यूं ही बीतते जाएंगे परंतु मनुष्य होने के नाते सर्वप्रथम स्वयं के कार्यों से संतुष्ट होना बहुत ही आवश्यक है। किसी व्यक्ति की पहचान उसके द्वारा लिए गए फैसलों से नहीं होती क्योंकि फैसले गलत भी हो सकते हैं बल्कि उसके द्वारा किए गए कार्यों से होती है। अपनी पहचान बदलने के लिए फैसले बदलने की नहीं, कार्यों की रणनीति और उनका स्वरूप बदलने की जरूरत है।

बैंक में राजभाषा कार्यान्वयन को बढ़ावा देने के क्रम में गत वर्ष कई नूतन कार्य किए गए जैसे ग्राहकों के लिए हिंदी में व्हाट्सऐप बैंकिंग एवं हिंदी तथा क्षेत्रीय भाषा में एसएमएस सक्रिय करने के लिए महामुकाबला अभियान, हिंदी पत्राचार को बढ़ावा देने के लिए आयोजना विभाग के लिए अप्रैल से जून – हिंदी की धूम, परिसर एवं उपकरण विभाग के लिए अगस्त से सितंबर – हिंदी के सिकंदर, परिचालन विभाग के लिए अक्तूबर से दिसंबर – हिंदी के धुरंधर अभियान चलाए गए एवं इसे जारी रखते हुए इस वर्ष के पहले माह में निरीक्षण एवं लेखापरीक्षा विभाग के लिए 'निरीक्षण में विलक्षण' अभियान चलाया जा रहा है। इन अभियानों में अंचल स्तर के स्टाफ सदस्य काफी उत्साह से भाग ले रहे हैं जिसके कारण सभी अंचल कार्यालयों में हिंदी के कामकाज में गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों ही दृष्टियों से वृद्धि हो रही है।

बॉब–अभियक्ति ऐप पर उपलब्ध इस अंक में हमने राष्ट्रीय स्तर के लोकप्रिय हास्य कवि पद्मश्री सुरेंद्र शर्मा जिन्हें हास्य विधा में उनकी प्रस्तुति की अनोखी शैली के लिए जाना जाता है, का साक्षात्कार प्रकाशित किया है साथ ही हमने इस अंक में सुश्री यात्रा परीख का आलेख ''रंगोली– भारत की प्राचीन सांस्कृतिक परंपरा और लोक कथा'', श्री अम्ब्रेश रंजन कुमार द्वारा ''ईएसजी फंड–निवेश की नई अवधारणा'', श्री के संतनराज द्वारा ''कश्मीर – हमारे सपनों का साक्षात्कार'', श्री मनीष व्यास द्वारा ''योग प्राणायाम – स्वस्थ जीवन का आधार'', श्री सोनू कुमार तिवारी द्वारा ''देव सूर्य मंदिर – एक प्राचीन धरोहर'', श्री सुनील कुमार सिन्हा द्वारा लिखित कहानी ''बिरकिसिया'', सुश्री अनामिका प्रसाद द्वारा ''व्यवसाय विकास में क्षेत्रीय भाषा एवं हिंदी की भूमिका'' एवं श्री सर्वेश कुमार द्वारा ''देश के आर्थिक विकास में बैंकों की भूमिका'' जैसे महत्वपूर्ण आलेख सहित बैंक के कार्यालयों में आयोजित विभिन्न गतिविधियां शामिल की हैं, जो आपको रुचिकर लगेंगी।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक आपको पसंद आएगा तथा इस पत्रिका को और बेहतर बनाने में आप हमें अपने मूल्यवान अभिमत एवं सुझाव से अवश्य अवगत कराएंगे।

शुभकामनाओं सहित,

संजय सिंह
प्रमुख – राजभाषा एवं संसदीय समिति

हिंदी हमारी सांस्कृतिक विरासत को मजबूत करती है

__पद्मश्री सुरेंद्र शर्मा__ राष्ट्रीय स्तर के एक लोकप्रिय हास्य कवि हैं। हास्य विधा में आप अपनी एक अनोखी शैली के लिए जाने-जाते हैं और अपने हुनर से श्रोताओं को हास्य से सराबोर कर देते हैं। साहित्य के क्षेत्र में आपके योगदान के लिए आपको 2013 में भारत सरकार द्वारा पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। अक्तूबर 2018 में आपको हिंदी अकादमी, दिल्ली सरकार के उपाध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया। इससे पहले, आपने हरियाणा साहित्य अकादमी के उपाध्यक्ष का पद संभाला था। यह आपकी खासियत है कि आप हास्य को भी बहुत ही संज़ीदगी से पेश करते हैं और विभिन्न समसामयिक विषयों पर शालीनता से तटस्थ और प्रभावी प्रतिक्रिया देते हैं। पिछले दिनों मुंबई में आयोजित बैंक के वार्षिक राजभाषा समारोह के अवसर पर आपको मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। प्रस्तुत हैं उनके साथ हुई बातचीत के प्रमुख अंश : संपादक

कृपया अपने प्रारंभिक जीवन के बारे के कुछ बताएं।

मेरा जन्म ग्राम नागल चौधरी जिला महेन्द्रगढ़, हरियाणा में 29 जुलाई 1945 को हुआ था। मैंने दिल्ली विश्वविद्यालय के श्रीराम कॉलेज ऑफ़ कॉमर्स से बी.कॉम में डिग्री हासिल की। उसके बाद मैंने लॉ फैकल्टी से एलएलबी किया और एमएमएच कॉलेज, गाजियाबाद से एम.कॉम. किया।

आज के दौर में आप हास्य विधा में क्या परिवर्तन देखते हैं?

मैं समझता हूं कि कविता के माध्यम से हास्य सबसे कठिन कलाओं में से एक है। इस विधा का चयन सबसे कठिन होता है। आज हास्य और व्यंग्य एक कठिन परिस्थिति से गुजर रहा है। क्योंकि लोगों में आलोचना सुनने की अब हिम्मत नहीं रही। पहले जो हास्य परिवार के साथ सुना जाता था वो अब अकेले भी नहीं सुना जा रहा है। क्योंकि उसमें फूहड़ता, त्रि-अर्थी संवाद ने अपना स्थान ग्रहण कर लिया है।

आप अपने जीवन में अपना आदर्श किसे मानते हैं?

हास्य व्यंग्य के क्षेत्र में मैं अपना आदर्श श्री शरद जोशी को मानता हूं।

आप वैश्विक स्तर पर हिंदी की स्वीकार्यता को कैसे देखते हैं?

मैं मानता हूं कि हिंदी की स्वीकार्यता हृदय तक है। हिंदी में वैज्ञानिक आविष्कार नहीं हुए हैं और जिस भाषा में वैज्ञानिक आविष्कार नहीं हों तो फिर वह साहित्य तक ही रह जाती है। हिंदी को एक व्यापक रोजगार की संभावनाओं वाली भाषा बनाने के लिए अभी बहुत कुछ किया जाना है। ऐसा होने से इसका वैश्विक चेहरा और भी उभरेगा।

आज आपसी जुड़ाव के तमाम आधुनिक माध्यमों की उपलब्धता के बावजूद समाज में बिखराव बढ़ रहा है। इस घटनाक्रम को आप किस रूप में देखते हैं?

ऐसा इसलिए बढ़ गया है कि अब बाजार की

आवश्यकता तो है पर बाजार बाजारूपन में तब्दील हो गया है। आज हमारी सोच भी बदली है। पहले हमारा दुख व्यक्तिगत होता था और सुख सार्वजनिक होता था। आज हमने सुख को व्यक्तिगत कर लिया और दुख को हम सार्वजनिक करने लगे हैं। आज हमें अपनी दो गाड़ियां सुख नहीं देती हैं परंतु अपने सगे भाई की तीन गाड़ियां जरूर तक़लीफ देती हैं।

सोशल मीडिया के प्रादुर्भाव से एक-दूसरे को जान पाना कितना आसान या मुश्किल हुआ है?

सोशल मीडिया ने जितनी ऊंचाई को छुआ है उससे ज्यादा वह गहराई तक गया है. जैसे मैं एक ही वाक्य में बता दूं ''विज्ञान ने आकाश तो छू लिया है लेकिन एटम बम बना के उसने सारी ऊंचाई को खत्म कर दिया।'' सोशल मीडिया अजीब स्थिति की ओर बढ़ता जा रहा है, जबकि यह समाज का विकास कर सकता था. हम दूसरे को खराब बताकर अपने आप को बढ़िया सिद्ध करने में लगे हुए हैं। यह इसका उद्देश्य नहीं होना चाहिए।

आपने कोरोना युग को भी देखा, आप इस अवधि को किस प्रकार व्याख्यायित करेंगे?

कोरोना तो एक बीमारी थी, उसे महामारी बनाया मीडिया ने। तीन करोड़ लोग मरे हैं और दिमाग में उसने 135 करोड़ के डाल दिया। तीन करोड़ में से 25 प्रतिशत तो दहशत से मरे हैं। आदमी के बीच के संबंध, पारवारिक संबंध, प्रगाढ़ संबंधों में इसने दूरियां पैदा कर दी हैं। इसने हमारी संवेदनाओं को मारा, इसने सबसे बड़ा अपराध यही किया।

बैंक ऑफ़ बड़ौदा के बारे में आपके क्या विचार हैं, आप बैंक ऑफ़ बड़ौदा को लेकर अपनी क्या शुभकामनाएं देंगे।

हर बैंक को मैं एक ही बात कहता हूं कि उधार चाहे किसी को भी दें, चाहे वह उधार बड़ा हो, चाहे छोटा हो। किसी को छोटा उधार दे करके अगर वह चुका नहीं पा रहा है तो उसकी मानसिकता को लेकर आपका व्यवहार मानवीय होना चाहिए। बड़े लोगों को लोन देने की तुलना में छोटे गरीब लोगों को लोन देने में आपको ज्यादा उदार होना चाहिए।

अंत में मैं जितने भी काम करने वाले बैंक के अधिकारी हैं उनसे इतना ही कहना चाहता हूँ कि वे अपना काम निष्ठा से करते रहें और अच्छी ग्राहक सेवा दें। मैं यह भी चाहूंगा कि हमारे पारंपरिक खेल को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। आज हम बहुत से खेल में गोल्ड मेडल ला रहे हैं परंतु कई खेलों को हम उतना प्रोत्साहन नहीं दे पाते हैं। मैं समझता हूं कि बैंक ऑफ़ बड़ौदा उन लोगों को अपने साथ में जोड़े जो कि आदिवासी इलाके के हैं। उनका स्टेमिना शहर के रहने वालों से लाख गुणा बेहतर है। वहां से अगर कोई खिलाड़ी तैयार करें तो मैं समझता हूं कि खेल को बेहतर खिलाड़ी मिल सकता है।

***

रंगोली : भारत की प्राचीन सांस्कृतिक परंपरा और लोक कला

यात्रा परीख
अधिकारी (मा.सं.प्र.),
अंचल कार्यालय, अहमदाबाद

किसी भी देश की सांस्कृतिक व्यवस्था के बारे में जब भी बात की जाएगी तो उस देश में व्याप्त कला के बारे में अवश्य उल्लेख किया जाएगा। कला और संस्कृति एक दूसरे के पूरक हैं। भौगोलिक दृष्टि से देश में विभिन्न संस्कृति सांस लेती है उसी प्रकार विभिन्न प्रांतों में विविध कलाएं संस्कृति की शृगांर करती हैं।

कला के विविध रूपों में से आज हम जिस कला के बारे में बात कर रहे हैं उसका जिक्र बहुत ही कम हुआ है। इसी कारण इसकी लोकप्रियता अन्य कलाकृतियों की भांति विश्व विख्यात नहीं है। यूं तो यह प्राचीन लोक कला है जो देश के हर कोने में फैली हुई है। बस इसकी शैली प्रदेश के अनुसार भिन्न - भिन्न है। जी हां.... मैं रंगोली की बात कर रही हूं जिसके पीछे निहित भावना और संस्कृति में पर्याप्त समानता है। इसकी यही विशेषता इसे विविधता देती है और इसके विभिन्न आयामों को प्रदर्शित करती है। इसे सामान्यतः त्योहार, व्रत, पूजा, उत्सव, विवाह आदि शुभ अवसरों पर रंगों से बनाया जाता है।

भारतीय परंपरा में रंगोली धार्मिक, सांस्कृतिक आस्थाओं की प्रतीक है जिसको आध्यात्मिक प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण अंग माना गया है। तभी तो किसी भी शुभ कार्य करने जैसे हवनों एवं यज्ञों में 'वेदी' का निर्माण करते समय भी मांडणे बनाए जाते हैं। ग्रामीण अंचलों में घर-आंगन बुहारकर लीपने के बाद रंगोली बनाने का रिवाज आज भी विद्यमान है।

रंगोली शब्द संस्कृत के 'रंगावली' शब्द की व्युत्पत्ति है और रंगों के माध्यम से कला की रचनात्मक अभिव्यक्ति का प्रतीक है। रंगोली को शुभ व शगुन माना जाता है। हालांकि, पारंपरिक रंगोली डिजाइन द्वि-आयामी थे। अब आधुनिक त्रि-आयामी डिजाइनें भी आकर्षक हैं।

रंगोली बनाने के पीछे एक उद्देश्य उस स्थान के भूमि-शुद्धिकरण की भावना एवं समृद्धि का आह्वान भी निहित है। रंगोली जीवन दर्शन का प्रतीक है जिसमें नश्वरता को जानते हुए भी पूरे जोश के साथ वर्तमान को सुमंगल के साथ जीने की कामना और श्रद्धा रहती है।

त्योहारों के अतिरिक्त घर-परिवार में अन्य मांगलिक अवसरों पर या यूं कहें कि रंगोली सजाने की कला अब सिर्फ पूजागृह तक सीमित नहीं रह गई है। स्त्रियां बड़े शौक एवं उत्साह से घर के हर कमरे में तथा प्रवेश द्वार पर रंगोली बनाती हैं। यह शौक स्वयं उनकी कल्पना का आधार तो है ही, नित-नवीन सृजन करने की भावना का प्रतीक भी है। यह कला घर की स्त्रियों में नव-सृजन को आकार देती है जिसमें प्रयुक्त रंग जीवन के विभिन्न रूपों को प्रतीकात्मक रूप में वर्णित करते हैं।

रंगोली में बनाए जाने वाले चिह्न जैसे स्वस्तिक, कमल का फूल, लक्ष्मीजी के पग (पगलिए) इत्यादि समृद्धि और मंगलकामना के सूचक समझे जाते हैं। आज कई घरों, देवालयों के आगे नित्य रंगोली बनाई जाती है। रीति-रिवाजों को सहेजती-संवारती यह कला आधुनिक परिवारों का भी अंग बन गई है। शिल्प कौशल और विविधतायुक्त कलात्मक अभिरुचि के परिचय से गृह-सज्जा के लिए बनाए जाने वाले कुछ मांडणों को छोड़कर प्रायः सभी मांडणे किसी मानवीय भावना के प्रतीक होते हैं और इस प्रकार ये हमारी सांस्कृतिक भावनाओं को साकार करने में महत्त्वपूर्ण साधन माने जाते हैं। हर्ष और प्रसन्नता का प्रतीक रंगोली रंगमयी अभिव्यक्ति है।

रंगोली एक अलंकरण कला है जिसका भारत के अलग-अलग प्रांतों में अलग-अलग नाम है जिसका उल्लेख नीचे किया जा रहा है -

तमिलनाडु में कोलम:

कोलम पारंपरिक रूप से चावल के आटे या चाक पाउडर का उपयोग करके तैयार किया जाता था। आधुनिक समय के साथ सिंथेटिक रंग के पाउडर का भी उपयोग किया जाता है। तमिलनाडु, कर्नाटक, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, केरल और गोवा के कुछ हिस्सों के मूल निवासी, परंपरागत रूप से कोलम को सजावट के उद्देश्य से निर्मित नहीं करते थे। उनके विश्वास के अनुसार मोटे चावल के आटे में बनाया गया कोलम चींटियों एवं अन्य छोटे जीवों व पक्षियों को भोजन हेतु आमंत्रित करना था। इसके साथ ही इस कला का उद्देश्य मानव जीवन व सूक्ष्म जीवों के बीच सामंजस्यपूर्ण अस्तित्व को प्रोत्साहित करना था।

दक्षिण भारतीय प्रांत- तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश और कर्नाटक के 'कोलम' में कुछ अंतर होता है परंतु इनका मूल उद्देश्य यथावत है। मूलतः ये ज्यामितीय और सममितीय आकारों में सजाई जाती हैं। इसके लिए चावल के आटे या घोल का इस्तेमाल किया जाता है। सूखे चावल के आटे को अंगूठे व तर्जनी के बीच रखकर एक निश्चित सांचे में गिराया जाता है।

राजस्थान में मांडणा :

राजस्थान का मांडणा जो मंडन शब्द से लिया गया है, जिसका अर्थ सज्जा है। मांडणे को विभिन्न पर्वों, मुख्य उत्सवों तथा ऋतुओं के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है। इसे आकृतियों के विभिन्न आकार के आधार पर भी बांटा जा सकता है। मांडणा चित्रों की लोकप्रिय कला के नाम पर इस प्रकार की रंगोली राजस्थान के क्षेत्रों में बनायी जाती है। मांडणा स्वास्थ्य की रक्षा, देवताओं का स्वागत और त्योहारों के उत्सव को चिह्नित करने के लिए तैयार किया गया है। मांडणा मूल रूप से चाक पाउडर का उपयोग करके तैयार की जाती है। महिलाएं इस खूबसूरत कलाकृति को रुई के टुकड़े, बालों के गुच्छे या खजूर की छड़ी से बने एक मूल ब्रश की मदद से बनाती हैं।

कुमाऊँ के 'लिख थाप' या थापा में अनेक प्रकार के आलेखन प्रतीकों, कलात्मक डिजाइनों, बेलबूटों का प्रयोग किया जाता है। लिख-थाप में समाज के अलग-अलग वर्गों द्वारा अलग-अलग चिह्नों और कला माध्यमों का प्रयोग किया जाता है।

छत्तीसगढ़ में चौक पुराना:

अपने बहुरूप-दर्शक डिजाइनों के लिए लोकप्रिय, चौक पुराना सूखे चावल के आटे या सफेद पाउडर के अन्य रूपों का उपयोग करके तैयार किया जाता है। यद्यपि कई पारंपरिक चौक पैटर्न हैं, युवा पीढ़ी की रचनात्मकता के आधार पर वर्षों में डिजाइन विकसित हुए हैं। भारतीय संस्कृति में चौक परिवार में सौभाग्य और समृद्धि की बौछार का प्रतीक होती है एवं चौक पुराना शुभ माना जाता है।

पश्चिम बंगाल में अल्पना:

अल्पना शब्द संस्कृत के 'अलिम्पना' शब्द से बना है। अलिम्पना का अर्थ है 'प्लास्टर करना' या 'लेप करना'। परंपरागत रूप से, घर की महिलाएं सूर्यास्त से पहले अल्पना

बनाती थीं। सफेद रंग में सख्ती से खींचा गया एक अल्पना जो लंबे समय तक रहता है, खींचने के लिए गोंद के एक हिस्से के साथ कपड़े के रंगों का उपयोग किया जा सकता है। अन्य प्राकृतिक रंग जिनका उपयोग किया जा सकता है वे हैं हरा व लाल।

ओडिशा में झोटी चिता:

इस पारंपरिक कला को ओडिशा में झोटी चिता के नाम से जाना जाता है। अन्य क्षेत्रों के विपरीत, झोटी चिता को दीवारों पर भी खींचा जाता है और पारंपरिक रूप से एक रेखा कला चित्र है। इस पारंपरिक रेखा कला को आकर्षित करने के लिए चावल के आटे के अर्ध-तरल पेस्ट से प्राप्त सफेद रंग का झोटी में उपयोग किया जाता है जिसे कई डिजाइनों और पैटर्नों के अलावा, देवी लक्ष्मी के पैरों के छोटे-छोटे निशान बनाने में प्रयुक्त किया जाता है। यह अत्यंत प्रतीकात्मक और अर्थपूर्ण है।

बिहार में अरिपन:

अरिपन पैटर्न बिहारी परिवार में लगभग हर उत्सव का अभिन्न अंग है। प्रांगण या प्रवेश द्वार में कोई भी अनुष्ठान या उत्सव बिहार में अरिपन के बिना अधूरा माना जाता है। परंपरागत रूप से, जादुई प्रदर्शनों द्वारा खेती की गई भूमि को उपजाऊ और फलदायी बनाने के लिए अरिपन तैयार किए गए थे। उंगलियों से बने, नाजुक डिजाइन चावल के पेस्ट या पित्त की मदद से बनाए जाते हैं।

आंध्र प्रदेश में मुग्गू:

मुग्गुपिंडी के रूप में ये रंगोली पैटर्न कैल्शियम या चाक पाउडर के मिश्रण से तैयार किए जाते हैं। त्यौहारों के दौरान चावल के आटे का मिश्रण चींटियों, कीड़ों और गौरैयों को चढ़ाने के लिए बनाया जाता है। यह भव्य पारंपरिक कला

पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित की जाती है।

रंगोली बनाने की प्रयुक्त प्रचलित विधि

रंगोली बनाने के मुख्यतः दो प्राथमिक तरीके हैं। पहले सूखी और गीली सामग्री से रूपरेखा बनाने के लिए उपयोग की जाने वाली वस्तुओं का जिक्र करते हैं चॉक, रेत, पेंट या आटे जैसी सफेद सामग्री का उपयोग करते हुए कलाकार जमीन पर एक केंद्र-बिंदु और उसके चारों ओर कार्डिनल बिंदुओं को चिह्नित करता है। आमतौर पर क्षेत्र और व्यक्तिगत पसंद के आधार पर एक वर्ग, षट्भुज या सर्कल में रूपरेखा को रंग से भरा जाता है।

एक बार रूपरेखा पूरी हो जाने के बाद, कलाकार इसे रंग से रोशन कर सकता है। फिर गीली या सूखी सामग्री जैसे पेंट, रंगीन चावल-पानी, जिप्सम पाउडर, रंगीन रेत या सूखे रंगद्रव्य का उपयोग कर सकता है। कलाकार सजीव रंग प्राप्त करने के लिए बीज, अनाज, मसाले, पत्ते या फूलों की पंखुड़ियों जैसी असंसाधित सामग्री भी चुन सकता है। क्रेयॉन, डाई या रंगे हुए कपड़े, ऐक्रेलिक पेंट और कृत्रिम रंग एजेंट जैसी आधुनिक सामग्री भी आम होती जा रही है जो शानदार और जीवंत रंग विकल्पों की अनुमति देती है। नई लेकिन कम कृत्रिम विधि में संगमरमर के पाउडर के साथ सीमेंट के रंग का उपयोग करना शामिल है। इस सटीक विधि के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है लेकिन इस माध्यम में सुंदर चित्र बनाए जा सकते हैं।

प्रारंभिक रूप से सरल पैटर्न को स्पष्ट करते हुए अक्सर एक जटिल और सुंदर डिजाइन बनाई जाती है। रंगोली में प्राकृतिक आकृतियां (पत्तियां, पंखुड़ियां, पंख) और ज्यामितीय पैटर्न आम हैं। रेडीमेड रंगोली पैटर्न अक्सर स्टेंसिल के रूप में या स्टिकर आज-कल आम होते जा रहे हैं जिससे विस्तृत या सटीक डिज़ाइन बनाना आसान हो गया है।

सारांश

भारत देश सांस्कृतिक और भाषायी विविधताओं से भरा हुआ है। इसी तरह रंगोली कला में भी हमें विविधता दिखाई देती है। पारंपरिक रंगोली जो कि चावल - पानी, गेरू-माटी आदि से बनाई जाती थी। जबकि वर्तमान में आधुनिक सामग्री

का उपयोग किया जा रहा है। वर्तमान समय में विभिन्न कला जैसे 3डी आर्ट, पोट्रेट आर्ट, स्टिल लाइफ, लैंडस्केप जैसी डिजाइनें भी रंगोली में शामिल हो गई हैं। विदेश में इन्हें स्ट्रीट आर्ट तथा चौक आर्ट के नाम से भी जाना जाता है। पारंपरिक तथा वर्तमान रंगोली में एक और परिवर्तन देखा जा सकता है जैसे कि आधुनिक रंगोली किसी विषय पर सामाजिक संदेश के बारे में संवाद करने और सामाजिक मुद्दे पर जागरूकता पैदा करने के लिए उपयोग में लायी जाती है। विभिन्न विषय जैसे उत्सव, रामायण, नदी के किनारे गांव का दृश्य, सामाजिक विषय जैसे भ्रूण हत्या, महिला सशक्तिकरण, प्रदूषण जैसे विषय लोकप्रियता प्राप्त कर रहे हैं।

त्योहार और उत्सव को रोशन करने के लिए रंगोली को सौभाग्य का अग्रदूत भी माना जाता है। इसके अतिरिक्त आजकल कलाकारों ने रंगोली प्रर्दशनी और रंगोली प्रतियोगिताएं भी शुरू कर दी है। कुछ रंगोलियां ऐसी भी होती हैं जो देखने में एक कलाकृति की भांति दिखाई देती हैं। इनमें आधुनिकता और परंपरा का समावेश आसानी से लक्षित किया जा सकता है। रंगोली प्रतियोगिताएं त्यौहारों के दौरान सबसे लोकप्रिय गतिविधियों में से एक हैं।

रंगोली बनाने की प्रतियोगिताएं और रिकार्डों का भी अद्भुत क्रम शुरू हुआ है। रंगोली को गिनीज़ बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकार्ड तक पहुंचाने वाली पहली महिला विजय लक्ष्मी मोहन थीं जिन्होंने सिंगापुर में 03 अगस्त 2003 को यह रिकार्ड बनाया। वर्ष 2009 तक यह रिकार्ड हर साल टूटता रहा है। इसके अतिरिक्त पानी पर रंगोली बनाने का रिकार्ड भी गिनीज़ बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकार्ड में शामिल हो चुका है।

हाल ही में भारत देश में 75वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर बड़ौदा के वेद ट्रास क्यूब प्लाजा में 75 फुट लम्बी तथा 75 फुट चौड़ी रंगोली बनाने का रिकॉर्ड बनाया गया है।

श्रोत:

1. वेबसाइट : विकी पिडिया
2. समाचार पत्र: टाइम्स आफ इंडिया
3. अन्य ब्लॉग

***

रंगोली

ईएसजी फंड – निवेश की नई अवधारणा

अम्ब्रेश रंजन कुमार
मुख्य प्रबंधक
(राजभाषा एवं संसदीय समिति)
प्रधान कार्यालय, बड़ौदा

मौजूदा दौर में कारोबार की दुनिया महज तात्कालिक लाभ अर्जन पर केंद्रित न हो कर सतत् विकास की राह पर चल रही है। विश्व भर में पिछले कुछ वर्षों के अनुभव ने कॉर्पोरेट जगत को कई मामलों में सजग और जागरूक रहने की सीख दी है। सीमित प्राकृतिक संसाधनों के बीच बढ़ती जनसंख्या की बढ़ती मांग और अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए एक संतुलित परियोजना पर काम करने की आवश्यकता हमेशा रही है। समय रहते इस दिशा में जरूरी कदम उठाना आज की अनिवार्यता है। हम सभी के अस्तित्व का आधार पर्यावरण संतुलन में निहित है। यही वजह है कि आज विश्व भर के छोटे से लेकर बड़े उद्योग घराने सस्टेनेबिलिटी को तरजीह दे रहे हैं। कॉर्पोरेट जगत में आज ईएसजी (इन्व्यारमेंट, सोशल और गवर्नेंस) एक बहुचर्चित अवधारणा बन गई है तथा इस अवधारणा को निवेश के एक प्रमुख मानदंड के साथ जोड़ा जा रहा है। ईएसजी फंड ऐसे निवेश हैं जो सर्वश्रेष्ठ ईएसजी कार्यव्यवहार वाली कंपनियों द्वारा किए जाते हैं। ऐसे फंड का उद्देश्य कारोबार की दुनिया में विकास के साथ-साथ समाज और पर्यावरण के हित का भी ध्यान रखना है।

हाल के दिनों में ईएसजी फंड ने बड़ी संख्या में निवेशकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। भारत, जो कि विश्व की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, की बात करें तो हम देखते हैं कि वर्तमान में यहां ईएसजी फंड की संख्या 23 है जबकि अमेरिका और इंग्लैंड में लगभग 500, जापान में 182 और चीन में 119 है *(संदर्भ रॉयटर्स, 2021 की रिपोर्ट)*। इस प्रकार हम भारत में इस क्षेत्र को उभरते हुए बाजार के रूप में देख सकते हैं और आने वाले दिनों में इस संबंध में बहुत कुछ किया जाना शेष है।

ईएसजी फंड पर चर्चा करते समय हमारे लिए यह आवश्यक है कि हम इसे अच्छी तरह समझें। ईएसजी इक्विटी फंड एक तरह से म्यूचुअल फंड है जो एक सशक्त पर्यावरण, सोशल और गवर्नेंस (ईएसजी) कार्यव्यवहार का गंभीरता से पालन करता है। ईएसजी फंड का उद्देश्य सतत् व्यवसाय विकास को बढ़ावा देना तथा कंपनियों को समाज हित में कार्य करने हेतु अभिप्रेरित करना है। इसके अलावा ईएसजी फंड पर्यावरण हित के मानदंडों को पूरा नहीं करने वाली कंपनियों को अपनी निवेश परिधि से बाहर रखता है।

ईएसजी के तीन पहलुओं का पहला बिंदु **पर्यावरण** से संबंधित है अर्थात् निवेशक या कंपनियां ऐसी हर गतिविधि में शामिल नहीं होती हैं जो किसी भी तरह से पर्यावरण को नुकसान पहुंचाएं जैसे कि कोयला उद्योग, केमिकल अथवा खनन उद्योग। दूसरा पक्ष सोशल यानी **सामाजिक उत्तरदायित्व** से संबंधित है। निवेशक इस बात पर ध्यान दे रहे हैं कि कोई कंपनी सामाजिक उत्थान में कितना योगदान दे रही है। इसके साथ ही वह अपने हितधारकों, कर्मचारियों, ग्राहकों और उपभोक्ताओं का कितना ध्यान रख रही है। तीसरा पक्ष **गवर्नेंस** है यानी कि किसी कंपनी का गवर्नेंस या प्रबंधन कितना पारदर्शी है और किस स्तर तक नैतिकता का

पालन करता है। पिछले कुछ वर्षों कुछ कंपनियों में धोखाधड़ी की घटनाएं हुईं और परिणामतः उसे काफी नुकसान उठाना पड़ा और नौबत यहां तक आई कि उसका परिचालन तक बंद करना पड़ा। इस प्रकार कंपनियों में एक अच्छा गवर्नेंस भी उसके बेहतर भविष्य के लिए जरूरी है। कुल मिला कर ईएसजी के तीनों पक्ष लंबे समय तक किसी भी कंपनी के बेहतर कार्यनिष्पादन के लिए जरूरी हैं। इसलिए निवेशक आज इस फंड की ओर अपना ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।

ईएसजी फंड की प्रमुख विशेषताएं एवं प्रकारः

1. **ग्रीन फंडः** ऐसे फंड के तहत पर्यावरण वहनयीता हेतु समर्पित कंपनियों में निवेश किए जाते हैं।

2. **सोशल इंपैक्ट फंडः** ऐसे फंड के तहत उन कंपनियों में निवेश को वरीयता दी जाती है जो समाज को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं, विशेषकर वो जो शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में योगदान दे रहे हैं।

3. **इथिकल फंडः** ऐसे फंड के तहत उच्च नैतिकता का अनुपालन करने वाली कंपनियों में निवेश किए जाते हैं जैसे कि बाल श्रम और प्रदूषण की रोकथाम के क्षेत्र में योगदान देने वाली कंपनियां।

4. **सस्टनेबल डेवलपमेंट गोल (एसडीजी) फंडः** ऐसे फंड के तहत उन कंपनियों में निवेश किए जाते हैं जो संयुक्त राष्ट्र के 17 सतत् विकास लक्ष्य की दिशा में कार्य कर रही हैं जैसे कि पर्यावरण संतुलन और जेंडर समानता के लिए कार्यरत कंपनियां।

संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2015 में सस्टनेबल डेवलपमेंट गोल (एसडीजी), जिसे ग्लोबल गोल के नाम से भी जाना जाता है, को अपनाया है। यह एक वैश्विक आह्वान है जिसमें गरीबी का उन्मूलन, पर्यावरण संरक्षण, और यह सुनिश्चित करना निहित है कि विश्व भर में शांति और समृद्धि बढ़े। यह एक 'ट्रांस्फॉर्मिंग आवर वर्ल्डः द 2030 एजेंडा फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट' का संकल्प है, जो सतत् विकास लक्ष्य पर केंद्रित है।

ईएसजी फंड की विशेषताएंः

ईएसजी फंड कई मामलों में लाभकरी है। यह निवेश पोर्टफोलियो को विविध बनाता है और किसी भी संभावित जोखिम को कम करता है। इसके अतिरिक्त चूंकि यह फंड सस्टेनिबिलिटी पर केंद्रित है अतः यह लंबे समय में अन्य पारंपरिक निवेश से बेहतर परिणाम दे सकता है।

ईएसजी फंड सामाजिक और पर्यावरण हित के लिए भी अनुकूल है। इसके तहत कंपनियां पर्यावरण और समाज हित की ओर अधिक ध्यान देती हैं और इससे समाज और पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यह एक जिम्मेदारीपूर्ण निवेश है। इस प्रकार ईएसजी फंड पारंपरिक फंड से अलग हैं जिसमें केवल आर्थिक लाभ अर्जन पर नहीं बल्कि समाज और पर्यावरण हित पर भी ध्यान दिया जाता है।

बेन एंड कं. की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2021 में भारत में ईएसजी-फोकस्ड प्राइवेट इक्विटी (पीई) फंड 650 मिलियन डॉलर तक दोगुने के बराबर हो गया। इसकी एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार इन पीई फंड में अलगे 5 वर्षों में 90 प्रतिशत बढ़ोतरी की संभावना है जिसमें कि पिछले 5 वर्षों में 39 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। आज जिस तरह पूरी दुनिया पर्यावरण संतुलन को लेकर कारगार कदम उठाने की दिशा में कार्य कर रही है, इसे देखते हुए हम भविष्य में इस क्षेत्र में सकारात्मक प्रगति का अनुमान लगा सकते हैं।

आगे की राह

वर्तमान में कई स्टार्ट-अप्स भी पर्यावरण के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। इस तरह पर्यावरण के क्षेत्र में तो आए दिनों विशेष ध्यान देने की बात हो रही है परंतु 'सोशल' और 'गवर्नेंस' के क्षेत्र में भी बराबर ध्यान दिए जाने की जरूरत है। विशेषज्ञ मानते हैं कि आने वाले दो से तीन वर्षों में बैंकिंग योग्य अधिक ईएसजी प्रोजेक्ट्स के आने की संभावनाएं हैं। वैश्विक स्तर पर भी देखें तो हम पाएंगे कि कई निवेशक अब प्रदूषण उत्पन्न करने वाली और पर्यावरण मानदंडों को पालन नहीं करने वाली कंपनियों में निवेश करने से बच रहे हैं। आसार हैं कि यही ट्रेंड भारत में भी अपनाई जाए। ईसीएसजी के कई फंड के तहत तकनीक के जरिए जलवायु परिवर्तन समस्या के निवारण पर ध्यान दिया जा रहा है। Dealroom.co और लंदन एवं पार्टनर्स की एक संयुक्त रिपोर्ट के अनुसार भारत में जलवायु परिवर्तन की समस्या से निपटने हेतु तकनीक संबंधी व्यवसाय हेतु वर्ष 2016 और 2021 के बीच वेंचर कैपिटल फंडिंग के रूप में लगभग 1 बिलियन डॉलर प्राप्त हुए। बीएनपी पारिबास द्वारा करवाए गए सर्वे में भी 70 प्रतिशत निवेशकों ने सामाजिक सरोकार के मुद्दों को अहमियत दी है।

भविष्य में भले ही ईएसजी के क्षेत्र में व्यवसाय की दृष्टि से अधिक संभावनाएं दिख रही हों परंतु इस क्षेत्र में अपनी कुछ

चुनौतियां भी निहित हैं। विशेषज्ञ मानते हैं कि ईएसजी निवेश में 'ग्रीनवॉशिंग' एक बड़ी चुनौती है। 'ग्रीनवॉशिंग' दरअसल कंपनियों द्वारा पर्यावरण मानदंडों के अनुपालन के संबंध में भ्रामक जानकारी साझा करना है। तो यह सुनिश्चित करना भी चुनौतीपूर्ण है कि कोई कंपनी पर्यावरण मानदंडों का पूर्णतः अनुपालन कर रही है अथवा नहीं। विश्व आर्थिक मंच ने भी वैश्विक संस्थागत निवेशकों के बीच 'ग्रीनवॉशिंग' पर चिंता व्यक्त की है। इसके अलावा इस क्षेत्र में अभी और भी फंडिंग और जागरूकता की जरूरत है।

भारतीय बैंकों की बात करें तो भारतीय रिज़र्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार अधिकांश भारतीय बैंकों द्वारा जलवायु संबंधी वित्तीय जोखिम को अपने व्यवसाय जोखिम के रूप में सार्वजनिक रूप से प्रकट किया जा रहा है। वहीं कुछ बैंक ऐसे भी हैं जो अभी भी जलवायु संबंधी वित्तीय जोखिम का विश्लेषण करने की प्रक्रिया में हैं। इसके साथ ही अधिकांश बैंकों ने ईएसजी संबंधी कार्यनीति को अपने कार्यव्यवहार में अपना लिया है वहीं कुछ बैंकों द्वारा इस दिशा में कार्य किया जाना शेष है। 79 प्रतिशत भारतीय बैंकों द्वारा परिचालन में कार्बन उत्सर्जन को कम करने तथा नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग को बढ़ाने की प्रक्रिया पर कार्य किया जा रहा है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि जब पूरा विश्व जलवायु परिवर्तन की दिशा में सकारात्मक पहल की ओर अग्रसर है तो हमें भी अपने कारोबार में पर्यावरण संरक्षण के मुद्दों को प्रमुखता से शामिल करना होगा। हमारी यही पहल लंबे समय में हमारे अनुकूल परिणामों को हासिल करने में सहायक होगी। इस दिशा में कार्य करते हुए हम संयुक्त राष्ट्र के संकल्प को भी निश्चित रूप से सफल कर सकेंगे। दुनिया भर के संतुलित विकास में आर्थिक जगत की भूमिका अहम है इसलिए आर्थिक गतिविधियों को भी पर्यावरण के अनुकूल ढालना आवश्यक होगा। निश्चित रूप से इन सभी गतिविधियों में बैंकों और वित्तीय संस्थानों की भूमिका अहम होगी।

***

नराकास (बैंक), वडोदरा द्वारा वार्षिक राजभाषा समारोह –2022

दिनांक 21 दिसंबर, 2022 को नराकास (बैंक), वडोदरा द्वारा वार्षिक राजभाषा समारोह –2022 का आयोजन किया गया. कार्यक्रम की अध्यक्षता नराकास (बैंक), वडोदरा के अध्यक्ष एवं मुख्य महाप्रबंधक (परिचालन) श्री दिनेश पंत ने की. इस अवसर पर भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की प्रतिनिधि एवं उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पश्चिम), मुंबई डॉ. सुस्मिता भट्टाचार्य मुख्य अतिथि के रूप में विशेष रूप से उपस्थित रहीं. कार्यक्रम में समिति के उपाध्यक्ष एवं बड़ौदा अंचल के अंचल प्रमुख श्री राजेश कुमार सिंह, प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह सहित सभी सदस्य कार्यालयों/ शाखाओं के कार्यपालकगण एवं राजभाषा प्रभारीगण उपस्थित रहे. इस दौरान नराकास (बैंक), वडोदरा के तत्त्वावधान में समिति की ओर से वडोदरा के सुप्रसिद्ध वरिष्ठ गुजराती साहित्यकार पद्मश्री सितांशु यशश्चन्द्र को सयाजी साहित्य सम्मान–2022 से सम्मानित किया गया. साथ ही, सभी सदस्य कार्यालयों/ शाखाओं को अंतर–बैंक राजभाषा शील्ड पुरस्कार प्रदान किए गए. कार्यक्रम का समग्र समन्वयन एवं संचालन समिति के सदस्य सचिव एवं सहायक महाप्रबन्धक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री पुनीत कुमार मिश्र ने किया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें

टोंक

दिनांक 16 दिसंबर, 2022 को नराकास (कार्यालय) टोंक की सातवीं छमाही बैठक का आयोजन किया गया। वर्चुअल माध्यम से आयोजित बैठक में उपनिदेशक, कार्यान्वयन, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग श्री कुमार पाल शर्मा, स्थानीय साहित्यकार डॉ. मनु शर्मा, प्रधान कार्यालय से सहायक महाप्रबंधक, राजभाषा एवं संसदीय समिति श्री पुनीत कुमार मिश्र क्षेत्रीय कार्यालय, टोंक के उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री मोअज्जम मसूद एवं सभी सदस्य कार्यालयों के कार्यपालक शामिल रहे।

अहमदाबाद

दिनांक 20 दिसंबर, 2022 को बैंक नराकास, अहमदाबाद की 72वीं अर्द्धवार्षिक बैठक का आयोजन किया गया। उपनिदेशक (कार्यान्वयन – पश्चिम), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार डॉ. सुस्मिता भट्टाचार्य की गरिमामयी उपस्थिति में आयोजित इस बैठक की अध्यक्षता उप महाप्रबंधक श्री पी के बाफना ने की। इस कार्यक्रम में नराकास, अहमदाबाद की ई-पत्रिका के नए अंक का विमोचन भी किया गया।

अलीराजपुर

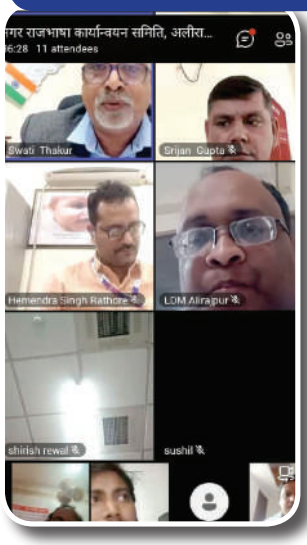

दिनांक 24 नवंबर, 2022 को अग्रणी जिला प्रबंधक, अलीराजपुर श्री सौरभ जैन की अध्यक्षता में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अलीराजपुर की नौवीं अर्द्धवार्षिक बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में समिति के अध्यक्ष समेत कुल 11 सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुख की प्रतिभागिता रही। इस बैठक में क्षेत्रीय प्रमुख, रतलाम श्री सुबोध इनामदार उपस्थित रहे।

धमतरी

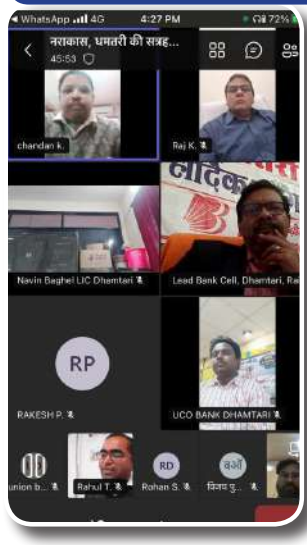

दिनांक 21 दिसंबर, 2022 को नराकास, धमतरी की सत्रहवीं अर्धवार्षिक समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया जिसमें नगर समिति के कार्यालयों/बैंक शाखाओं ने अपनी सहभागिता सुनिश्चित की। यह बैठक अग्रणी जिला प्रबंधक, धमतरी श्री प्रबीर कुमार रॉय की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में क्षेत्रीय प्रमुख, धमतरी श्री राजेश कुमार दास विशेष रूप से उपस्थित रहे।

राजनांदगाँव

दिनांक 15 दिसंबर, 2022 को नराकास, राजनांदगाँव की सत्रहवीं अर्धवार्षिक समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया जिसमें नगर समिति के कार्यालयों/बैंक शाखाओं ने अपनी सहभागिता सुनिश्चित की। यह बैठक अग्रणी जिला प्रबंधक, राजनांदगाँव श्री अजय कुमार त्रिपाठी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में उप क्षेत्रीय प्रमुख, दुर्ग श्री सिद्धार्थ वर्मा विशेष रूप से उपस्थित रहे।

बालोद

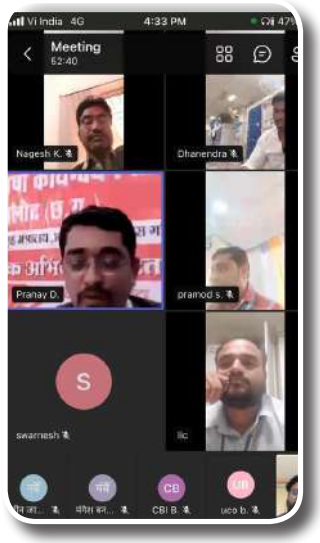

दिनांक 7 दिसंबर, 2022 को नराकास, बालोद की सत्रहवीं अर्धवार्षिक समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया जिसमें नगर समिति के कार्यालयों/बैंक शाखाओं ने अपनी सहभागिता सुनिश्चित की। यह बैठक अग्रणी जिला प्रबंधक, बलोद श्री प्रणय दुबे की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में क्षेत्रीय प्रमुख, धमतरी श्री राजेश कुमार दास विशेष रूप से उपस्थित रहे।

यात्रा-संस्मरण

कश्मीर - हमारे सपनों का साक्षात्कार!

के संतनराज
क्षेत्रीय कार्यालय,
मंगलूरु शहर क्षेत्र

मैं अपने दस खास मित्रों के साथ कश्मीर घूमने गया था। इस यात्रा की योजना मेरी बहन की शादी के पहले दिन बनी। उस दिन मेरे घर कुछ मित्र आए थे और बात करते-करते कश्मीर घूमने की योजना बन गई। जल्द ही एक व्हाट्सऐप ग्रुप बन गया। यह सफर छोटा नहीं था इसलिए लंबे सफर के लिए एक योजना तैयार करना आवश्यक था। मेरे मित्र सक्रिय होकर यात्रा की तैयारी करने के कार्य में जुड़ गए।

आखिरकार वह दिन आ गया और हम सब करिपूर एयरपोर्ट पहुंच गए। सबके आंखों में कश्मीर देखने के उत्साह की चमक दिखाई दे रही थी। बचपन से ही मैं विमान से यात्रा करने का सपना देखता था। मेरे लिए हवाई जहाज से उड़ने का यह पहला मौका था। हम आपस में बात करते जा रहे थे, सेल्फी ले रहे थे। हमें पता भी नहीं चला कि हम नई दिल्ली कैसे पहुंच गए। इसी प्रकार दिल्ली से श्रीनगर का सफर भी शुरू हो गया। हम सब इस यात्रा का आनंद ले रहे थे। सेल्फी लेते-लेते सुबह के सूरज की किरणों को चीरते हुए विमान कश्मीर की ओर उड़ने लगा। करीब डेढ घंटे के बाद विमान धरती पर उतरा और मैंने श्रीनगर की मिट्टी में पैर रखा। पहले दिन का सफर शुरू हुआ और हमारी आंखे चमक उठी, खुशी से आसमान में तैरने जैसा लग रहा था।

एयरपोर्ट के बाहर टैक्सी लेकर ड्राइवर हमारा इंतजार कर रहा था। टुलिप के फूलों के खिलने का मौसम होने के कारण रास्ते में गाड़ियां कतार में चींटियों की तरह रेंग रही थी। सैनिकों को बंदूक लेकर खड़े देखकर मेरे मन में डर के साथ सुरक्षित होने का एहसास भी हो रहा था। रास्ते के अड़चनों को पार करते हुए धीरे-धीरे टैक्सी आगे निकली। पहले केवल चित्र में देखे हुए हम डल झील के किनारे घूम रहे थे। पहला दिन हमें डल झील में हाऊसबोट में बिताना था। लकड़ी से बने शिकारे से यात्रा करते हुए यहां का मनमोहक रंगीन दृश्यों को देखते हुए हाउस बोट पहुंचे। शिकारे में हमारा यह सफर मन में एक फोटो फ्रेम की तरह रहेगा। सामान उतरवाने के बाद कश्मीर की खोज में निकले। पहले दिन श्री शंकराचार्य मंदिर और टुलिप गार्डन देखने का प्लान था। करीब दो सौ सीढ़ियां चढ़ते हुए मंदिर पहुंचे और वहां से श्रीनगर का खूबसूरत नज़ारा देखते ही रह गए। दर्शन के बाद विशाल डल झील में हजारों बोट और इसमें से हमारा हाउसबोट ढूंढना आसान नहीं था, फिर भी दूर एक बिंदी की तरह हमारा बोट दिख रहा था। हम आगे टुलिप गार्डन की ओर बढ़े।

श्रीनगर शहर की भीड़ को देखते हुए हमने फिर शिकारे से जाने का फैसला किया। आज एक बार आंख बंद करुं तो पहले मन में शिकारे का सफर ही आता है। प्रशांत झील में किनारे से कुछ दूर खेते हुए यात्रा करने का अनुभव शब्दों में बयान नहीं कर सकते। यहां पहले से ही लोगों की काफी भीड़ थी। मेरे मन में केवल सिनेमा में दिखाई देने वाले सीन आ रहे थे। टुलिप फूल से रूबरू होने का यह पहला अनुभव था। लेकिन वास्तविक रूप में इन लाल, पीले रंग-बिरंगे टुलिप फूलों का खूबसूरत नज़ारा शब्दों में वर्णन करना असंभव है। जिन्दगी में एक बार तो यह नज़ारा देखना ही चाहिए।

अगला गंतव्य मुगल गार्डन था। हमारा ड्राइवर ट्रैफिक में फंसा था अतः उनका इंतजार किए बगैर हम झील के किनारे से चलने लगे। सब थके हुए थे और अचानक एक गुड्सऑटो सामने आया जैसे कि किसी ने हमारे लिए भेजा था। पहली विमान यात्रा, शिकारा यात्रा और अब गूड्सऑटो यात्रा। बकरी, मुर्गी ले जाने वाली गुड्सगाड़ी में हमारे गाइड ने सेल्फी लेते हुए हमारे उत्साह को बढ़ाया। मुगल गार्डन की विशेषता वहाँ का पोशाक पहनकर फोटो लेना था। लेकिन आपसी रकम की चर्चा करते-करते हम कहीं नहीं पहुंचे और हमने फोटो लेने की आशा छोड़ ही दी।

दूसरे दिन हमारी यात्रा पहलगांव की ओर थी और यह श्रीनगर से करीब 90 किमी दूरी पर है। सामने से सरसों के पीले फूल, केसर के फूल, सेब के पेड़ यह सब हमारे लिए एक नया अनुभव था और इसलिए इन वादियों में न जाने हमने कितने फोटो लिए जो गिनती से बाहर था। पहलगांव पहुंचने के बाद घोड़े पर सवार होकर हमें आगे का सफर करना था। सफर में मेरा घोड़ा सबसे आगे था, पत्थर व रेतीले पहाड़ी मार्ग से 45 मिनट में लक्ष्य पर पहुंच गए। सामने हराभरा एक बड़ा मैदान, उसके चारों ओर हरे पेड़/ वृक्ष, उसके पीछे सफ़ेद पर्वत शिखरों की शृंखला। यहां का खूबसूरत नजारा छोड़कर लौटने का मन नहीं कर रहा था। एक तो घोड़े के ऊपर बैठकर ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी रास्ते का सफर में चढ़ना आसान लग रहा था, उतरना काफी मुश्किल ही नहीं, काफी डरावना और खतरनाक था। ऐसा लग रहा था कि मैं घोड़े के साथ गहराइयों में गिर जाऊंगा। पता ही नहीं चला देखते ही देखते सफर का दूसरा दिन भी जल्द ही समाप्त हुआ।

तीसरे दिन के सफर का गंतव्य था सोनमार्ग। सुबह नाश्ते के बाद बीच में कहीं भी रुके बिना सोनमार्ग पहुंचे। जैसा कि सभी पर्यटन स्थानों में गाड़ी भाड़े पर पूछताछ होती है और मेरे एक मित्र, टैक्सी ड्राईवर से भाड़े के संबंध में पूछताछ जोर से हो रही थी। समय निकल रहा था और मुझे ऐसा लग रहा था आज का दिन बेकार ही रहेगा। तब अचानक देवता जैसा एक आदमी आया और 2000 रुपये में गंतव्य तक पहुंचाने के लिए तैयार हो गया। मुझे लग रहा था कि इस दुनिया में नेक एवं ईमानदार लोगों की कमी नहीं है। हम निकल पड़े अगले पड़ाव की ओर.... किसी भी तरह हम बालताल तक पहुंच गए. वहां लाठी पकड़े सैनिक का समूह हमारे सामने आए और बताया कि 4 बजे के बाद वहां जाने की अनुमति नहीं है। हमें लाठी खाने की आदत व हिम्मत नहीं थी, इसलिए निराश होकर वहां से लौटना पड़ा। गाड़ी में बैठने पर हम सब के चेहरे पर उदासी छा गयी। क्योंकि कश्मीर आने के बाद अब तक हमने बर्फ को छुआ तक ही नहीं था, ऐसा लग रहा था कि बर्फ में खेलने का हमारा सपना अधूरा ही रह जाएगा। अपने आपको तसल्ली देते हुए हम लौटे। अगले दिन की प्रतीक्षा के कारण डल झील से पकड़ी गयी मछली की करी बेस्वाद लगी। हम सबको उदास देखकर हमारे गाइड ने रात को एक जगह जाने की बात कही। हमारी थकान दूर हुई और हम सब तैयार हुए। रात को ऊबड़-खाबड़ रास्ते से हम 'ज़ीरो ब्रिज' तक पहुंचे। हमारी खुशी की ठिकाना ही नहीं था, इस मनमोहक दृश्य का वर्णन कैसे करूं, पर्यटकों का कोई हंगामा नहीं था, बस पुल के नीचे शांत रूप से बहने वाली झील नदी और केवल हम थे। यह दृश्य मैंने अपने पलकों में छुपाकर एक खूबसूरत तस्वीर खींच ली जो हमेशा मेरे अन्तर्मन में साथ रहेगा।

कश्मीर यात्रा का अंतिम दिन भी आ गया। फिर शिकारा में बैठकर फ्लोटिंग और मार्केट का दौरा करना ही हमारा लक्ष्य था। डल झील में आसपास के पेड़, बंद दुकानें व शिकारों का नज़ारा एक आईने की तरह प्रतिबिंधित हो रहा था। तरह-तरह की तरकारी व फल भरकर इधर-उधर तैरने वाले नावों का दृश्य (तैरती मंडी) हम देखते ही रह गए। कश्मीरी गरम चाय पीकर सब अपने सपने से जाग उठे। अब हम गुलमर्ग जाने के लिए बर्फ से ढकी पर्वत मालाओं की ओर बढ़ चले। केबल कार में टिकट पहले ही बुक कर चुके थे। अंत में हम सपनों की राजधानी पहुंच गए। फेज 1 व फेज 2 में चढ़ने के लिए पर्यटकों की काफी लंबी कतार थी। मन में बर्फीले नजारे के कारण कड़ी धूप में कतार में खड़े होने के बावजूद भी हमें पसीना नहीं आ रहा था। समंदर से करीब चौदह हजार फीट ऊंचे पहाड़ में हमारे चारों ओर बर्फ से ढके पर्वत शिखर थे। धरती में कहीं स्वर्ग है तो यहीं है। सब बर्फ में खूब खेल रहे थे, बर्फीली जमीन में पांव रखने में डर लग रहा था। बर्फ में चलने का पहला अनुभव! यहां का मशहूर 'स्नो स्कीइंग' का सभी आनंद उठा रहे थे। मुझे केवल सिनेमा में दिखाए जाने वाले बर्फ में हीरो और हिरोईन का रोमांटिक गीत-गाते सीन याद आ रहे थे। हम बर्फ में खेल रहे थे, नाच रहे थे, शोर मचा रहे थे, न जाने खुशी में क्या-क्या कर रहे थे! अचानक नीचे से उतरने का बुलावा आया। हमारे मन में कभी न भूलने वाली कश्मीर की खूबसूरत यादें ताजा रहेंगी।

हम नीचे उतर गए और ये चार दिन यूं ही बीत गये, चार सुनहरे दिन... सपने के चार दिन... पता नहीं जिंदगी में हम दस मित्र कश्मीर दुबारा आएंगे या नहीं। अगले दिन फ्लाइट से हम अपने शहर की ओर निकले और सब अपने-अपने गंतव्य की ओर.. लेकिन कश्मीर की यादें.. ताजा सपना बनकर हमेशा साथ रहेंगी।

***

नराकास गतिविधियां

अंचल कार्यालय, कोलकाता को नराकास का पुरस्कार

दिनांक 12 नवंबर, 2022 को नराकास, कोलकाता द्वारा अंचल कार्यालय, कोलकाता को राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता की श्रेणी में तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ. यह पुरस्कार अंचल कार्यालय से उप अंचल प्रमुख सुश्री मौसुमी मित्रा ने ग्रहण किया।

अंचल कार्यालय, चंडीगढ़ द्वारा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन

दिनांक 02 दिसंबर, 2022 को नराकास, चंडीगढ़ के तत्त्वावधान में अंचल कार्यालय, चंडीगढ़ द्वारा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम की अध्यक्षता अंचल प्रमुख श्री विमल कुमार नेगी ने की।

अंचल कार्यालय, मंगलूरु को नराकास का पुरस्कार

दिनांक 18 नवंबर, 2022 को आयोजित नराकास, मंगलूरु की 71वीं अर्धवार्षिक बैठक एवं हिंदी दिवस पुरस्कार वितरण समारोह 2022 के दौरान अंचल कार्यालय, मंगलूरु को वर्ष 2021-22 के लिए उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन हेतु बैंक वर्ग में तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। नेटवर्क उप महाप्रबंधक श्री विनय गुप्ता ने नराकास अध्यक्ष से यह पुरस्कार प्राप्त किया।

नागपुर क्षेत्र को नराकास का पुरस्कार

दिनांक 19 अक्तूबर, 2022 को आयोजित नराकास की अर्धवार्षिक समीक्षा बैठक में क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर को वर्ष 2021-22 का प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया. यह पुरस्कार बैंक के क्षेत्रीय प्रमुख श्री घनश्याम गुप्ता ने ग्रहण किया.

अंचल कार्यालय, बड़ौदा द्वारा प्रतियोगिता का आयोजन

दिनांक 16 नवंबर, 2022 को नराकास, बड़ौदा के तत्वावधान में अंचल कार्यालय, बड़ौदा द्वारा 'प्रश्नमंच प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में नेटवर्क उप महाप्रबंधक, श्रीमती वीणा के शाह, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री पुनीत कुमार मिश्र विशेष रूप से उपस्थित रहे।

नराकास, टोंक के तत्त्वावधान में संगोष्ठी आयोजित

दिनांक 18 अक्तूबर, 2022 को नराकास, टोंक के तत्त्वावधान में मुख्य शाखा द्वारा 'वित्तीय साक्षरता बढ़ाने में सहायक हिन्दी' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर समिति के अध्यक्ष श्री वीरेंद्र यादव, क्षेत्रीय प्रमुख श्री रामवतार पालीवाल एवं सदस्य कार्यालय के सदस्य उपस्थित रहे।

निरीक्षण
क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु

दिनांक 07 दिसंबर, 2022, को श्री नरेंद्र सिंह मेहरा, उप निदेशक, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, भारत सरकार, बेंगलूरु द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, मंड्या की रामनगरम शाखा का औचक दौरा किया गया। इस अवसर पर शाखा प्रमुख श्री तुषीथ नारायण तथा अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

नराकास, अंकलेश्वर द्वारा भरूच क्षेत्र को पुरस्कार

दिनांक 22 दिसंबर, 2022 को नराकास, अंकलेश्वर द्वारा आयोजित छःमाही बैठक के दौरान क्षेत्रीय कार्यालय, भरूच को वित्तीय वर्ष 2021-22 के लिए राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार क्षेत्रीय प्रमुख श्री सचिन वर्मा ने प्राप्त किया।

योग प्राणायाम - स्वस्थ जीवन का आधार

मनीष व्यास
प्रबंधक (राजभाषा)
अहमदाबाद क्षेत्र-2

योग वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित एक आध्यात्मिक विषय है, यह स्वस्थ जीवनयापन की एक कला और विज्ञान है जिसका मुख्य उद्देश्य मन और शरीर के बीच सामंजस्य स्थापित करना है। योग से जुड़े ग्रंथों के अनुसार योग करने से व्यक्ति की चेतना ब्रह्मांड की चेतना से जुड़ जाती है जो मन एवं शरीर, मानव एवं प्रकृति के बीच परिपूर्ण सामंजस्य का द्योतक है।

आम तौर पर योग को स्वास्थ्य एवं फिटनेस के लिए थैरेपी या व्यायाम की पद्धति के रूप में समझा जाता है। हालांकि शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य योग के स्वाभाविक परिणाम हैं, परंतु योग का लक्ष्य अधिक दूरगामी है। योग ब्रह्माण्ड से स्वयं का सामंजस्य स्थापित करने के बारे में है। योग किसी खास धर्म, आस्था पद्धति या समुदाय के मुताबिक नहीं चलता है। इसे सदैव अंतरतम की सेहत के लिए कला के रूप में देखा गया है। जो कोई भी तल्लीनता के साथ योग करता है वह इसके लाभ प्राप्त कर सकता है, चाहे उसका धर्म, जाति या संस्कृति जो भी हो।

वर्तमान में मानसिक तनाव से भरी हुई और अल्प शारीरिक श्रम वाली जीवनशैली में अनुशासित दिनचर्या व योग के माध्यम से ही शरीर को स्वस्थ रखा जा सकता है। यह तंत्रिका तंत्र और अन्तःस्त्रावीतंत्र के बीच संतुलन स्थापित करता है।

योग करने के लाभ –

1. नियमित योग करने से शरीर के सभी अंग सुचारु रूप से कार्य करते हैं।
2. योग के विभिन्न आसनों से शरीर के अलग-अलग हिस्सों को फायदा पहुंचता है। योग में शरीर के हर छोटे से छोटे अंग का व्यायाम होता है जो शरीर को लचीला बनाए रखता है।
3. संतुलित खानपान व अनुशासित दिनचर्या के साथ योगाभ्यास करने से कई बड़ी बीमारियों को नियंत्रित किया जा सकता है।
4. नियमित योगाभ्यास से शरीर की रोगप्रतिरोधक क्षमता में अभूतपूर्व वृद्धि होती है।

प्राणायाम योग के आठ अंगों में से एक है। अष्टांग योग में आठ प्रक्रियाएं होती हैं- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान तथा समाधि । प्राणायाम (प्राण + आयाम) का शाब्दिक अर्थ है - प्राण या श्वसन को लम्बा करना या फिर जीवनी शक्ति का विस्तार करना ।

प्राणायाम भी अनेक प्रकार के होते हैं लेकिन कुछ महत्वपूर्ण योग प्राणायाम का विवरण निम्नानुसार दिया गया है जिन्हें आरंभिक तौर पर किए जा सकते हैं एवं इनके नियमित अभ्यास से जीवन में एक नई ऊर्जा, उत्साह और सकारात्मकता का संचार होता है ।

अनुलोम-विलोम प्राणायाम : अनुलोम का अर्थ होता है सीधा और विलोम का अर्थ है उल्टा। यहां पर सीधा का अर्थ है नासिका या नाक का दाहिना छिद्र और उल्टा का अर्थ है- नाक का बायां छिद्र। अनुलोम-विलोम प्राणायाम में नाक के दाएं छिद्र से सांस खींचते हैं, तो बायीं नाक के छिद्र से सांस बाहर निकालते हैं। इसी तरह यदि नाक के बाएं छिद्र से सांस खींचते है, तो नाक के दाहिने छिद्र से सांस को बाहर निकालते हैं। अनुलोम-विलोम प्राणायाम को कुछ योगीगण 'नाड़ी शोधक प्राणायाम' भी कहते हैं। उनके अनुसार इसके नियमित अभ्यास से शरीर की समस्त नाड़ियों का शोधन होता है यानी वे स्वच्छ व निरोगी बनी रहती हैं। इससे मानसिक शक्ति में अभूतपूर्व वृद्धि होती है और कई बीमारियाँ ठीक होने लगती है ।

कपालभाति : कपालभाति योग में हठ योग की एक प्रक्रिया है । संस्कृत में कपाल का अर्थ होता है हमारा 'ललाट' और भाति का अर्थ होता है 'तेज' अर्थात् इसके नियमित अभ्यास से व्यक्ति के ललाट पर अलौकिक तेज उत्पन्न होता है । यह एक उच्च उदर श्वास व्यायाम कहलाता है। कपाल भाति प्राणायाम करने के लिए रीढ़ को सीधा रखते

हुए किसी भी ध्यानात्मक आसन, सुखासन या फिर कुर्सी पर बैठें। इसके बाद तेजी से नाक के दोनों छिद्रों से सांस को यथासंभव बाहर फेंकें। साथ ही पेट को भी यथासंभव अंदर की ओर संकुचित करें। तत्पश्चात तुरन्त नाक के दोनों छिद्रों से सांस को अंदर खीचतें हैं और पेट को यथासम्भव बाहर आने देते हैं। इस क्रिया को शक्ति व आवश्यकतानुसार 50 बार से धीरे-धीरे बढ़ाते हुए 500 बार तक कर सकते हैं, किन्तु एक क्रम में 50 बार से अधिक न करें। इस प्राणायाम के नियमित अभ्यास से शरीर की अनावश्यक चर्बी घटती है। पाचन तंत्र ठीक रहता है। भविष्य में कफ से संबंधित रोग व सांस के रोग नहीं होते हैं। इससे प्राय: दिन भर सक्रियता बनी रहती है और रात को नींद भी अच्छी आती है। इससे अस्थमा (दमा) का रोग जड़ से नष्ट होता हैं। गंभीर बीमारियों से पीड़ित व्यक्तियों को प्रशिक्षक की देखरेख में योग करना चाहिए।

भस्त्रिका प्राणायाम : भस्त्रिका का देशी भाषा में अर्थ है 'धोंकनी'; एक ऐसा प्राणायाम जिसमें शरीर की आंतरिक शुद्धि की जाती है । पद्मासन या फिर सुखासन में बैठ जाएं। कमर, गर्दन, पीठ एवं रीढ़ की हड्डी को सीधा रखते हुए शरीर को बिल्कुल स्थिर रखें। इसके बाद बिना शरीर को हिलाए दोनों नासिका छिद्र से आवाज करते हुए श्वास भरें। फिर आवाज करते हुए ही श्वास को बाहर छोड़ें। अब तेज गति से आवाज लेते हुए सांस भरें और बाहर निकालें। यही क्रिया भस्त्रिका प्राणायाम कहलाती है। इस प्राणायाम के अभ्यास से मोटापा दूर होता है। शरीर को प्राणवायु अधिक मात्र में मिलती है और कार्बन-डाई-ऑक्साइड शरीर से बाहर निकलता है। इस प्राणायाम से रक्त की सफाई होती है। शरीर के सभी अंगों तक रक्त का संचार भली-भांति होता है। जठराग्नि तेज हो जाती है। दमा, टीवी और सांसों के रोग दूर हो जाते हैं। फेफड़े को बल मिलता है, स्नायुमंडल सबल होता है। वात, पित्त और कफ के दोष दूर होते हैं। इससे पाचन संस्थान, लीवर और किडनी की मसाज होती है।

भ्रामरी प्राणायाम : भ्रामरी शब्द 'भ्रमर' से निकला जिसका अर्थ होता है एक गुनगुनाने वाली काली मधुमक्खी। इस प्राणायाम का अभ्यास करते समय नाक से एक गुनगुनाने वाली आवाज निकलती है,जो काली मधुमक्खी की आवाज से मिलती-जुलती है, इसलिए इसका नाम भ्रामरी पड़ा है। इस आसन को करने के लिए पद्मासन या सुखासन में बैठ जाएं। अब अपने दोनों हाथों को कोहनियों से मोड़कर अपने कानों

के पास लाएं और दोनों हाथों के अंगूठों से अपने दोनों कानों को बंद करें। अब दोनों हाथों की तर्जनी उंगली को माथे पर और मध्यमा, अनामिका और कनिष्का उंगली को आंखों के ऊपर रखें। भ्रामरी प्राणायाम के दौरान ध्यान रखें की मुंह बंद रहे और नाक से सांस लें। अब नाक से मधुमक्खी की तरह गुनगुनाएं और सांस बाहर छोड़ें। सांस छोड़ते हुए ॐ का उच्चारण करें। सांस अंदर लेने में करीब 3-5 सेकंड और भ्रमर ध्वनि के साथ बाहर छोड़ने में करीब 15-20 सेकंड का समय लगता है। करीब तीन मिनट में 5-7 बार भ्रामरी प्राणायाम किया जा सकता है।

इस प्राणायाम से अनिद्रा, क्रोध, चिंता दूर तो होती ही है वहीं सर्दी के मौसम में नाक बंद होना, सिर में दर्द होना, आधे सिर में बहुत तेज दर्द होना, नाक से पानी गिरना इन सभी रोगों से छुटकारा पाने के लिए भ्रामरी प्राणायाम सबसे बेहतर प्राणायाम है इसके नियमित अभ्यास से हम इन सभी बीमारियों से छुटकारा पा सकते हैं।

आरंभिक तौर पर योग की शुरुआत करने वाले लोगों को इन उपरोक्त प्राणायाम से शुरुआत करनी चाहिए और इसी के साथ आवश्यक आसन जैसे सूर्य नमस्कार, भुजंगासन, ताड़ासन, अधोमुखश्वानासन, पश्चिमोत्तानपादासन इत्यादि भी करने चाहिए ।

यदि प्रातः बेला में नियमित आधार पर आधे से एक घंटे भी उपरोक्त प्राणायाम और योगासनों का अभ्यास किया जाए तो शीघ्र ही हमारा शरीर ऊर्जावान और उत्साह से परिपूर्ण महसूस होगा जिसका लाभ हमारी प्रोफेशनल कार्यशैली में भी दिखाई देगा ।

***

विविध गतिविधियां

जयपुर क्षेत्र द्वारा 'महामुकाबला अभियान' की शीर्षस्थ शाखाओं का सम्मान

दिनांक 19 अक्तूबर, 2022 को जयपुर क्षेत्र द्वारा शाखा समीक्षा एवं आगामी लक्ष्य बैठक का आयोजन किया गया। इस दौरान आयोजित सम्मान समारोह में 'महामुकाबला अभियान' के दौरान 'क' क्षेत्र में मेट्रो श्रेणी में अखिल भारतीय स्तर पर 4 शाखाओं के शाखा प्रमुखों को विशेष प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया।

अंचल कार्यालय, बड़ौदा अंचल की पत्रिका 'बड़ौदा दर्पण' के नये अंक का प्रकाशन

दिनांक 18 नवंबर, 2022 को बड़ौदा अंचल की पत्रिका 'बड़ौदा दर्पण' के नवीनतम अंक का विमोचन अंचल प्रमुख, श्री राजेश कुमार सिंह के कर-कमलों से किया गया। इस अवसर पर उप अंचल प्रमुख श्री भवानी सिंह राठौड़, नेटवर्क उप महाप्रबंधक द्वय श्री शरत कुमार पाणिग्रही एवं श्रीमती वीणा के शाह तथा अंचल कार्यालय के स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु-मध्य में बॉब अभिव्यक्ति अभियान

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु-मध्य द्वारा नवंबर, 2022 महीने के दौरान क्षेत्रीय कार्यालय तथा क्षेत्र की शाखाओं के स्टाफ सदस्यों के मोबाइल में 'बॉब अभिव्यक्ति' ऐप डाउनलोड करने हेतु अभियान चलाया गया।

क्षेत्रीय प्रमुख, भोपाल क्षेत्र को हिंदीतर भाषी हिंदी सेवी सम्मान से सम्मानित

दिनांक 10 अक्तूबर, 2022 को मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपाल द्वारा हिंदी भवन में आयोजित समारोह में भोपाल क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रमुख श्री सुरेश कुमार तालरेजा को हिंदीतर भाषी हिंदी सम्मान से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें कार्यक्रम के मुख्य अतिथि व मध्य प्रदेश के पूर्व प्रशासनिक प्रमुख श्री कृपाशंकर शर्मा के कर कमलों से प्रदान किया गया।

अहमदाबाद क्षेत्र-2 की चयनित शाखाओं के राजभाषा प्रेरकों के साथ संवाद-बैठक आयोजित

दिनांक 18 अक्तूबर, 2022 को अहमदाबाद क्षेत्र-2 की चयनित शाखाओं के राजभाषा प्रेरकों के साथ विशेष संवाद-बैठक का आयोजन किया गया। शाखा स्तर पर रेटिंग प्रणाली के माध्यम से राजभाषा कार्यान्वयन को किस प्रकार बढ़ाया जाए इस संबंध में प्रेरकों को जानकारी दी गई। इसके अतिरिक्त 'बॉब अभिव्यक्ति' ऐप, एसएमएस सुविधा और व्हाट्सऐप बैंकिंग सुविधा विषयों पर चर्चा की गई।

कोटा क्षेत्र में हिंदी माह समापन व सम्मान समारोह

दिनांक 05 नवंबर, 2022 को कोटा क्षेत्र द्वारा हिन्दी माह समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। समारोह में सहायक महाप्रबंधक एवं क्षेत्रीय प्रमुख श्री मुकेश आनंद मेहरा द्वारा विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार स्वरूप प्रशस्ति पत्र व गिफ्ट कार्ड भेंट किए गए.

विविध गतिविधियां

क्षेत्रीय कार्यालय, भरूच द्वारा ग्राहक सम्मान

दिनांक 22 दिसंबर, 2022 को वार्षिक राजभाषा कार्ययोजना के अनुसार प्रत्येक तिमाही के अंतर्गत शाखा के व्यवसाय वृद्धि में विशेष सहयोग हेतु आदर्श हिंदी शाखा सेंटर पॉइंट अंकलेश्वर के शाखा प्रमुख श्री रोहित वैश्य (मुख्य प्रबंधक) द्वारा महत्वपूर्ण ग्राहक श्री पंसुरिया किशोरभाई को सम्मानित किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, गोधरा द्वारा हिंदी पखवाड़ा का आयोजन

क्षेत्रीय कार्यालय, गोधरा एवं गोधरा II द्वारा हिंदी पखवाड़ा समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर क्षेत्रीय प्रमुख, गोधरा II क्षेत्र श्री रोहित कुमार, उप क्षेत्रीय प्रमुख, गोधरा II क्षेत्र श्री नवीन गोखिया, उप क्षेत्रीय प्रमुख, गोधरा क्षेत्र श्री नरेंद्र पांडेय सहित क्षेत्रीय कार्यालय की टीम उपस्थित रही।

क्षेत्रीय कार्यालय, बड़ौदा शहर–II द्वारा पत्रिका का विमोचन

दिनांक 04 नवंबर, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, बीसीआर–2 की ई–पत्रिका 'संवाहिका' के नए अंक का विमोचन क्षेत्रीय प्रमुख श्री राजन प्रसाद एवं उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री मनोज कुमार की उपस्थिति में किया गया. इस अवसर पर मुख्य प्रबंधक श्री कुणाल हरवाणी, आरबीडीएम श्री राजीव रंजन सिन्हा एवं क्षेत्रीय कार्यालय के अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

क्षेत्रीय कार्यालय, नवसारी द्वारा हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन

दिनांक 02 अक्तूबर, 2022 को हिन्दी पखवाड़े के समापन दिवस पर क्षेत्रीय प्रमुख नवसारी श्री संजीव आनंद की अध्यक्षता में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया तथा सम्पूर्ण पखवाड़े में आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को क्षेत्रीय प्रमुख के कर–कमलों द्वारा पुरस्कृत किया गया।

प्रधान कार्यालय द्वारा 'भाषा–विमर्श' कार्यक्रम का आयोजन

दिनांक 15 दिसंबर, 2022 को प्रधान कार्यालय, बड़ौदा के सभी विभागों के लिए 'भाषा–विमर्श' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री पुनीत कुमार मिश्र के प्रारंभिक संबोधन और तदुपरांत प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह के मार्गदर्शी वक्तव्य के साथ हुई। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित बड़ौदा अकादमी, वडोदरा के मुख्य प्रबंधक श्री गौतम कुमार ने 'जीवन में कृतज्ञता का जादू' विषय पर व्याख्यान दिया। इस कार्यक्रम में स्टाफ सदस्यों को राजभाषा नीति –नियम, बैंक की योजनाओं और हिंदी शिक्षण योजना के विषय में अवगत कराया गया और साथ ही सामर्थ्य टूल पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

प्राचीन धरोहर- देव सूर्य मंदिर

सोनू कुमार तिवारी
अधिकारी (ऋण विभाग)
अंचल कार्यालय, पुणे

पूरे विश्व में भारत विभिन्न प्रकार की प्राचीन कला कृतियों, स्थापत्य कला, पौराणिक मंदिर और प्राचीन सांस्कृतिक विरासत के लिए प्रसिद्ध है। भारतीय संस्कृति में स्थापत्य कला और प्राचीन कला-कृतियों को धरोहर के रूप माना जाता है और भारत में निर्मित प्राचीनतम मंदिर स्थापत्य कला को जीवंत रखने के उद्देश्य की पूर्ति करते रहे हैं। आज हम उन्हीं मंदिरों में से एक मंदिर की बात करने जा रहे हैं जो कि शिल्पकला का एक अद्भुत नमूना है। देव सूर्य मंदिर कोणार्क मंदिर की तर्ज पर बना एक सूर्य मंदिर है जो बिहार के औरंगाबाद जिले के देव प्रखंड में स्थित है।

प्रचलित मान्यताओं के अनुसार इसका निर्माण स्वयं भगवान विश्वकर्मा द्वारा किया गया है। मंदिर के बाहर संस्कृत में लिखे श्लोक के अनुवाद से यह ज्ञात होता है कि बारह लाख सोलह हजार वर्ष पूर्व त्रेता युग के गुजर जाने के बाद इलापुत्र पुरुरवा ऐला के द्वारा इस सूर्य मंदिर का निर्माण प्रारंभ करवाया गया था। पुरातत्व वेदों की मानें तो इस मंदिर का निर्माण आठवीं-नौवीं सदी के बीच हुआ है। मंदिर में उपयोग में लाए गए शिलालेखों के अध्ययन से यह भी अनुमान लगाया गया है कि वर्ष 2007 में इस पौराणिक सूर्य मंदिर के निर्माण की अवधि एक लाख पच्चास हजार सात वर्ष हो गई है। इस पौराणिक सूर्य मंदिर में उपयोग में लाए गए पत्थरों में विजय चिह्न कलश अंकित हैं और इतिहासकारों का मानना है कि विजय चिह्न यह दर्शाता है कि शिल्प कला के कलाकार ने सूर्य मंदिर का निर्माण करके ही शिल्पकला पर विजय प्राप्त की थी। इस मंदिर में शिलालेखों पर अंकित शिल्पकला नागर शैली की है और इस मंदिर की नक्काशी उत्कृष्ट शिल्पकला का जीवंत प्रमाण है। पुरातत्व विभाग का मत है कि मंदिर में अंकित शिल्पकला द्रविड़ शैली, वेसर शैली की मिश्रित प्रभाव वाली है।

नक्काशीदार पत्थरों को जोड़कर बनाया गया यह सूर्य मंदिर दो भाग में बना हुआ है पहला भाग गर्भ गृह है जिसके ऊपर कमलनुमा शिखर बना हुआ है, दूसरे भाग के सामने का मुख मंडप है, जिसके ऊपर पिरामिडनुमा छत है। मुख मंडप आयताकार है, जिसको पिरामिडनुमा छत को सहारा देने के लिए विशालकाय पत्थरों को तराशकर बनाया गया स्तम्भ है, मंदिर के मुख्य गुंबद पर एक सोने का कलश स्थित है, जो दूर से ही लोगों को आकर्षित करता है।

देव सूर्य मंदिर सूर्य देवता को समर्पित है और भारत में स्थित सूर्य भगवान के कुछ चुनिंदा मंदिरों में से एक है। यह सूर्य मंदिर अन्य सूर्य मंदिरों से इस मामले में भी खास है कि इस मंदिर के द्वार का मुख अन्य मंदिरों की तरह पूर्व दिशा में होने के बजाए पश्चिम दिशा की ओर है। इससे जुड़ी एक लोक कथा भी काफी प्रचलित है। एक बार औरंगजेब मूर्तियों और मंदिरों को तोड़ता हुआ यहां पहुंचा तो देव मंदिर के पुजारियों ने उससे काफी विनती की, कि इस मंदिर को ना तोड़े, यहां सूर्य भगवान का साक्षात् वास है। इस बात पर औरंगजेब बोला यदि सचमुच तुम्हारे भगवान में कोई शक्ति है तो रातभर का समय देता हूं यदि इस मंदिर के द्वार का मुख पूरब दिशा से पश्चिम दिशा में हो जाए तो मैं इसे नहीं तोडूंगा। सभी पुजारियों ने रात भर भगवान भास्कर से प्रार्थना की और सुबह की पहली किरण होते ही सभी लोग चकित हो गए और यह देखा कि मंदिर का मुख पूरब से पश्चिम की ओर हो गया है। तभी से इस मंदिर का दरवाजा पश्चिम की ओर ही है।

मंदिर प्रांगण में सात घोड़े वाले रथ पर विराजमान भगवान सूर्य की प्राचीन मूर्ति है। इस मूर्ति की शिल्पकारी अद्भुत और अविस्मरणीय है। लाखों वर्षों के बाद भी आज ऐसा प्रतीत होता है कि मूर्ति एकदम जीवंत है और सूर्य भगवान यहां साक्षात् वास करते हैं। मंदिर में शिव के पांव पर बैठी पार्वती की भी प्रतिमा है जो कि देश में दुर्लभ प्रतिमाओं में से एक है।

इस मंदिर के बारे में और भी कई लोक कथाएं प्रचलित हैं जिनमें से एक लोक कथा यह भी है कि एक बार भगवान शिव के भक्त माली व सोमाली सूर्यलोक की ओर जा रहे थे, यह बात भगवान सूर्य को रास नहीं आई और उन्होंने दोनों शिवभक्तों को अपनी शक्ति से जलाने का प्रयत्न किया। तब दोनों शिवभक्तों ने अपने आराध्य शिव को याद कर अपनी रक्षा की प्रार्थना की। फिर भगवान शिव ने आवेश में सूर्य भगवान पर वार किया जिससे उनके तीन टुकड़े हो गए और जहां-जहां वे गिरे वहां सूर्य मंदिर का निर्माण किया गया। देव सूर्य मंदिर उसी में से एक है। मंदिर निर्माण के कुछ वर्ष बाद एक घटना घटी, जब देवासुर संग्राम में असुरों के पराक्रम से देवता हार मान गए थे और पृथ्वी लोक पर भी हाहाकार मचा हुआ था। तब देवमाता अदिति ने तेजस्वी पुत्र प्राप्ति के लिए इसी स्थान पर छठी माता की आराधना की थी तब से छठी माता प्रसन्न होकर उन्हें सर्वगुण संपन्न तेजस्वी पुत्र प्राप्ति का वरदान दिया था। जिन्होंने असुरों पर देवताओं को विजय दिलायी और उस समय से इस स्थान का नाम देवताओं ने ''देव'' रखा और छठ पूजा का प्रचलन प्रारंभ हो गया।

देव सूर्य स्थल छठ पूजा के लिए पूरे भारत में एक पवित्र स्थल है। यहां छठ पूजा साल में दो बार (कार्तिक और चैत्र) मास में धूमधाम से मनाई जाती है और यहां पूरे भारत से लोग आते हैं। सरकारी अनुमान के अनुसार यहां कार्तिक मास में 15 लाख से अधिक श्रद्धालु दर्शन के लिए आते हैं। वैसे तो सालभर यहां लोगों का आना-जाना लगा रहता है पर कार्तिक मास और चैत्र मास में एक अद्भुत दृश्य देखने को मिलता है। लाखों की संख्या में श्रद्धालुगण दूर-दूर से आकर सूर्य को दंडवत प्रणाम करते हैं और अर्ध्य देते हैं। श्रद्धालुगण सूर्य कुंड में स्नानकर सूर्य मंदिर तक पहुंचने के लिए पूरे रास्ते दंडवत प्रणाम करते जाते हैं और ऐसी मान्यता है कि इस प्रकार दंडवत करने से उनकी मनोकामना पूर्ण होती है और पाप से मुक्ति मिलती है। ऐसी भी पुरानी मान्यता है कि देव स्थित सूर्य कुंड में कार्तिक और चैत्र मास में शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि में स्नान करने से कुष्ठ रोग स्वतः समाप्त हो जाता है और आप निरोग रहते हैं।

इससे जुड़ी एक और कथा भी बहुत प्रचलित है कि एक बार राजा एल जिन्हें भगवत पुराण के हिसाब से इला पुत्र पुरुरवा के नाम से भी जाना गया है वह भ्रमण करते हुए एक जंगल से गुजर रहे थे तो राजा को रास्ते में शौच लगी तो शौच जाने के लिए राजा ने अपने अनुसेवक से जल लाने को कहा। अनुसेवक इधर-उधर खोजते हुए एक जलाशय के पास पहुंचा और जल भर कर ले आया। राजा के संपूर्ण शरीर में कुष्ठ रोग था और उस जल के छींटे राजा के शरीर पर जहां कहीं भी पड़े वहां से कुष्ठ रोग स्वतः समाप्त हो गया।

देव सूर्य मंदिर धार्मिक, सांस्कृतिक और प्राचीन शिल्पकला का एक अविस्मरणीय प्रतीक है। यह सूर्य मंदिर स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण है, एक सांचे में ढले और कला की आत्मा से तराशे गए पत्थरों की सजी हुई शिलायें, सुन्दर नक्काशी और अनुपम कलाकृतियां मन को बरबस अपनी ओर आकृष्ट कर लेती हैं। यहां के शिलालेख और अंकित शिल्पकला आठवीं-नौवीं सदी के होने के बाद भी जीवंत प्रतीत होती है। यह मंदिर इतिहासकारों और पुरातत्व विद्वानों का भी एक मुख्य आकर्षण का केंद्र बना हुआ है।

***

अपने ज्ञान को परखिए उत्तर (पृष्ठ सं. 46)

1.	ख	8.	ग	15.	क
2.	घ	9.	क	16.	घ
3.	ग	10.	ख	17.	ग
4.	ख	11.	घ	18.	क
5.	क	12.	ग	19.	ग
6.	ख	13.	घ	20.	ख
7.	ग	14.	क		

कहानी

बिरकिसिया

सुनील कुमार सिन्हा
वरिष्ठ प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु (दक्षिण)

समीर ने गेट से गाड़ी निकाली ही थी कि एक अधेड़ भिखारिन ने हाथ जोड़े आवाज दी।

नमस्ते भईया!

रफ़्तार की वजह से गाड़ी अचानक से रोक नहीं पाया। थोड़ी ही दूर जाकर उसने गाड़ी पीछे ले ली। वो भिखारिन अब भी वहीं खड़ी थी। गाड़ी को पीछे आती देख कुछ ठिठक सी गई थी। वह वहां से पीछे मुड़कर जाने का प्रयास करने ही लगी थी तभी समीर ने उसे आवाज दी।

''ऐ! रुको।''

भिखारिन सहम कर रुक गई। समीर के नजदीक आते ही हाथ जोड़कर कहने लगी ''माफ़ करना बाबूजी! ग़लती हो गई। मैंने आपको पीछे से आवाज़ दी''।

समीर ने कहा ''कोई बात नहीं'' और बीस रुपये निकालकर उसके हाथ में दे दिए।

ये सिलसिला पिछले पन्द्रह दिनों से चल रहा था। रोज इसी वक्त समीर निकलता और ये भिखारिन ऐसे ही गेट पर दिवार से सटकर खड़ी रहती और उसकी गाड़ी को देखकर उसे आवाज देती पर उसे देखकर सिर्फ हाथ जोड़ देती। न कुछ बोलती न मांगती फिर समीर अपनी धुन में आगे बढ़ जाता।

आज रविवार था। समीर किसी काम के लिए निकला ही था कि भिखारिन की आवाज आई। आज इतने दिनों बाद समीर की नजर उस भिखारिन के चेहरे पर पड़ी थी। न जाने क्या हुआ कि वह अपनी नज़र उसके चेहरे से हटा नहीं पा रहा था। वो भिखारिन भी घबरा गई थी। वह थरथराती आवाज से बोली ''क्या हुआ भईया? मुझसे कोई ग़लती हो गई क्या?''

''नहीं-नहीं! घबराओ मत। बस तुम्हें देखकर कोई याद आ गया''। अब भिखारिन कुछ सहज हो गई थी। रूआंसी आवाज में बोली ''आप समीर भईया हैं न''? समीर चौंक गया ''तुम्हें कैसे पता''?

''भईया! आपको बिरकिसिया याद है''।

''हां, नाम तो सुना-सुना सा लग रहा है''।

''हां, भईया चालीस साल हो गए। तुम्हें अब कैसे याद होगा''। समीर ने अपने दिमाग पर जोर देकर कुछ याद करने की कोशिश की और अचानक से बोल उठा ''एक मिनट... एक मिनट..रूको..रूको..रूको तुम कहीं..वही आलमबाग वाली बिरकिसिया तो नहीं!''

अचानक से बिरकिसिया फूटफूट कर रोने लगी ''हां भईया, मैं वही अभागन बिरकिसिया हूं। मैं तो आपको एक महीने से देख रही हूं और देखते ही पहचान गई थी पर डर के मारे कुछ बोलने की हिम्मत नहीं हो रही थी''।

''मगर तुम यहां? इस हालत में?''

''बहुत लम्बी कहानी है भईया''

समीर जिस काम से निकला था वह प्रोग्राम स्थगित कर दिया था। उसने बिरकिसिया को अपने पीछे आने का इशारा किया। अभी वह अपने विला से नजदीक ही था। मालिक की गाड़ी देख दरवान ने गेट खोला। पीछे से बिरकिसिया को देख उसने झिड़का ''ऐ बुढ़िया तू कहां घुसी चली आ रही है''? तभी समीर ने आवाज दी ''रामसिंह, उसे अंदर आने दो''।

''जी साहब!'' कहकर रामसिंह ने उसे अंदर आने दिया।

समीर ने रामू काका को आवाज दी और आवश्यक हिदायतें देनी शुरू की। बिरकिसिया की ओर मुखातिब होकर बोला, ''रामू काका तुम्हें सब समझा देंगे। तुम नहा धोकर खाना-वाना खा लो। मैं तुमसे शाम में मिलता हूं।''

इतना कहकर समीर ऊपर अपने कमरे में चला गया।

दोपहर के दो बजने वाले थे। समीर ईजीचेयर पर हिचकोले

खाता अतीत की यादों में गोते लगाने लग गया था। उसे याद आ रहे थे चालीस-पचास साल पहले के वो दिन जो उसने आलमबाग में बिताये थे। वो गलियां, वहां के लोग, वो बचपन के दोस्त, सब।

आलमबाग में एक मुहल्ला था लाल बाग। आलमबाग में हिन्दुओं और मुसलमानों की मिली जुली आबादी थी। खासकर लाल बाग मुहल्ले में बीच में एक पन्द्रह-बीस फीट का मिट्टी का रोड था और रोड के दोनों ओर करीब बारह-तेरह पुराने घर थे। रोड के पश्चिम में दो घरों में मुसलमान लोग रहते थे।

उसी में एक हवेलीनुमा बहुत पुराना सा घर था। उन दोनों घरों में सब मुस्लिम परिवार थे और सब किराये पर रहते थे। किसी पुराने मुस्लिम रईस की हवेली थी जो कभी दिखे नहीं।

उस हवेलीनुमा घर को सब लोग बिरकिसिया के घर के नाम से जानते थे। इसके पीछे भी एक वजह थी। उस घर में रहने वाले सभी छोटे-बड़े कुछ न कुछ छोटा-मोटा काम धन्धा करते थे और रात के लगभग ग्यारह से बारह बजे के बीच में घर लौटते थे। हवेली के अन्दर जाने के लिए एक बड़ा सा पुराना लकड़ी का दरवाजा था। दरवाजे पर एक बड़ा सा सांकल लटकता रहता। रात में जो भी घर लौटता, जोर - जोर से तीन चार बार सांकल खटखटाता और कम से कम तीन चार बार आवाज लगाता ''बिरकिसिया..... ऐ .....बिरकिसिया''। जाड़ा हो या गर्मी यही सिलसिला चलता रहता। उस समय सबके सोने का समय रहता था। इस आवाज से लगभग सब लोग जाग जाते और खीझ जाते पर क्या करते। हालांकि बाद में वही आवाज और खटखटाहट समीर के लिए अलार्म घड़ी का काम करने लगी थी जब वह कॉलेज और फिर आगे नौकरी की पढ़ाई करने लगा था। उसी आवाज से वह जाग जाता और रात भर अपनी पढ़ाई करता।

हिन्दुओं और मुसलमानों के उस मुहल्ले में सब अपनी अपनी जगह खुश थे। त्यौहारों में एक दूसरे के यहां आना-जाना लगा रहता। त्यौहारों के मौके पर अपने-अपने व्यंजनों का आदान-प्रदान करने में सबको बड़ी खुशी मिलती। यहां तक कि मुहर्रम पर अखाड़े निकलते तो मुहल्ले के सब लोग उसमें भाग लेते। मुहल्ले में किसी के यहां कोई शादी ब्याह हो, कोई छठ छठियारी हो सबका सबके यहां निमंत्रण जाता और सबका आना जरूरी होता था।

समीर के पिता का देहान्त हो चुका था। वो खुद तीन भाई-बहनों में सबसे बड़ा था। उसका परिवार चाचा के यहां रहता था। चाचा के खुद के चार-पांच बच्चे और तीन भाई समीर के। किसके पास समय था कि समीर के पीछे पड़े रहता। उन दिनों समीर लगभग बारह-तेरह साल का रहा होगा। पढ़ने-लिखने से ज्यादा मजा उसे खेलकूद और अपने और अपने से छोटी उम्र के बच्चों के साथ समय बिताना अच्छा लगता।

समीर का ज्यादातर समय या तो गली में सब बच्चों के साथ बीतता या फिर उस हवेली में। हवेली में इसलिए क्योंकि वहां बहुत सारे बच्चे थे। सब मिलाकर लगभग पन्द्रह बीस से कम न होंगें। बिरकिसिया उन सबों में सबसे छोटी थी। उस वक्त उसकी उम्र ज्यादा से ज्यादा सात-आठ साल से ज्यादा न रही होगी। बाकी सब बच्चे खेलते होते तो वो बिरकिसिया को जल्दी अपने साथ नहीं खिलाते क्योंकि वो सबसे छोटी थी। वो रोने ठिठकने लगती तो न जाने क्यों समीर उसे अपने पास बिठा लेता और पुचकार कर चुप कराता।

धीरे-धीरे तो ऐसा हो गया कि उसे घर में भी कोई डांट देता तो वो रोते-रोते गली में ही ''समीर भैया... समीर भैया'' करके उसे खोजने लगती। अव्वल तो ज्यादातर बार समीर उसे गली में ही मिल जाता और जो नहीं मिलता तो रोते-रोते सामने समीर के घर में उसे पुकारते-पुकारते घुस जाती। यदि समीर घर में रहा तो आकर उसे पुचकार कर चुप कराता और मां से कुछ दिलाकर उसे खुश करता। वो भी मटकती-मचलती खुश होकर अपने घर चली जाती।

समय का पंछी पंख लगाकर उड़ता है। समीर और उसके साथ के सब बच्चे धीरे-धीरे बड़े होते गए। समय के साथ-साथ समीर भी बड़ा और गम्भीर होता गया। हालांकि सब कुछ वैसा ही था। सिवाय इसके कि समय के साथ सब लोग बड़े हो रहे थे, अपने-अपने हिसाब से जिम्मेदार भी हो रहे थे। जाहिर है समीर का हवेली में जाना भी कम हो गया। ये कोई 90 का दशक रहा होगा। समीर इन्हीं दिनों अपनी पढ़ाई और नौकरी की तैयारी में काफी व्यस्त हो गया था। 90 के दशक में अयोध्या विवाद की वजह से हिन्दू-मुस्लिम का भेदभाव भी बढ़ रहा था। इसका प्रभाव यह पड़ा कि धीरे-धीरे मुहल्ले में लोगों का एक-दूसरे के बीच पहले जैसा सद्भाव नहीं रहा।

उसी दौरान समीर की नौकरी लग गई और पुणे में पोस्टिंग

हो गई। समय के साथ-साथ समीर के सब भाई बहन अपनी अपनी जगह सेटल हो गए। मां की भी मृत्यु हो गई थी। इन सब का परिणाम यह हुआ कि नौकरी के बाद समीर का आलमबाग आना-जाना कम हो गया था जो स्वाभाविक ही था। कुछ ही सालों के बाद समीर की शादी हो गई। उसने पुणे में ही एक विला ले ली थी। दो बच्चे हुए, बड़े भी हुए, उनकी शादियां भी हो गईं, दोनों अमेरिका में सेटल भी हो गए थे। समीर की पत्नी अंजली ज्यादातर बच्चों के साथ अमेरिका में ही रहती थी। चाचा का भी देहान्त हो चुका था। उनका बेटा आलमबाग का मकान बेचकर विदेश में सेटल हो गया था। समीर का आलमबाग से संबंध न के बराबर रह गया था।

समीर को अमेरिका रास नहीं आता और वो ज्यादातर पुणे में ही रहता था। नौकर चाकर सब उसका ध्यान रखते। सब ठीक चल रहा था। समय गुजरता जा रहा था।

इसी बीच बिरकिसिया से इतने दिनों बाद इस हालत में मुलाकात से सारी पुरानी यादें समीर के जेहन में चलचित्र की भांति चल रही थीं। ये सब सोचते-सोचते कब उसकी आँख लग गई पता ही नहीं चला।

आंख तो तब खुली जब रामू काका चाय के लिए उसे जगा रहे थे। ''साहब! साहब! उठिए शाम के सात बज गए हैं और वो बुढ़िया जाने की जिद कर रही है पर जाने के पहले आपसे मिलने की भी जिद कर रही है''।

अचानक समीर को बिरकिसिया का ध्यान आया। उसने पूछा ''कहां है वो''

रामू काका - ''नीचे ही बरामदे में अपनी गठरी लिए बैठी है। आपसे मिलने की जिद कर रही है''।

''रामू काका आप नीचे चलिए मैं आता हूं''।

समीर को आता देख बिरकिसिया खड़ी हो गई और खुद को समेट लिया। समीर नीचे बरामदे में सोफे पर बैठा ही था कि रामू काका ने चाय लाकर उसके सामने रख दी।

रामू काका ने बिरकिसिया को साफ कपड़े दे दिए थे और बिरकिसिया भी नहा धोकर साफ कपड़ों में कम से कम भिखारिन तो नहीं लग रही थी। समीर ने बिरकिसिया को अपने पास बुलाया। न जाने क्यूं उसे उसमें उसी पुरानी बिरकिसिया की झलक दिख रही थी जो जरा सी बात पर बचपन में समीर भैया...समीर भैया बोलते हुए उसे खोजते उसके घर चली आती थी।

अचानक से उसे इस हालत में देखकर समीर को काफी दुख हुआ था। उसे सब कुछ जानने की उत्कंठा हो रही थी। उसने पूछना शुरू ही किया था ''कैसी है री बिरकिसिया?'' और बिरकिसिया तो अपने समीर भईया के पैरों से लिपट कर फूट-फूटकर रोने लगी थी। रोये ही जा रही थी। रोये ही जा रही थी। उसका रोना रुकने का नाम नहीं ले रहा था। समीर उसके सर पर स्नेह से हाथ फेरता हुए उसे चुप कराने की कोशिश करता रहा पर करीब आधा घंटा लगा था उसे सम्हलने में।

समीर ने फिर पूछा ''कैसी है बिरकिसिया? और ये क्या हाल हो गया तेरा।''

बिरकिसिया सिसकते हुए अपनी आपबीती सुनाने लगी ''भईया आपके आलमबाग छोड़ने के बाद अयोध्या मसले की वजह से काफी तनाव हो गया था। धीरे-धीरे हवेली के सारे परिवार आलमबाग छोड़कर करीमगंज में रहने चले आए। हमारे कौम वाले लगभग सारे लोग उधर ही रहते थे। अम्मी-अब्बु अल्लाह को प्यारे हो गए थे। मेरे सारे भाई बहनों की शादी अम्मी अब्बु के रहते ही हो गई थी। एक मैं ही रह गई थी। अब्बु के मरने के बाद मेरे सारे भाई अलग-अलग रहने लगे। किसी भी भाई ने मुझे अपने साथ रहने तक नहीं दिया। मेरी शादी नहीं हो पाई। मैं अकेली इधर से उधर भटकती रहती पर पापी पेट कहां मानता। मैं लोगों के घरों में बर्तन मांज कर अपना गुजारा करने लगी थी। एक छूटता तो दूसरे जगह जाती। समय मिलने पर मंडी में सब्जी बेचती। अकेली लड़की लोगों के लिए मौके की तरह होती है। लोगों की फब्तियां और ताने सुनते समय गुजर रहा था। ऐसे ही जिन्दगी बीतती गई और चालीस साल गुजर गए''।

''अचानक एक दिन तुम्हारे चाचा के लड़के डब्बू भईया पर मेरी नजर पड़ी। वो अपनी पत्नी के साथ अपनी कार में थे। शायद मंडी में सब्जियां खरीद रहे थे। मैं दौड़ी-दौड़ी उनके पास पहुंची। मेरे गंदे कपड़े देखकर तुम्हारी भाभी ने गन्दा सा मुंह बनाया और डब्बू भईया को खींचते हुए आगे बढ़ गई। मैं फिर भी पीछे-पीछे उनके साथ चलते हुए उनसे यही पूछती रही - ''डब्बू भईया! समीर भईया कहां हैं, उनका पता दो ना''। काफी दूर तक चलने के बाद शायद उन्हें मुझ पर दया आ गई और उन्होंने इतना ही बताया कि तुम अब पुणे में रहते हो। एक छोटी सी पर्ची पर तुम्हारा पता लिखकर मुझे दे दिया''।

''मैंने रेलवे स्टेशन जाकर पुणे का किराया पता किया और उसे जोड़ने में लग गई। करीब छ: महीने हुए मैं रेल पकड़ कर पुणे आ गई पर मेरी बदकिस्मती से पते की वो पर्ची जो डब्बू भईया ने दी थी वो कहीं खो गई। मैं पुणे आ तो गई थी पर कोई जानने वाला तो था नहीं। पेट तो पालना ही था। जहां काम मांगने जाती वहां लोग गन्दी नज़रों से देखते। कोई और चारा भी न था, सो इस पापी पेट ने भिखारिन बना दिया। यहां-वहां भीख मांगकर गुजारा करने लगी। सिग्नल पर, चौराहे पर, मुहल्लों में जहां जगह मिलती भीख मांग कर गुजारा कर रही थी। जहां जगह मिलती वहां रात सर छुपा लेती। अचानक एक दिन सिग्नल पर एक गाड़ी रुकी और उसमें बैठा शख्स जाना पहचाना सा लगा। फिर गाड़ी आगे बढ़ गई। मेरा दिल कह रहा था ये मेरे समीर भईया ही हैं। फिर मैं उसी जगह पर अधिकतर समय बिताती कि कभी न कभी तो तुम दिखोगे। अल्लाह का शुक्र रहा कि ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ा। तुम फिर एक बार उसी जगह पर दिखे। मैं तुम्हें पुकारती हुई तुम्हारी गाड़ी के पीछे दौड़ पड़ी पर भला कैसे पकड़ पाती। फिर से उसी जगह तुम्हारा इंतज़ार करने लगी''।

''मेरी किस्मत अच्छी थी तुम फिर दिखे। इस बार तुम हाथों में बैग लिए पैदल ही चले जा रहे थे। मैं तुम्हारे पीछे चल पड़ी। थोड़ी ही दूर चलकर अगले चौराहे से दायें मुड़कर तीसरा घर ही तुम्हारा था। गेट पर एक मुच्छड़ दरवान तैनात था तो मैं अन्दर जाने की हिम्मत न कर सकी। मैंने सोचा अब तुम्हें और तुम्हारा घर देख ही लिया है तो कभी तो मिलोगे। करीब एक महीने मैं इसी मुहल्ले में और इसके आसपास घूमती रहती कि तुम अगली बार दिखोगे। आज मेरी किस्मत अच्छी थी कि तुम मिल भी गए और तुमने मुझे पहचान भी लिया''।

भईया मैंने तो अपनी रामकहानी आपको सुना दी और तुम भईया, अकेले भाभी बच्चे सब कहां हैं?

''कुछ नहीं रे! सब अपनी-अपनी जगह मस्त हैं। मैं ही बेवकूफ ठहरा। मैं नये जमाने के हिसाब से एडजस्ट नहीं कर पाया इसलिए अकेला रह गया और आज इस घर में हूं। कभी मौका मिला तो सब बताऊंगा। तू अब चिन्ता न कर। तू अब अपने भईया के घर आ गई है''।

इतने में रामसिंह दरवान उधर आया और कड़कती आवाज में बोला ''ऐ बुढ़िया तू अभी तक यहां क्या कर रही है? दिखता नहीं साहब की तबीयत खराब है और तू साहब को बातों में उलझाकर आराम भी नहीं करने दे रही''।

समीर जो अब तक बिरकिसिया की बातों में गुम अपने बचपन से लेकर अभी तक की यादों के सफर में गोते लगा रहा था, उसे लग रहा था बरसों बाद किसी अपने से मिल रहा है, रामसिंह की कड़कदार आवाज सुनकर चौंक कर अतीत से वर्तमान में लौट आया था। उसे अच्छा नहीं लगा रामसिंह का यूं बीच में टपकना पर रामसिंह भी उस घर का बड़ा पुराना आदमी था। समीर उसकी इज्जत भी करता था सो उसने सिर्फ इतना ही कहा ''कोई बात नहीं रामसिंह, तुम जाओ। रामू काका को भेज दो''।

थोड़ी ही देर में रामू काका दौड़े-दौड़े आये। ''हां मालिक, आपने बुलाया''।

''हां रामू काका, आओ'' और समीर रामू काका से कहने लगा ''रामू काका, यह बिरकिसिया है। अब यहीं रहेगी। इसके रहने का इंतजाम कर दीजिए। अब यह भी हमारे घर की सदस्य हैं''।

रामू काका के मुंह से निकला ''मगर साहब, यहां तो पहले से ही इतने नौकर चाकर हैं और नौकर की क्या जरूरत है''।

''रामू काका'' समीर ने गम्भीर लहजे में कहा ''बिरकिसिया नौकर की तरह नहीं रहेगी। मेरी छोटी बहन है। आगे से सोच समझ कर बोलिएगा। आगे से घर की सब व्यवस्था यही देखेगी। घर की सब जिम्मेदारी अब यही देखेगी। आप यह सब बात घर के सब लोगों को समझा दें और हां, मुझे कोई शिक़ायत सुनने को नहीं मिलनी चाहिए कि किसी ने बिरकिसिया के साथ बेअदबी की है''।

बिरकिसिया तो अपने समीर भईया के कदमों से लिपट गई। उसके आंसू थमने का नाम ही नहीं ले रहे थे। उसके मुंह से इतना ही निकला ''भईया, मैं तुम्हारे अहसान का बदला इस जन्म में कैसे चुका पाऊंगी''।

''अरी पगली, इसमें अहसान कैसा? ये तो मेरा पिछले जन्म का कर्ज है जिसे चुकाने का मौका मिल रहा है और आगे से यह सब बात मत कहना। जो भी है सब पर तुम्हारा भी हक है''।

''आज से यह तुम्हारा भी घर है। और मुझे भी तो मेरी बहन मिल गई।''

और बिरकिसिया, वो तो बस ऊपर आसमान को देख रही थी और सोच रही थी, ''लोग कहते हैं तू कहीं और रहता है

पर सच तो यह है कि तुम यहीं हम सबके बीच में रहता है। हम ही बदकिस्मत हैं जो तुझे पहचान नहीं पाते।''

बिरकिसिया यह नहीं समझ पा रही थी कि आखिर ऐसी क्या बात थी कि सब कुछ होते हुए भी समीर भईया अकेले थे। धीरे-धीरे घर के नौकर चाकर सब उसकी इज्जत करने लगे थे। बिरकिसिया भी समीर भईया का पूरा ध्यान रखती थी बल्कि उसके आ जाने से रामू काका का काम आसान हो गया था। अब बिरकिसिया अपने सामने अपने भईया को खाना खिलाती, उसकी दवाईयां समय पर देती। उसके कपड़ों का ध्यान रखती। रात में उसे दवा देकर उसके सर की मालिश करती और पैर दबाती। जब समीर सो जाता तभी वह उसके कमरे का दरवाजा भिड़ाकर अपने कमरे में जाती। इतना सब कुछ होने के बाद भी बिरकिसिया समझती थी कि उसके समीर भईया अन्दर से बिल्कुल अकेले हैं। कुछ तो था जिसने समीर भईया को बिल्कुल अकेला कर रखा था। इस रहस्य को जानने के लिए वह अन्दर ही अन्दर बेचैन हो रही थी। समीर से पूछने पर तो वह कुछ बताता नहीं बल्कि टाल जाता या फिर उसे बताना उचित न समझता हो। रामू काका उस घर में सबसे पुराने थे, उसने तय किया रामू काका से ही सब पूछेगी, उन्हें जरूर सब पता होगा। रामू काका बिरकिसिया को बेटी की तरह मानने लगे थे और बिटिया कहके पुकारते भी थे। वह भी उसे काका पुकारती थी।

''अरे बिटिया, कुछ नहीं बस अपनी-अपनी समझ की बात होती है। वरना तो जिन्दगी सबकी कट ही जाती है। इस घर में खुशियों की कोई कमी कभी न थी। साहब हों या मेमसाब कभी भी किसी ने हम लोगों को नौकर नहीं समझा। बहुत अच्छे संस्कार दिये थे शान्ति भाभी ने समीर साहब को। सुमित बबुआ के होने के बाद इस घर में मानो खुशियों की बरसात ही होने लगी थी। बबुआ भी हम सब की बहुत इज्जत करते रहे। देखते-देखते सुमित बबुआ के कालेज की पढ़ाई खत्म हो गई और उनको आगे की पढ़ाई के लिए विदेश जाना पड़ा। वहां पढ़ाई के बाद उनकी नौकरी भी वहीं लग गई। फिर वहीं शादी भी कर ली। शादी के बाद सुमित बिटवा अपनी बहु को लेकर यहां आए थे। समस्या यहीं से शुरू हुई। जाते समय सुमित अपने मम्मी-पापा को अपने साथ ले जाना चाहते थे पर समीर बाबू हम सबको और इस घर को छोड़कर नहीं जाना चाहते थे। अंजली बिटिया ने भी समीर बाबू को बहुत समझाया कि इस घर को बेचकर सब लोग इकट्ठे बेटे के साथ अमेरिका चलते हैं पर समीर बाबू इस घर को न तो बेचने को तैयार थे न ही इस जगह को छोड़कर अमेरिका जाना चाहते थे। अंत में अंजली बिटिया बेटे के मोह के आगे मजबूर हो गई। उसे समीर व इस घर को छोड़कर अमेरिका जाना पड़ा। मगर साहब सबके साथ रहना चाहते थे। साहब बिल्कुल तन्हा हो गए। धीरे-धीरे साहब ने सबसे बोलना चालना बहुत कम कर दिया। अपने कमरे में ही लगभग कैद से हो गए। कहीं आना-जाना लगभग बन्द सा ही कर दिया था। मगर बिटिया तुम्हारे आने के बाद साहब के स्वास्थ्य में भी सुधार हो रहा है। साहब खुश भी रहने लगे हैं। खान-पान पर भी ध्यान देने लगे हैं। न जाने तुमने क्या जादू किया है। बेटा, एक बात पुछूं? तुम्हारे पिता की उम्र का हूं। उम्मीद है बुरा न मानोगी और सच बताओगी, अब तुम्हारे आने से सब ठीक हो रहा है तो मैं भी चैन से मर सकूंगा लेकिन तुम हो कौन?''।

''काका, एक तरफ तो बेटी कहते हो दूसरी ओर मरने की बात करते हो। खबरदार जो आगे से कभी मरने की बात की। मैं कौन हूं इसमें कोई बड़ा रहस्य नहीं है। काका मैं हूं ''बिरकिसिया'' समीर भईया की बहन'' उसने बचपन से लेकर अब तक की सारी कहानी काका को सुना डाली। 'अब खुश हो?'

''मगर बेटा, साहब हिन्दू, तुम मुसलमान''। कुछ था जो काका के मन में कुलबुला रहा था।

''हां, काका इसी चीज ने तो हम अपनों को बांट रखा है। काका, बचपन में यदि मुझे सबसे ज्यादा भरोसा था तो वो थे समीर भईया। मेरे खुद के सात भाईयों के होने के बाद भी जब सब भाईयों ने साथ छोड़ दिया तो मुझे बस एक ही शख्स याद आया और वो थे मेरे समीर भईया। काका, बचपन में मुझे जब कुछ भी तकलीफ़ होती तो मैं दौड़ी-दौड़ी समीर भईया के पास चली जाती। उस समय तो मुझे मालूम भी नहीं था हिन्दू क्या होता है और मुस्लिम क्या? काका अब तुम ही बताओ क्या एक हिन्दू और मुसलमान भाई-बहन नहीं हो सकते''?

काका ने एक लम्बी सांस ली। उन्होंने गुलामी देखी थी। आजादी की लड़ाई देखी थी, दंगे देखे थे, अनायास ही दंगे में मारी गई उनकी बहन याद आ गई। उनकी आंखों से अविरल आंसू बह रहे थे जो रूकने का नाम ही नहीं ले रहे थे।

''अरे काका, अब शान्त भी हो जाओ। ऐसा क्या बोल दिया मैंने कि रोते ही जा रहे हो।''

''नहीं रे, बस यही सोच रहा हूं कि जरूर कोई पिछले जन्म का रिश्ता है तेरा साहब के साथ। इस जन्म में जिनका संबंध साहब के साथ था वो तो शायद उन्हें समझ भी न सके। बेटे को मौका मिला था मां और पिता के बीच चुनने का, उसने मां को चुना। अंजली बिटिया के सामने मौका था बेटे और पति के बीच चुनने का, उसने बेटे को चुना। साहब के सामने मौका था विदेश में अपने परिवार के साथ आनन्द से रहने का या फिर सब छोड़कर यहां इसी घर में हम सब के बीच में रहने का। सब लोगों ने अपनी-अपनी सुविधा के अनुसार चुनाव किया। साहब ने दिल पर पत्थर रखकर सब छोड़कर यहीं रहने का निर्णय लिया। वो हमेशा कहते हैं, काका मेरा जो भी है बहुतों का है। बहुतों का बहुत कर्ज है मुझ पर। मेरे पास तो कुछ भी न था, सबने मिलकर इतना कुछ दिया। इन सबका कर्ज चुकाये बिना मैं कैसे सब छोड़कर यहां से चला जाऊं। काका, अब तो कुछ सांसें बची हैं, आप लोगों के बीच में ही अंतिम सांस निकले बस यही तमन्ना है। बिटिया ये तो कुछ भी नहीं, उन्होंने तो एक ट्रस्ट बनाकर अपना सब कुछ ट्रस्ट के नाम कर दिया है जो सिर्फ हमारे तुम्हारे जैसे जरुरतमन्दों के लिए काम करती है। बिटिया, समीर साहब इंसान नहीं भगवान हैं। यदि कहीं भगवान होता होगा तो शायद समीर साहब जैसा ही होता होगा। ईश्वर साहब को लम्बी उम्र दे''।

बिरकिसिया तो बस रोते ही जा रही थी; समीर के साथ अपने रिश्ते की सार्थकता समझते हुए।

***

बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह

क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल

दिनांक 01 दिसंबर, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल द्वारा बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल में बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में एम.ए. (हिंदी) 2021-2022 (अंतिम वर्ष) में सर्वाधिक अंक अर्जित करने वाले 02 विद्यार्थियों को बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के अंतर्गत सम्मानित किया गया। यह सम्मान क्षेत्रीय प्रमुख श्री सुरेश कुमार तलरेजा द्वारा प्रदान किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, इंदौर

दिनांक 20 अक्तूबर, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, इंदौर द्वारा इंदौर क्षेत्र के उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री आशीष सोनी की अध्यक्षता में राजभाषा अभिप्रेरणा कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इस अवसर पर बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के अंतर्गत विद्यार्थियों को पुरस्कार राशि प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में क्षेत्रीय कार्यालय, इंदौर के अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

अंचल कार्यालय, कोलकाता

दिनांक 18 नवंबर, 2022 को मणिपुर विश्वविद्यालय में बड़ौदा मेधावी छात्र सम्मान योजना के तहत वित्तीय वर्ष 2021-2022 में एम.ए.(हिंदी) में शीर्ष स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार राशि प्रदान कर सम्मानित किया गया. इस कार्यक्रम में बैंक के मणिपुर विश्वविद्यालय के शाखा प्रमुख एवं हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष उपस्थित रहे.

वार्षिक राजभाषा समारोह एवं हास्य कवि सम्मेलन –2022

प्रधान कार्यालय, बड़ौदा द्वारा दिनांक 23 नवंबर, 2022 को वार्षिक राजभाषा समारोह एवं हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में वरिष्ठ गुजराती साहित्यकार पद्मश्री सितांशु यशश्चंद्र, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। मुख्य महाप्रबंधक (परिचालन) श्री दिनेश पंत ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस अवसर पर मुख्य महाप्रबंधक (केंद्रीय आंतरिक लेखा परीक्षा) श्री अजय कुमार खोसला, मुख्य महाप्रबंधक (वित्तीय समावेशन) श्रीमती अर्चना पाण्डेय तथा प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में बैंक की महत्त्वाकांक्षी योजना 'बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान' के तहत महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय में वर्ष 2021–22 में एम.ए. हिंदी के मेधावी विद्यार्थियों को प्रशस्ति–फलक से सम्मानित किया गया। तदुपरांत बड़ौदा राजभाषा पुरस्कार वर्ष 2021–22 के विजेता विभागों/ वर्टिकल को शील्ड प्रदान कर पुरस्कृत किया गया। साथ ही हिंदी दिवस 2022 के अवसर पर प्रधान कार्यालय स्तर पर सभी संवर्गों हेतु आयोजित विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। कार्यक्रम के दूसरे सत्र में हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें प्रसिद्ध हास्य कवि श्री राजेंद्र मालवीय 'आलसी', श्री रसिक गुप्ता, डॉ. रजनीकांत मिश्र एवं श्री संजय बंसल ने अपनी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का समन्वय एवं संचालन सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री पुनीत कुमार मिश्र ने किया।

कार्यशाला–अभिप्रेरणा कार्यक्रम

अंचल कार्यालय एवं बड़ौदा अकादमी, जयपुर

अंचल कार्यालय, नई दिल्ली

अंचल कार्यालय, हैदराबाद

अंचल एवं क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल

क्षेत्रीय कार्यालय, नाशिक

क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, उडुपी II

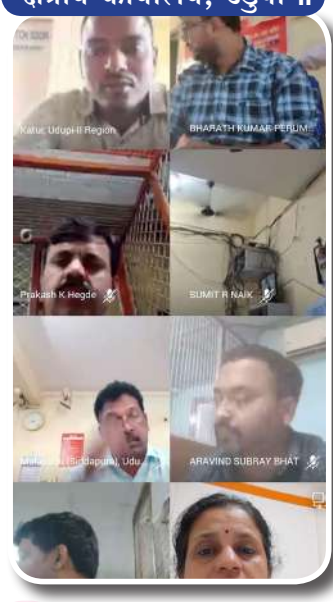

क्षेत्रीय कार्यालय, उडुपी

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई मेट्रो दक्षिण

अंचल कार्यालय, मुंबई

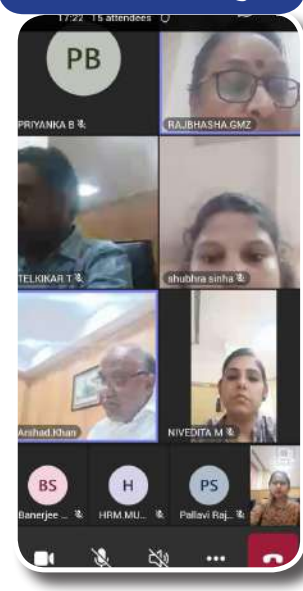

कार्यशाला–अभिप्रेरणा कार्यक्रम

क्षेत्रीय कार्यालय, वाराणसी II

क्षेत्रीय कार्यालय, जलगांव

क्षेत्रीय कार्यालय, कटक

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु–उत्तर

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु–दक्षिण

क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, रांची

क्षेत्रीय कार्यालय, बलसाड

क्षेत्रीय कार्यालय, तेलंगाना दक्षिण

आलेख

व्यवसाय विकास में क्षेत्रीय भाषाओं एवं हिंदी की भूमिका

अनामिका प्रसाद
मुख्य प्रबंधक (मा.सं.प्र)
कोलकाता महानगरीय क्षेत्र –II,

किसी भी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था का आधार, उस देश की बैंकिंग व्यवस्था होती है। आज संपूर्ण देश में बैंकिंग कारोबार का स्वरुप बदल रहा है तथा हर ग्राहक विशिष्ट और शीघ्र सेवा चाहता है। सामाजिक परिवर्तनों के साथ–साथ आवश्यकताएं, आकांक्षाएं और अभिलाषाएं भी परिवर्तित हो रही हैं, जिससे नव–चेतना एवं नव–उमंग का प्रादुर्भाव हो रहा है। इन सबके परिणामस्वरूप बैंकिंग कारोबार में भी तदनुसार परिवर्तन हो रहा है और इन परिवर्तनों से बैंकों के बीच एक दूसरे से बेहतर होने की होड़ सी लग गई है। बैंकिग के नए रूप में आकर्षक बैंकिंग सेवाएं, बेहतर शाखा परिसर, रोमांचकारी ग्राहक सेवाओं ने बैंकिंग सेवा की विश्वसनीयता में वृद्धि की है तथा 24 घंटे की बैंकिंग सेवा को साकार किया है। एक अत्यधिक तेज गति के साथ गतिशील बैंकिंग कारोबार में प्रतिदिन अपने उत्पादों और सेवाओं में निरंतर सुधार हो रहा है।

ग्रामीण क्षेत्र के लोगों के जीवन स्तर को उठाने में बैंकों की अहम भूमिका होती है और प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र, अन्य ऋण, सामाजिक बैंकिंग के ही रुप हैं। आज बैंक अपने कुल ऋण का लगभग एक बड़ा हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों में वितरित करता है। गांव के किसान, मजदूर और व्यापारी, सभी क्षेत्रीय भाषा अथवा हिंदी को अच्छी तरह से समझते हैं और बोलते हैं। ऐसे में बैंकों द्वारा अपनी कारोबारी भाषा के रुप में हिंदी अथवा क्षेत्रीय भाषा को व्यवहार में लाना एक राष्ट्रीय दायित्व एवं राष्ट्र की अपेक्षा भी बन गई है।

यदि बैंककर्मियों की भाषा के प्रति रूझान का विश्लेषण किया जाए तो अभी भी हम लिखित रूप की तुलना में बोलचाल के रूप में क्षेत्रीय भाषा अथवा हिंदी का ज्यादा प्रयोग करते हैं। समय–समय पर बैंकों द्वारा बैंक कर्मचारियों को दिए जाने वाले बैंकिंग प्रशिक्षण में भी उपयोग में लाई जाने वाली भाषा में यह स्वतंत्रता रहती है कि हम जब चाहें हिंदी और क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग करें।

मौजूदा समय में टीवी, रेडियो, सोशल मीडिया आदि ने हिंदी तथा क्षेत्रीय भाषाओं को प्रोत्साहित करने तथा आकर्षण प्रदान करने में प्रमुख भूमिका निभाई है। हमारे देश में आज भी अधिकांश ग्राहक हिंदी अथवा क्षेत्रीय भाषाओं में कामकाज और बातचीत करने में सहज अनुभव करते हैं। मेरा मानना है की बैंक में व्यवसाय, ग्राहकों की ही भाषा में होना चाहिए। आज के समय मे बैंकों द्वारा एटीएम की पर्ची, खाते की विवरणियां, आनलाइन बैंकिंग सेवा, पासबुक में प्रविष्टियां, आदि कई भाषाओं में उपलब्ध करायी जा रही हैं।

बैंकिंग व्यवसाय संबंधी संवाद के लिए हिंदी या क्षेत्रीय भाषाएं ग्राहकों से सामाजिक सम्पर्क बनाने में सहायक होती हैं। यह बैंकों का ग्राहकों के साथ दीर्घकालिक व्यवसायिक संबंध बनाने में काफी लाभदायी होता है। अपनी भाषा में सम्पर्क करने से विचारों का आदान प्रदान सरल हो जाता है और ग्राहक अपनी आवश्यकता अनुसार अपनी बातों एवं जरूरतों को हमारे सामने रख सकते हैं तथा विभिन्न बैंकिंग उत्पादों से सम्बन्धित सेवा प्राप्त करने में हो रही दिक्कत से हमें अवगत करा सकते हैं। इसके निवारण के लिए यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि ग्राहक बेहतर ढंग से यह समझ सकें कि बैंकों का उद्देश्य उन्हें सुविधा प्रदान करना है।

बैंक का सीधा संबंध देश की जनता से होता है। बैंकिंग जैसे सेवा क्षेत्र में जनभाषा की उपयोगिता हमेशा से रही है। बैंकिंग सेवाएं देश के गांव–गांव व दूर–दराज के क्षेत्र की जनता तक पहुंच रही हैं और उनके द्वारा समझने व बोलने

वाली भाषा क्षेत्रीय भाषा या हिंदी ही होती है। बैंकों के अखिल भारतीय स्वरुप एवं देश के सर्वाधिक पिछड़े एवं वंचित तबके को बैंकिंग सुविधाएं एवं वित्तीय सहायता प्रदान कर उन्हें आर्थिक विकास की प्रगति चक्र से जोड़ने का संकल्प भला हिंदी अथवा क्षेत्रीय भाषा के बगैर कैसे चल सकता है।

बैंकिंग व्यवसाय के लिए अपने ग्राहकों को समझना एवं उनसे सम्बन्धों में सरलता का होना अतिआवश्यक है। विचारों के आदान-प्रदान के लिये ग्राहक तभी अनुकूल महसूस कर सकते हैं जब उनसे ग्राहक की भाषा में वार्तालाप किया जाए। हिंदी या क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग, ग्राहकों को अपने मनचाहे बैंकिंग उत्पादों को चयन करने का शक्तिशाली माध्यम है।

हिंदी या क्षेत्रीय भाषा संचार की बाधाओं को दूर करती हैं एवं प्रभावी रूप से ग्राहक के मन में एक छाप छोड़ती हैं। सहज भाषा के प्रयोग से हम ग्राहक के सामने अपने विभिन्न बैंकिंग उत्पादों को अधिक तार्किक एवं स्पष्ट रूप से व्यक्त कर पाते हैं जो ग्राहकों को सुखद अनुभव प्रदान करता है।

जब हम ग्राहकों से हिंदी या क्षेत्रीय भाषा में सम्पर्क करते हैं तो ग्राहक हमसे जल्दी एवं अच्छी तरह से अपनी प्रतिक्रिया प्रदर्शित कर सकते हैं। ग्राहक से प्राप्त प्रतिक्रिया पर उपयुक्त कार्रवाई करने पर अधिक से अधिक शिकायतें स्वंय समाप्त हो जाती हैं। जिससे कम से कम समय में हम ग्राहक की बैंकिंग उत्पादों के प्रति सोच को समझ सकते हैं एवं उत्पादों में मूल्यवर्धन कर सकते हैं।

बैंकिंग व्यवसाय का विकास तभी सम्भव है, जब विपणन सम्बंधी योजना प्रभावशाली ढंग से बनायी जाए। हम अपने विपणन संबंधी योजना में अपने भावी ग्राहकों को बैठक के माध्यम से सम्मिलित कर सकते हैं। इस बैठक में हम बैंक के विभिन्न उत्पादों की चर्चा हिंदी या क्षेत्रीय भाषा में कर सकते हैं एवं अपने ग्राहकों को यह बता सकते हैं कि इन उत्पादों के जुड़ाव से उन्हें क्या लाभ मिलेगा एवं कितने कम समय में हम उन्हें उनके मनचाहे बैंकिंग उत्पाद उपलब्ध करा सकते हैं। प्रत्येक बैंक एक निर्धारित राशि विज्ञापन पर खर्च कर रहा है, जिसमें हिंदी और राज्यविशेष की भाषाओं को प्रमुखता दी जा रही है।

किसी भी बैंकिंग व्यवसाय के लिए, यह सुनिश्चित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है, कि ग्राहक की जरुरत क्या है एवं इन जरुरतों को जानने के लिए सेवा प्रदान करने वाले बैंककर्मी को सर्वोत्कृष्ट कौशल है या नहीं है। ग्राहक से सहज भाषा में हंसमुख वार्तालाप करने से ग्राहकों में बैंक के प्रति विश्वास उत्पन्न होता है तथा वह ज्यादा से ज्यादा बैंकिंग व्यवसाय से जुड़ने की कोशिश करते हैं जोकि बैंकिंग व्यापार की बढ़ोतरी में सहयोगी एवं सार्थक सिद्ध होता है।

बैंकिंग व्यवसाय को बढ़ाने के लिए एवं अपने व्यापार में लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए व्यवसाय से अधिक रिश्तों पर ध्यान केन्द्रित करना अतिआवश्यक है। रिश्तों पर ध्यान केन्द्रित करना तभी संभव है जब हम ग्राहकों से उनकी भाषा में वार्तालाप करें। भावी ग्राहकों से दिन प्रतिदिन संवाद करने से उन्हें पता चलता है कि ग्राहक बैंक के लिये कितने महत्वपूर्ण हैं। क्षेत्रीय भाषा के प्रयोग से आसपास के ग्राहकों का उस क्षेत्र से विशेष जुड़ाव होता है।

बैंकिंग व्यवसाय के लिए ग्राहक जब किसी प्रकार का असंतोष या शिकायत की तरफ ध्यानाकर्षण करते हैं तब हिंदी या क्षेत्रीय भाषा के प्रयोग से समस्याओं का निवारण प्रभावी ढंग से किया जा सकता है। किसी भी शिकायत का निदान तभी सम्भव है जब संवाद सहज भाषा में हो और नाराज या निराश ग्राहक को बेहतर ढंग से सुना जाय एवं हल निकाला जाय। जब पूर्ण धैर्य के साथ हम ग्राहक के समस्या का निवारण करते हैं तो हमेशा सकारात्मक परिणाम आते हैं जिससे 'ग्राहक-संतुष्टि' होती है जो बैंको का मुख्य उद्देश्य है, की पूर्ति होती है । इससे प्रभावित होकर ग्राहक नए बैंकिंग उत्पादों से जुड़ते हैं और बैंकिंग व्यवसाय में अच्छे परिणाम आते हैं।

विभिन्न तथ्यों से यह पूर्णतः स्पष्ट है कि बैंकिंग व्यवसाय के लिए जहां व्यापार आवश्यक है वहीं व्यवसाय को बढ़ाने के लिए 'ग्राहक-संतुष्टि' सबसे महत्वपूर्ण है और 'ग्राहक-संतुष्टि' तभी संभव है जब संचार की भाषा ग्राहक की अपनी भाषा हो। हिंदी और क्षेत्रीय भाषा में संवाद, व्यापार के लिये ग्राहक एवं बैंकिंग व्यवसाय के बीच के रिश्ते की नींव है और बैंकिंग व्यवसाय को सुचारु रुप से चलाने में भाषा का प्रयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसलिए आवश्यक है कि ग्राहकों के आधार में वृद्धि और बैंकिंग व्यवसाय की लाभप्रदता बनाए रखने के लिए हिंदी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को बैंकिंग व्यवसाय में अधिकाधिक व्यवहार में लाया जाए।

अंत में कुछ पंक्तियां:-

''सरल भाषा यदि है माध्यम, विचारों का संवाद होगा सुगम''

''प्रत्येक ग्राहक होगा संतुष्ट, बैंकिंग व्यवसाय होगा उत्कृष्ट''

***

बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह

अंचल कार्यालय, कोलकाता

दिनांक 16 नवंबर, 2022 को कोलकाता विश्वविद्यालय में वित्तीय वर्ष 2021-2022 में एम.ए. (हिंदी) में शीर्ष स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को बैंक की बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी योजना के तहत पुरस्कार राशि प्रदान कर सम्मानित किया गया.

क्षेत्रीय कार्यालय, बर्द्धमान

दिनांक 23 नवंबर, 2022 को बर्द्धमान विश्वविद्यालय में मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के तहत कार्यक्रम का आयोजन किया गया तथा विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को बैंक के उत्पाद के विषय में भी जागरूक किया गया। इसके साथ ही विद्यार्थियों के लिए भाषण प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर

दिनांक 11 अक्तूबर, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर द्वारा राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज विश्वविद्यालय में वर्ष 2020-21 में आयोजित एम.ए (हिंदी) की अंतिम वर्ष की परीक्षा में मेरिट सूची में शीर्ष स्थान प्राप्त विद्यार्थियों को बैंक की बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी योजना के तहत पुरस्कार राशि प्रदान कर सम्मानित किया गया. इस अवसर पर बैंक की धरमपेठ शाखा के शाखा प्रमुख एवं सहायक महाप्रबंधक श्री संजीव कुमार वासनिक उपस्थित रहे.

क्षेत्रीय कार्यालय, सागर

दिनांक 11 अक्तूबर, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, सागर द्वारा बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के अंतर्गत डॉ. हरि सिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर के स्नातकोत्तर (हिंदी) के अंतिम वर्ष की परीक्षा में प्रावीण्य सूची में प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्तकर्ता विद्यार्थियों को उप क्षेत्रीय प्रमुख, सागर क्षेत्र श्री संतोष कुमार द्वारा सम्मानित किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल

दिनांक 03 अक्तूबर, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल द्वारा एम.ए (हिंदी) की अंतिम वर्ष की परीक्षा में सर्वाधिक अंक अर्जित करने वाले 02 विद्यार्थियों को बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के अंतर्गत सम्मानित किया गया। मेधावी विद्यार्थियों को यह सम्मान अंचल प्रमुख श्री गिरीश सी डालाकोटी द्वारा उप महाप्रबंधक (नेटवर्क) श्री विपिन कुमार गर्ग, क्षेत्रीय प्रमुख श्री सुरेश कुमार तलरेजा, विशिष्ट अतिथि के रूप में आए सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (मध्य), भोपाल श्री हरीश सिंह चौहान, महाप्रबंधक - राजभाषा (सेवानिवृत्त), बैंक ऑफ़ बड़ौदा डॉ. जवाहर कर्नावट तथा कार्यक्रम के मुख्य आकर्षण प्रसिद्ध अभिनेता व रंगकर्मी श्री राजीव वर्मा एवं प्रतिष्ठित साहित्यकार श्री राजेश जोशी की उपस्थिति में प्रदान किया गया। इस कार्यक्रम में क्षेत्रीय प्रमुख, रतलाम क्षेत्र श्री सुबोध डी. इनामदार, क्षेत्रीय प्रमुख, दुर्ग क्षेत्र श्री अरविंद काटकर, क्षेत्रीय प्रमुख, सागर क्षेत्र श्री अनंत माधव तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

देश के आर्थिक विकास में बैंकों की भूमिका

सर्वेश कुमार
व्यवसाय सहयोगी
क्षेत्रीय कार्यालय, आगरा

भारत विश्व की सभी सभ्यताओं एवं संस्कृतियों में सबसे प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति है, जिसने सम्पूर्ण मानव सभ्यता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

भारत में वैदिक काल से ही बैंकिंग व्यवस्था के प्रमाण मिलते हैं। उत्तर वैदिक काल में बढ़ते हुए व्यापार के साथ लेनदेन की व्यवस्था का भी विकास हुआ। जातक कथाओं तथा प्राचीन ग्रंथों जैसे - कौटिल्य का अर्थशास्त्र में राजव्यवस्था के साथ अर्थव्यवस्था का वर्णन मिलता है। अर्थव्यवस्था के बदलाव के साथ-साथ बैंकिंग व्यवस्था का भी विकास हुआ। औपनिवेशिक काल में अंग्रेजों द्वारा औपनिवेशकों के लाभ के लिए बैंकों की स्थापना की गयी। 1947 में आज़ादी के बाद अंग्रेजों द्वारा शोषित अर्थव्यवस्था नये रूप में भारतीयों के लिए परिभाषित होने लगी।

आजादी के बाद भारत के आर्थिक विकास में बैंकों ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। कृषि, व्यापार, निर्यात-आयात, पूंजी निर्माण, जमा, ऋण, शासकीय-कार्यक्रमों, सरकारी परियोजनाओं के क्रियान्वयन जैसे पहलुओं पर बैंकों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है, जिससे हमारे देश में आर्थिक विकास की गति तेज हुई है। बैंकों की भूमिका को हम निम्नलिखित तथ्यों के आधार पर समझ सकते हैं :-

पूंजी निर्माण – बैंकों में व्यक्तिगत और व्यापारियों द्वारा निधि जमा की जाती है, जिसका उपयोग उत्पादन संबंधी कार्यों में किया जाता है। पूंजी के निवेश से पूंजी निर्माण को बढ़ावा मिलता है। समय पर ऋण मिलने से उत्पादन में वृद्धि होती है और अर्थव्यवस्था मजबूत होती है। बैंक न केवल देश के धन का भण्डार गृह होता है अपितु आर्थिक विकास के लिए वित्तीय संसाधन उपलब्ध कराता है।

कृषि – कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ कहलाती है, जिसमें 49 प्रतिशत व्यक्तियों को रोजगार मिला हुआ है। मार्च 1985 तक बैंकों द्वारा कृषि के लिए कुल ऋण

का 15 प्रतिशत भाग दिया जाता था, बाद में यह लक्ष्य बढ़ाकर 18 प्रतिशत कर दिया गया। कृषि के लिए वाणिज्यिक बैंकों, सहकारी बैंकों, प्राथमिक कृषि सहकारी समितियों और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों ने रियायती ब्याज दर पर काफ़ी ऋण दिया है, जिसके परिणामस्वरूप कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई है।

कृषि क्षेत्र के विकास के लिए वर्तमान में किसानों के लिए बैंकों द्वारा किसान क्रेडिट कार्ड का वितरण विस्तृत रूप से किया जा रहा है जिसके माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में साहूकारी प्रथा को खत्म करने में काफी सफलता मिली है।

भारतीय कृषि मानसून पर आधारित है एवं तकनीकी कमी जैसी व्यवस्था से जुड़ी हुई है। भारतीय किसान ऋण न मिलने के कारण कृषि को आधुनिक तरीके से नहीं कर पाते हैं, जिससे उनकी उत्पादक क्षमता बढ़ नहीं पाती है। भारतीय बैंक किसानों को आधुनिक मशीनरी के लिए ऋण देते हैं ताकि किसान आधुनिक तरीके से कृषि कर सकें एवं उत्पादन क्षमता बढ़ा सकें। भूमंडलीकरण एवं विश्व व्यापार संगठन से मिलने वाली चुनौतियों से भारतीय किसान तभी लड़ पायेंगे जब वे मजबूत होंगे।

भारत के कई बैंक किसान क्लब एवं किसान मेलों का आयोजन करते हैं जिसमें किसानों को कृषि से संबंधित जानकारी के साथ उनको सामाजिक जिम्मेदारियों को निभाने के लिए विभिन्न जानकारियां उपलब्ध कराती हैं। किसानों के बच्चों की शिक्षा के लिए भी बैंक सहयोग करता है।

बैंक किसानों की फसलों का ऋण के साथ ही बीमा की सुविधा भी उपलब्ध कराता है जिससे फसल खराब होने पर किसानों को आर्थिक मदद भी मिलती है।

भारतीय कृषि मानसून पर आधारित है। सिंचाई व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए बैंक, ट्यूबेल आदि लगाने के लिए ऋण देते हैं। कृषि अनुसंधान एवं कृषि शिक्षा के लिए बैंकों का योगदान महत्वपूर्ण है।

सभी बैंकों में कृषि अधिकारियों की नियुक्ति की जाती है जो किसानों के हितों को ध्यान में रखकर कार्य करते हैं। बैंकों ने कृषि व्यवस्था को आधुनिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। कृषि से जुड़े हुए उद्योग जैसे पशुपालन, दुग्ध उद्योग, मत्स्य उद्योग के विकास में भी बैंकों का योगदान महत्वपूर्ण है।

शिक्षा – शिक्षा के क्षेत्र में बैंकों का योगदान अहम है। वैश्वीकरण के दौर में जिस तरह से शिक्षा में परिवर्तन हुआ है उसमें पूंजी की महत्ता बढ़ी है। नये-नये कोर्स बाजार की मांग के हिसाब से तैयार किये गये हैं, वह चाहे कम्प्यूटर का कोर्स हो या फिर मैनेजमेंट का कोर्स। इन सभी के लिए बैंकों से आसान एवं सब्सिडी युक्त ऋण प्रदान किया जाता है। जो समाज के कमजोर वर्गों को शिक्षा के लिए समान अवसर प्रदान करने में मदद करता है। स्कूलों की आधार संरचना के लिए भी बैंक मदद करते हैं जो भारत के समावेशी विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

वर्तमान में शिक्षा के उच्च स्तर को देखते हुए शिक्षा के खर्चों में भी काफी वृद्धि हुई है जिसको देखते हुए शिक्षा ऋण के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में बैंक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे हैं। शिक्षित व्यक्ति न केवल रहन-सहन के स्तर को ऊंचा उठाता है अपितु देश के लिए महत्वपूर्ण संसाधन होता है तथा समाज को एक नई दिशा देता है।

गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम – आज़ादी के बाद देश के आर्थिक विकास में बैंकों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है और बैंकों के राष्ट्रीयकरण के बाद आर्थिक विकास एवं गरीबी उन्मूलन में बैंकों ने अपनी भूमिका को और भी जिम्मेदारी से निभाया है। इसमें मुख्य रूप से गरीबी उन्मूलन की सरकारी योजनाओं जैसे प्रधानमंत्री रोजगार योजना, ग्रामीण विकास कार्यक्रम, स्वरोजगार के लिए ग्रामीण युवकों को प्रशिक्षण एवं मुद्रा ऋण जैसे कार्यक्रमों से गरीबी कम हुई है तथा सामाजिक आर्थिक स्थिति में बदलाव आया है। इन योजनाओं का क्रियान्वयन बैंकों के माध्यम से हुआ है, जिनका लाभ समाज के अंतिम छोर तक पहुंचा है। वर्तमान में पेंशन, छात्रवृत्ति, महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी कार्यक्रम आदि का भुगतान बैंकों के माध्यम से होता है।

आयात एवं निर्यात – आयात एवं निर्यात बढ़ाने के लिए बैंकों द्वारा ऋण दिया जा रहा है, इसमें बैंक निवेश बैंकर और सलाहकार के रूप में एक निधि प्रबन्धक की भूमिका निभाता है। निर्यात को बढ़ावा देने के लिए बैंकों में निर्यात प्रोत्साहन प्रकोष्ठों की स्थापना की गयी है, जिनके द्वारा देश के अंदर और बाहर के ग्राहकों की आर्थिक स्थिति और सामान्य व्यापार सम्बंधी जानकारी प्रदान की जाती है।

आधारभूत संरचना – आधारभूत संरचना विकास का महत्वपूर्ण भाग होती है। गांव और कस्बों में सम्पर्क करने के

लिए सड़कों का जाल बिछाया गया है। बैंकों का योगदान केवल ग्रामीण और कुटीर उद्योगों की स्थापना में ही नहीं रहा है बल्कि बेहतर निवेश से मध्यम और वृहद् उद्योगों की स्थापना भी हुई है।

सरकार द्वारा चलायी जा रही विभिन्न सरकारी परियोजनाओं के लिए राशि जुटाने में भी बैंक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे हैं।

सूचना एवं प्रौद्यौगिकी – प्रौद्योगिकी के उपयोग से उत्पादकता को बढ़ाना आर्थिक विकास का महत्वपूर्ण मापदण्ड होता है। बैंकिंग पद्धति में नई तकनीक के उपयोग से ऋण, निधि अंतरण बहुत आसान हो गया है – क्रेडिट एवं डेबिट कार्ड, आरटीजीएस, नेफ्ट, मोबाइल बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग से निधि का अंतरण न केवल निश्चित और सुविधाजनक हुआ है, अपितु कार्यालयीन अवधि (पूर्वाह्न 10.00 बजे से अपराह्न 5.00 बजे तक) की अनिवार्यता को समाप्त कर दिया है, जिसके कारण शाखाओं में ग्राहकों की प्रत्यक्ष उपस्थिति की अनिवार्यता को समाप्त कर दिया गया है।

व्यापार और उद्योग – किसी भी देश के विकास में व्यापार एवं उद्योग महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। व्यापार एवं उद्योग की स्थापना एवं शुरु करने के लिए आवश्यक पूंजी की मांग को पूरा करने के लिए बैंक विभिन्न प्रकार की अल्पावधि, मध्यावधि एवं दीर्घकालीन ऋण स्कीमों के माध्यम से महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

महिला सशक्तिकरण एवं विकास में योगदान :– भारतीय बैंकों ने समाज को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है। महिला विकास के बिना कोई भी समाज विकास नहीं कर सकता है। इसी उद्देश्यों को ध्यान में रखकर महिला विकास बैंक की स्थापना की गयी जो विशेषकर महिला विकास पर ही केंद्रित है। इसके अलावा अन्य परियोजना जो महिला विकास के लिए चल रही हैं, उनको गति देने में बैंक महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

स्वयं सहायता समूह द्वारा महिलाओं का विकास एवं उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की गई है। स्वयं सहायता समूह द्वारा महिलाओं को आसानी से ऋण प्राप्त हो जाता है और आत्मनिर्भर होने के लिए अपना रोजगार शुरू करने के लिए भी बैंक ऋण की विभिन्न योजनाओं के द्वारा अभूतपूर्व योगदान दे रहे हैं।

***

कार्यशाला–अभिप्रेरणा कार्यक्रम

अंचल कार्यालय, बड़ौदा

अंचल कार्यालय, अहमदाबाद

क्षेत्रीय कार्यालय, भरूच

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई मेट्रो पश्चिम

प्रतियोगिताएं

अंचल कार्यालय, पुणे द्वारा 'हिंदी पीपीटी प्रतियोगिता'

दिनांक 01 अक्तूबर, 2022 को अंचल कार्यालय, पुणे के सभी विभागों के लिए 'हिंदी पीपीटी प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अंचल कार्यालय, पुणे के महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्रीमती मिनी टी. एम., उप अंचल प्रमुख श्री चंद्रमणि त्रिपाठी, उप महाप्रबंधक (नेटवर्क) श्री एम अनिल एवं सभी विभाग प्रमुख उपस्थित थे।

फतेहपुर क्षेत्र द्वारा 'बॉब सुलेख प्रतियोगिता'

दिनांक 14 नवंबर, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, फतेहपुर एवं पटेल नगर शाखा के संयुक्त तत्वावधान में प्राथमिक विद्यालय रेवाड़ी बुजुर्ग में 'बॉब सुलेख प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया।

अमरावती क्षेत्र द्वारा 'हिंदी ईमेल भेजिए प्रतियोगिता'

दिनांक 14 नवंबर, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, अमरावती द्वारा सितंबर 2022 तिमाही में शाखाओं एवं विभागों के लिए 'हिंदी ईमेल भेजिए प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया जिसमें क्षेत्रीय कार्यालय के आयोजना विभाग ने सर्वाधिक ईमेल भेजकर प्रथम स्थान अर्जित किया।

अंचल कार्यालय, हैदराबाद द्वारा 'बॉब हिंदी प्रतियोगिता'

दिनांक 2 नवंबर, 2022 को अंचल कार्यालय, हैदराबाद द्वारा सरकारी प्राथमिक स्कूल और सरकारी माध्यमिक स्कूल में 'बॉब हिंदी प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। इसमें लगभग 220 बच्चों ने भाग लिया।

भोपाल क्षेत्र द्वारा 'किताबें रहेंगी तो सपने रहेंगे' विषय पर व्याख्यान प्रतियोगिता

दिनांक 01 दिसंबर 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल द्वारा बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल में विद्यार्थियों के लिए 'किताबें रहेंगी तो सपने रहेंगे' विषय पर एक व्याख्यान प्रतियोगिता आयोजित की गई।

पुणे जिला क्षेत्र द्वारा 'हिंदी निबंध प्रतियोगिता'

दिनांक 17 नवंबर, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, पुणे जिला की हड़पसर शाखा द्वारा श्रीमती दत्तात्रय कोतवाल माध्यमिक विद्यालय में विद्यार्थियों के लिए 'आज के युग में बैंक की उपयोगिता' विषय पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

कोलकाता मेट्रो 2 क्षेत्र द्वारा 'चित्रकला एवं काव्य पाठ प्रतियोगिता'

दिनांक 11 नवंबर, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता मेट्रो-2 की सामंती शाखा द्वारा स्थानीय नयाचक साधुचरण जूनियर बेसिक स्कूल में विद्यार्थियों के लिए 'चित्रकला एवं काव्य पाठ प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया एवं विजेता प्रतिभागियों को सामंती शाखा के शाखा प्रमुख श्री अरीजीत पॉल द्वारा प्रशस्ति पत्र एवं पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया।

प्रतियोगिताएं

जयपुर क्षेत्र द्वारा 'वाद-विवाद प्रतियोगिता'

क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर द्वारा राष्ट्रीय कृषि विपणन संस्थान, जयपुर के विद्यार्थियों के बीच 'वाद-विवाद प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में विजेता रहे विद्यार्थियों को उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री रजनीकांत कुम्पावत द्वारा पुरस्कृत किया गया।

बर्द्धमान क्षेत्र द्वारा 'निबंध तथा भाषण प्रतियोगिता'

दिनांक 18 नवंबर, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, बर्द्धमान द्वारा नेहरू उच्च माध्यमिक हिंदी विद्यालय में 'निबंध तथा भाषण प्रतियोगिता' हेतु पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया।

कोलकाता मेट्रो क्षेत्र द्वारा 'बॉब चित्रकला प्रतियोगिता'

दिनांक 06 अक्तूबर, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता मेट्रो द्वारा सेंट एंड्रीयूज़ पब्लिक स्कूल में विद्यार्थियों हेतु 'बॉब चित्रकला प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में 50 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

भरूच क्षेत्र द्वारा 'बॉब चित्रकला प्रतियोगिता'

दिनांक 21 नवंबर, 2022 को आदर्श हिंदी शाखा, अंकलेश्वर मुख्य द्वारा स्थानीय स्कूल कन्यासारा विद्यालय में छात्र-छात्राओं के लिए 'बॉब चित्रकला प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया तथा विजेता छात्र-छात्राओं को उपहार से सम्मानित किया गया।

वृहत्तर कोलकाता क्षेत्र द्वारा 'बॉब निबंध प्रतियोगिता'

दिनांक 21 अक्तूबर, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, वृहत्तर कोलकाता द्वारा केन्द्रीय विद्यालय फोर्ट विलियम में 'बॉब निबंध प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 60 छात्र - छात्राओं ने प्रतिभागिता की.

नवसारी क्षेत्र द्वारा 'बॉब चित्रकला प्रतियोगिता'

दिनांक 22 दिसंबर, 2022 को सयाजी रोड, नवसारी शाखा द्वारा मराठी प्राथमिक शाला में 'बॉब चित्रकला प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में 250 विद्यार्थियों द्वारा सहभागिता दर्ज की गई।

तेलंगाना दक्षिण क्षेत्र द्वारा 'बॉब निबंध लेखन प्रतियोगिता'

दिनांक 21 नवंबर, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, तेलंगाना दक्षिण एवं जुब्ली हिल्स शाखा द्वारा संयुक्त रूप से जुब्ली हिल्स सरकारी हाई स्कूल में 'बॉब निबंध लेखन प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया एवं विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कार व प्रमाण पत्र प्रदान किया गया.

कोटा क्षेत्र द्वारा 'सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता व चित्रकला प्रतियोगिता'

दिनांक 28 नवंबर, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, कोटा की कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय, कडिया नोहार, छबड़ा शाखा द्वारा 'सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता व चित्रकला प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया।

अंचल कार्यालय, नई दिल्ली द्वारा 'बॉब भाषण : बॉब चित्रकला' प्रतियोगिता

दिनांक 15 अक्तूबर, 2022 को अंचल कार्यालय, नई दिल्ली द्वारा मथुरा रोड फरीदाबाद, शाखा के सहयोग से राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में विद्यार्थियों के लिए 'बॉब भाषण एवं बॉब चित्रकला प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया।

पूर्वी दिल्ली क्षेत्र द्वारा 'निबंध एवं काव्य प्रतियोगिता'

दिनांक 17 नवंबर, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, पूर्वी दिल्ली द्वारा करावलनगर स्थित सी.सी विद्यामंदिर कन्या इंटर कॉलेज में 'निबंध एवं काव्य पाठ प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया जिसमें 80 छात्राओं ने भाग लिया।

नोएडा क्षेत्र द्वारा 'बॉब स्लोगन लेखन प्रतियोगिता'

दिनांक 30 नवंबर, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, नोएडा की मॉडल हिंदी शाखा गोल्फ कोर्स द्वारा स्थानीय राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नोएडा में 'बॉब स्लोगन लेखन प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया।

गुंटूर क्षेत्र द्वारा 'चित्रकला प्रतियोगिता'

दिनांक 14 नवंबर, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, गुंटूर द्वारा डॉ. कोंडाबोलु लक्ष्मी प्रसाद पब्लिक स्कूल गुंटूर में 'चित्रकला प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में 800 छात्रों ने भाग लिया।

गुड़गांव क्षेत्र द्वारा 'बॉब चित्रकला प्रतियोगिता'

दिनांक 16 नवंबर, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, गुड़गांव द्वारा सुशांत लोक शाखा, गुड़गांव के सहयोग से संस्कृति प्राथमिक विद्यालय, गुडगांव के विद्यार्थियों के लिए 'बॉब चित्रकला प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया।

पश्चिमी दिल्ली क्षेत्र द्वारा 'अपशिष्ट वस्तुओं से नवीन वस्तुओं का निर्माण' प्रतियोगिता

दिनांक 14 नवंबर, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, पश्चिमी दिल्ली द्वारा नवादा शाखा के सहयोग से वेस्ट मॉडल पब्लिक स्कूल में 'अपशिष्ट वस्तुओं से नवीन वस्तुओं का निर्माण' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

आगरा क्षेत्र द्वारा 'हिंदी प्रतियोगिता'

दिनांक 19 नवंबर, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, आगरा द्वारा न्यू कॉलोनी शाखा, इटावा के सहयोग से माउंट लिटेरा जी स्कूल, इटावा के विद्यार्थियों के लिए हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

मुंबई मेट्रो पूर्व क्षेत्र द्वारा 'बॉब चित्रकला प्रतियोगिता'

दिनांक 13 दिसंबर, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई मेट्रो पूर्व की शांतिनगर, उल्हासनगर शाखा द्वारा शांतिग्राम विद्यामंदिर विद्यालय में 'बॉब चित्रकला प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया. इस प्रतियोगिता में कक्षा 5 से 10 तक के कुल 312 छात्रों ने प्रतिभागिता की.

प्रतियोगिताएं

अंचल कार्यालय, मुंबई द्वारा 'वाद-विवाद प्रतियोगिता'

दिनांक 11 नवंबर, 2022 को आईआईटी, पवई के तत्वावधान में अंचल कार्यालय, मुंबई द्वारा तीन दिवसीय प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसके उद्घाटन के अवसर पर क्षेत्रीय प्रमुख एवं सहायक महाप्रबंधक श्री टी पी तुलस्यान उपस्थित थे।

अंचल कार्यालय, मंगलूरु द्वारा 'भ्रष्टाचार मुक्त भारत – विकसित भारत' विषय पर बॉब भाषण प्रतियोगिता

दिनांक 02 नवंबर, 2022 को अंचल कार्यालय, मंगलूरु द्वारा सरकारी फस्ट ग्रेड महिला कॉलेज बलमटा, मंगलूरु में 'भ्रष्टाचार मुक्त भारत – विकसित भारत' विषय पर बॉब भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। संस्थापक शाखा के सहायक महाप्रबंधक श्री मंजुनाथ ने हमारे बैंक के उत्पाद और बैंकिंग सुविधाओं के बारे में छात्राओं को जानकारी दी।

मंगलूरु शहर क्षेत्र द्वारा 'बॉब चित्र रचना प्रतियोगिता'

दिनांक 13 दिसंबर, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूरु शहर द्वारा होसबेट्टु शाखा के सहयोग से भारती शिक्षण संस्था, विद्यानगर कुलाई में 'बॉब चित्र रचना प्रतियोगिता' आयोजित की गयी। इस कार्यक्रम में 200 से अधिक विद्यार्थियों ने भाग लिया।

उडुपी क्षेत्र द्वारा 'निबंध प्रतियोगिता'

दिनांक 22 नवंबर, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, उडुपी द्वारा आत्राडी शाखा के सहयोग से पर्कला हाई स्कूल के विद्यार्थियों के लिए 'निबंध प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 200 विद्यार्थी एवं अध्यापकगण भी उपस्थित रहे।

मुंबई मेट्रो उत्तर क्षेत्र द्वारा 'बॉब चित्रकला प्रतियोगिता'

दिनांक 13 दिसंबर, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई मेट्रो उत्तर द्वारा विरार पूर्व शाखा के सहयोग से जिला परिषद शाला, मनवेलपाड़ा, विरार पूर्व में कक्षा 5 के विद्यार्थियों हेतु 'बॉब चित्रकला प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया.

बेंगलूरु-मध्य क्षेत्र द्वारा 'बॉब हिंदी/कन्नडा निबंध लेखन प्रतियोगिता'

दिनांक 10 नवंबर, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु-मध्य की पीबीबी इंदिरानगर शाखा द्वारा इंदिरानगर स्थित के.एन.गोल्डन जुबली डिग्री कॉलेज में 'बॉब हिंदी/कन्नडा निबंध लेखन प्रतियोगिता', 'हिंदी में स्लोगन लेखन प्रतियोगिता' और 'हिंदी चित्रकला एवं हिंदी/कन्नडा वक्तृत्व प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया.

अपने ज्ञान को परखिए

1. किस भारतीय संस्थान ने कृत्रिम हृदय (Artificial Heart) तैयार करने में सफलता हासिल की है?
   (क) IIT रुड़की (ख) IIT कानपुर
   (ग) IIT मुंबई (घ) IIT खड़गपुर
2. प्रतिवर्ष पूरे भारत में राष्ट्रीय गणित दिवस (National Mathematics Day) किस तारीख को मनाया जाता है?
   (क) 17 दिसम्बर को (ख) 19 दिसम्बर को
   (ग) 20 दिसम्बर को (घ) 22 दिसम्बर को
3. हाल ही में, किसे हिंदी भाषा के लिए वर्ष 2022 का साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला है?
   (क) महेश ठाकुर (ख) जगदीप मेत्रे
   (ग) बद्री नारायण (घ) असफाक खान
4. कंप्यूटर के संबंध में, 'जीयूआई' में 'जी' अक्षर का क्या अर्थ है?
   (क) गीगाबाइट (ख) ग्राफिकल
   (ग) गेटवे (घ) ग्रीनफील्ड
5. किस कार निर्माता कम्पनी ने भारत की पहली फ्यूल-फ्लेक्स इंजन कार लांच की है?
   (क) टोयोटा (ख) टाटा
   (ग) वोक्सवैगन (घ) जैगुआर
6. किस देश की टेनिस टीम ने Davis Cup 2022 का ख़िताब जीता है?
   (क) ऑस्ट्रेलिया (ख) कनाडा
   (ग) क्रोएशिया (घ) स्पेन
7. इनमें से कौन से देश की राजभाषा हिंदी है?
   (क) नेपाल (ख) भूटान
   (ग) फिजी (घ) मॉरीशस
8. हाल ही में, किसे BCCI के नए अध्यक्ष के रूप में चुना गया है?
   (क) कपिल देव (ख) सचिन तेंदुलकर
   (ग) रोजर बिन्नी (घ) जहीर खान
9. हाल ही में, किस फुटबॉल टीम ने फीफा विश्व कप 2022 का ख़िताब जीता है?
   (क) अर्जेंटीना (ख) ब्राजील
   (ग) उरुग्वे (घ) इटली
10. कैलेंडर के किस महीने का नाम युद्ध के रोमन देवता के नाम पर रखा गया है?
    (क) जनवरी (ख) मार्च
    (ग) मई (घ) नवंबर
11. इनमें से कौन सा स्मारक लाल और गुलाबी बलुआ पत्थर से निर्मित है?
    (क) चारमिनार (ख) विक्टोरिया मेमोरियल
    (ग) ब्रह्मकेदारेश्वर मंदिर (घ) हवा महल
12. हाल ही में, कौन भारतीय ओलंपिक संघ (IOA) की पहली अध्यक्ष बनी हैं?
    (क) दीपा कर्माकर (ख) मेरी कोम
    (ग) पीटी ऊषा (घ) कर्णम मल्लेश्वरी
13. भारत में किसकी 'जयंती' आयुर्वेद दिवस के रूप में मनाई जाती है?
    (क) वेद व्यास (ख) भास्कर
    (ग) धनवंतरी (घ) चरक
14. देश का पहला राष्ट्रीय हिन्दी संग्रहालय कहाँ स्थापित है?
    (क) आगरा (ख) चंडीगढ़
    (ग) लखनऊ (घ) इंदौर
15. pH स्केल पर 7 से कम का मान किस प्रकार के पदार्थ को दर्शाता है?
    (क) अम्लीय (ख) तटस्थ
    (ग) क्षारीय (घ) बुनियादी
16. निम्नलिखित में से किस राज्य में संस्कृत भाषा को राज्य की द्वितीय राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया है ?
    (क) बिहार (ख) छतीसगढ़
    (ग) उत्तर प्रदेश (घ) उत्तराखंड
17. हाल ही में हुई घोषणा के अनुसार किस राज्य में भारत का पहला एकीकृत एक्वा पार्क बनेगा?
    (क) हिमाचल प्रदेश (ख) उत्तराखंड
    (ग) अरुणाचल प्रदेश (घ) हरियाणा
18. चालू वित्त वर्ष में PMEGP योजना के तहत किस राज्य/केंद्र शासित प्रदेश ने सबसे अधिक नौकरियां सृजित की हैं?
    (क) जम्मू और कश्मीर (ख) ओड़ीशा
    (ग) छतीसगढ़ (घ) उत्तराखंड
19. 'रयुतु बंधु' (Rythu Bandhu) किस भारतीय राज्य/केंद्र शासित प्रदेश की प्रमुख योजना है?
    (क) महाराष्ट्र (ख) तमिल नाडु
    (ग) तेलंगाना (घ) आंध्र प्रदेश
20. '12वें विश्व हिंदी सम्मेलन' का मेजबान कौन सा देश है?
    (क) न्यूजीलैंड (ख) फिजी
    (ग) सिंगापुर (घ) मॉरीशस

(उत्तर के लिए पेज नं. 26 देखें)

अंचल कार्यालय, जयपुर

दिनांक 04 अक्तूबर, 2022 को अंचल कार्यालय, जयपुर के सभी क्षेत्रों के परिचालन व सेवाएँ विभाग के अधिकारियों हेतु 'अक्तूबर से दिसंबर – हिंदी के धुरंधर' अभियान संबंधी मार्गदर्शी वेबिनार का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अंचल के सभी क्षेत्रों के परिचालन व सेवाएं विभाग के अधिकारियों सहित राजभाषा अधिकारीगण शामिल रहे।

क्षेत्रीय कार्यालय, जमशेदपुर

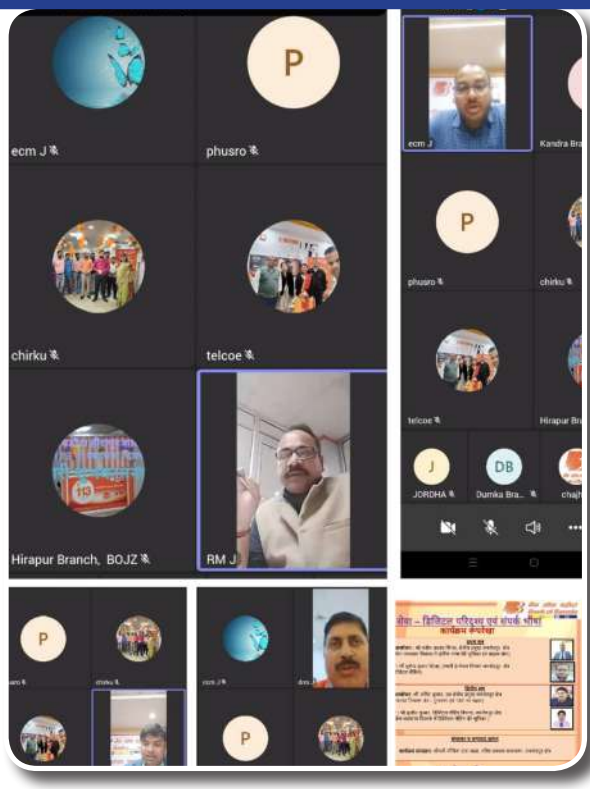

दिनांक 26 दिसंबर, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, जमशेदपुर द्वारा शाखाओं में पदस्थ डीजी चैंप्स के लिए 'ग्राहक सेवा–डिजिटल परिदृश्य एवं संपर्क भाषा' विषय पर ई–संगोष्ठी का आयोजन किया गया। उक्त संगोष्ठी में क्षेत्रीय प्रमुख श्री मनीष प्रकाश सिन्हा ने ग्राहक सेवा में भाषा रूपी सेतु के सटीक प्रयोग के माध्यम से अधिक से अधिक ग्राहकों को बैंक से जोड़ने पर विचार रखे। साथ ही बैंक के डिजिटल प्लैटफॉर्म पर भारतीय भाषाओं की उपलब्धता पर विस्तार से चर्चा की गई।

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु (दक्षिण)

दिनांक 08 नवंबर, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु (दक्षिण) द्वारा क्षेत्र के संयुक्त प्रबंधकों के लिये हिंदी वेबिनार का आयोजन किया गया. इस दौरान क्षेत्रीय प्रमुख श्री उमाकांत पाढ़ी ने 'बॉब अभिव्यक्ति' ऐप डाउनलोड करने के लिये निर्देश प्रदान किए।

क्षेत्रीय कार्यालय, सिलीगुड़ी

दिनांक 17 नवंबर, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, सिलीगुड़ी में ''हिंदी की वर्तमान स्थिति, दशा एवं दिशा'' विषयक राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में श्री निर्मल कुमार दुबे (सहायक निदेशक, कार्यान्वयन, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय) उपस्थित रहे। कार्यक्रम में उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री दीपज्योति बोरठाकुर एवं क्षेत्रीय कार्यालय, सिलीगुड़ी स्थित शाखाओं के स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

क्षेत्रीय कार्यालय, सागर

दिनांक 11 अक्तूबर, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, सागर द्वारा भारतीय भाषाओं में शिक्षण अधिगम एवं पाठ्य सामग्री का निर्माण विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय, सागर के उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री संतोष कुमार उपस्थित रहे।

सामर्थ्य प्रशिक्षण कार्यक्रम

अंचल कार्यालय, अहमदाबाद

अंचल कार्यालय, लखनऊ एवं क्षेत्रीय कार्यालय अयोध्या

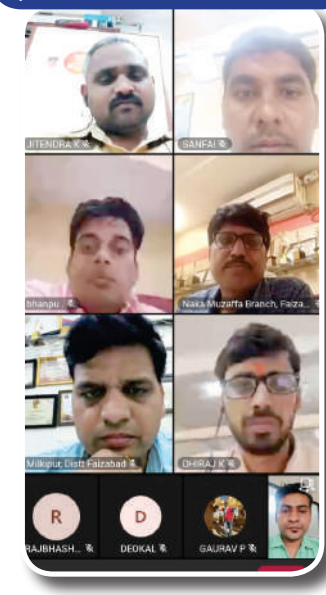

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता मेट्रो 2

क्षेत्रीय कार्यालय, वाराणसी

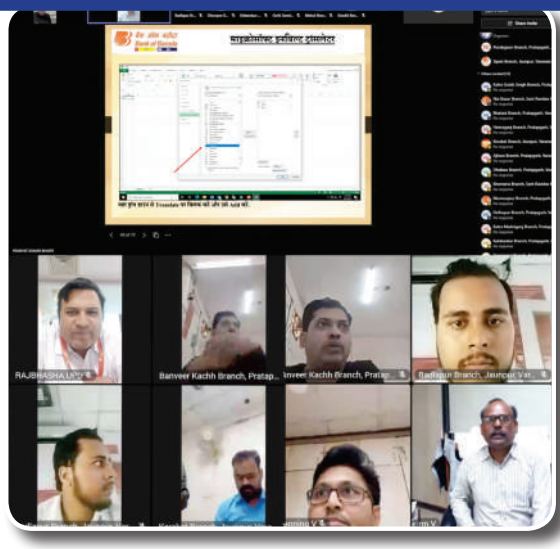

क्षेत्रीय कार्यालय, फतेहपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, पश्चिमी दिल्ली

अहमदाबाद क्षेत्र – 1

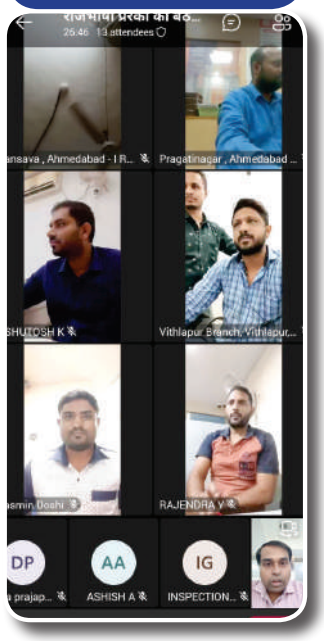

क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर

बैंकिंग शब्द मंजूषा

Alternate payee वैकल्पिक आदाता

परक्राम्य लिखत अधिनियम, 1881 की धारा 13(2) के अनुसार किसी परक्राम्य लिखत को दो या अधिक आदाताओं को संयुक्त रूप से या विकल्प स्वरूप कई आदाताओं में से एक या दो या कुछ आदाताओं को देय बनाया जा सकता है।

Blind Pool अनिश्चित करार/अनिश्चित भागीदारी निधि

कभी-कभी दो वित्तीय संस्थाएं किसी विशेष प्रयोजन के लिए एक साथ आकर फर्म-विशेष को वित्तीय सहायता प्रदान करने का करार करती हैं। लेकिन इस करार में निवेश की जाने वाली आस्तियों या राशि का कोई निश्चित निर्धारण नहीं किया गया होता। अकसर ऐसे गठबंधन सीमित अवधि के और खास मकसद के लिए होते हैं।

Covered call रक्षित क्रय-विक्रय

रक्षित क्रय-विक्रय (कभी-कभी कवर राइट के नाम से भी जाना जाता है) ऑप्शन की ऐसी रणनीति है जिसमें विक्रेता प्रतिभूति को अपने पास रखता है। दूसरी तरफ निवेशक किसी प्रतिभूति को खरीद कर एवं उसी प्रतिभूति के लिए कॉल ऑप्शन पर बेचकर रक्षित क्रय-विक्रय रणनीति अपनाता है।

Financial engineering वित्तीय इंजीनियरिंग

नित बदलते आर्थिक परिवेश में नई-नई प्रौद्योगिकी के आगमन के साथ नित नए उत्पादों की खोज की जा रही है। ग्राहकों की बढ़ती अपेक्षाओं एवं हैसियत की वजह से अब बैंकों को अपनी सेवाएँ लेकर स्वयं ग्राहकों के पास जाना होता है। गलाकाट प्रतिस्पर्धा की इस दौड़ में बेहतर ग्राहक सेवा प्रदान करने के लिए बैंकों को अब नित नए तरीके एवं साधन ढूँढने पड़ रहे हैं। ऐसे में वित्तीय इंजीनियरिंग का महत्व निर्विवाद रूप से बढ़ता जा रहा है, जिसके द्वारा नए वित्तीय उत्पादों एवं सेवाओं की खोज की जाती है, उनमें सुधार लाने का प्रयास किया जाता है और ग्राहक-सेवा को उत्कृष्ट बनाने की कोशिश की जाती है।

Mixed economy मिश्रित अर्थव्यवस्था

ऐसी आर्थिक प्रणाली जिसमें, पूँजीवादी तथा समाजवादी दोनों अर्थव्यवस्थाओं के तत्व मौजूद होते हैं अर्थात् ऐसी प्रणाली, जिसमें कुछ उद्योग सरकारी स्वामित्व में और अन्य उद्योग निजी व्यापारियों के स्वामित्व में होते हैं। यह पूँजीवाद और समाजवाद का मिश्रण है।

No load fund भार-विहीन फंड

जब कोई म्यूच्युअल फंड अपनी यूनिटों की बिक्री सीधे ही निवेशकों को करता है और बीच में किसी एजेंट की कोई भूमिका नहीं होती, तब उसे उस यूनिट के लेनदेन में किसी भी तरह के कमीशन की अदायगी नहीं करनी पड़ती। इस तरह से जारीकर्ता कंपनी पर उस फंड-विशेष के निर्गम में कोई भार नहीं पड़ता। इसलिए इस प्रकार के फंड को भार-विहीन फंड के रूप में जाना जाता है।

Quick ratio त्वरित अनुपात

इसका उपयोग किसी फर्म की तरलता को सिद्ध करने के लिए किया जाता है किंतु यह हमेशा सटीक नहीं रहता। त्वरित अनुपात का परिकलन कच्चे माल को चालू आस्तियों से घटाकर और तत्पश्चात परिणाम को चालू देयताओं से भाग करके किया जाता है। इसे कई बार एसिड टेस्ट अनुपात भी कहा जाता है।

Roll over loan पुनर्निर्धारणीय ऋण

(i) किसी ऋण या ऋण-व्यवस्था का नियमित अवधियों में पुनर्निर्धारण किया जा सकता है, जो वस्तुतः उस ऋण को स्वतः बंद करता है और फिर से खोल देता है। इससे उधार के निधीकरण में बैंक को मदद मिलती है।

(ii) यदि कोई ब्याज दर रोल ओवर आधार पर लगाई जाती है तो तात्पर्य है कि इस दर की समीक्षा आवधिक आधार पर की जायेगी।

(iii) स्टॉक मार्केट में रोल ओवर एक निवेश से दूसरे निवेश को निधियों के अंतरण पर निगरानी रखता है।

Switch operation स्विच ऑपरेशन

खुले बाज़ार के कार्यकलापों (ओपन मार्केट ऑपरेशंस) का प्रयोग न केवल ऋण-नियंत्रण या मौद्रिक नीति में किया जाता है, बल्कि सरकारी प्रतिभूतियों के क्रय-विक्रय द्वारा राजकोषीय नीति के रूप में भी इनका प्रयोग किया जाता है। सामान्यतया रिज़र्व बैंक द्वारा अल्प अवधि की प्रतिभूतियों को क्रय करने तथा उसके स्थान पर दीर्घ अवधि की प्रतिभूतियों को विक्रय करने की क्रिया, जिससे परिपक्वता अवधि लंबी हो सके, को ही हम 'स्विच ऑपरेशन' के नाम से जानते हैं।

Unsecured creditor गैर-जमानती लेनदार

उस लेनदार को गैर-जमानती लेनदार कहते हैं, जिसने बिना किसी जमानत के ऋण दिया हो। दिवालिया होने की स्थिति में ऋण लेने वाले की परिसंपत्ति से अन्य लोगों को भुगतान के बाद ही उसे भुगतान किया जाता है।

चित्र बोलता है.

1

ठहराव न हो, कहीं छांव न हो, तो चलना ही पड़ता है।
ज़िंदगी की मजबूरियों से, रोज़ लड़ना ही पड़ता है।
किस्मत बदलती नहीं सिर्फ़ हाथों की लकीरों से।
कभी नंगे पाव ज़मीं पे क़दम रखना ही पड़ता है।

अमरेंद्र कुमार
मुख्य प्रबंधक
डिजिटल ग्रुप, प्रधान कार्यालय, बड़ौदा

2

कठिन है रास्ता मुश्किल है डगर,
चिलचिलाती है धूप ज़मीं है बंजर,
फिर भी मैं चली ठुमक-ठुमक कर,
ढूंढने पानी भरने अपनी गागर।

अंशिता वर्मा, अधिकारी
भुज मुख्य शाखा, भुज क्षेत्र
राजकोट अंचल

3

तपती धूप धरती है बंजर,
भयंकर है ये मंज़र,
कृपा करो प्रभु हमपर,
बरसा दो मेघ जमकर।

अभिषेक वर्मा, प्रबंधक
(सूचना प्रौद्योगिकी) जबलपुर क्षेत्र,
भोपाल अंचल

जल का करके संरक्षण,
जीवन को खुशहाल करो।
जल बिन जीवन नहीं है संभव,
व्यथा कह रहा चित्र यही ।

शाकिर अली
शहडोल (मध्य प्रदेश) शाखा

प्रथम तीन विजेताओं को पुरस्कार स्वरूप रू. 500 का गिफ्ट कार्ड/राशि दी जा रही है

'चित्र बोलता है' के स्थायी स्तंभ के अंतर्गत जुलाई-सितंबर, 2022 अंक में प्रकाशित चित्र पर पाठकों से काफी उत्साहवर्धक प्रतिक्रियाएं/रचनाएं प्राप्त हुई हैं. पाठकों से अनुरोध है कि इस शृंखला में प्रकाशित इस चित्र पर आधारित अपने विचार पद्य के रूप में हमें अधिकतम चार पंक्तियों में लिख कर भेजें. श्रेष्ठ तीन रचनाओं को पुरस्कृत (प्रत्येक को रू. 500/-) किया जाएगा और उन्हें हम 'अक्षय्यम्' के आगामी अंक में भी प्रकाशित करेंगे. पाठक अपने विचार हमें डाक से या ई-मेल पर अपने व्यक्तिगत विवरण और स्वरचित घोषणा सहित 15 मार्च, 2023 तक भेज सकते हैं.

दिनांक 03 नवंबर, 2022 को भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा अमृतसर में उत्तर–1 तथा उत्तर–2 क्षेत्रों का संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन व पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया. इस दौरान वित्तीय वर्ष 2020–2021 एवं 2021–22 के दौरान बैंक के पुरस्कृत कार्यालयों को सम्मानित किया गया.

अंचल कार्यालय, चंडीगढ़
प्रथम पुरस्कार

क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़
द्वितीय पुरस्कार

नराकास (बैंक), वाराणसी
प्रथम पुरस्कार

उदयपुर क्षेत्र
द्वितीय पुरस्कार

नया वर्ष फिर आया

बृहत काल के छत की
एक कड़ी
गिर पड़ी–
एक वर्ष हो गया।
शेष है अब कितना जीवन
मैंने इसको फिर–फिर अपने से पूछ
बार–बार दोहराया।
नया वर्ष फिर आया।

अभी उगेगा सूरज,
कोहरा उठकर वृक्षों की शाखों पर
टँग जाएगा,
अभी–अभी नापेंगी चिड़ियाँ,
सभी घरों को
अपने नन्हें मुक्त परों से,
पर मैंने अपने को
अन्धी घुटन भरी दीवारों में ही बन्दी पाया ।
नया वर्ष फिर आया ।

अभी खिलेंगे फूल,
हँसेगी ओस,
शीतल वायु
गन्ध भार से लदी
जितना ही मैंने सोचा
शीश झुका
बुझी अँगीठी के सम्मुख
आँखों में जल भर आया ।
नया वर्ष फिर आया ।

नये–नये रंगों के झरने
अभी मुझे आएँगे वरने
मेरा सूना द्वार
खटखटाएगा कोई ज्वार,
मुझे बाँधने आता होगा
कहीं किसी नव आकर्षण का सागर,
काली पड़ी केटली में
मैंने फिर जल खौलाया,
आह ! भ्रमित मन को कितना भरमाया !
नया वर्ष फिर आया ।

– सर्वेश्वरदयाल सक्सेना